मानव मानस का डी-सम्मोहन

हार्मोनिक संबंध बनाना

मार्टिन यूसर, जुलाई 2022

निम्नलिखित मेरी पुस्तक डी हेरोन्टडेकिंग वैन ट्रांसेंडेंटी के डच से आंशिक मशीनी अनुवाद है। यदि अनुवाद में कोई अस्पष्टता है, तो मूल अंग्रेजी संस्करण का संदर्भ दिया जाता है, जो यहां पाया जा सकता है (
https://ia601408.us.archive.org/2/items/rediscovering-transcendence/Rediscovering%20Transcendence.pdf) पाया जा सकता है।
आप टेक्स्ट में दिखाई देने वाले हाइपरलिंक्स को अपने ब्राउज़र में कॉपी और पेस्ट कर सकते हैं, क्योंकि वे पूरी तरह से सॉफ़्टवेयर द्वारा प्रदान नहीं किए जाते हैं।
ग्रंथ सूची में उल्लिखित पुस्तकों के शीर्षक संभवत: स्वचालित सॉफ़्टवेयर द्वारा आपकी भाषा में परिवर्तित कर दिए गए हैं। अंग्रेजी संस्करण में आपको शीर्षकों का सही पदनाम मिलेगा।

लेखक

नोट: यह मेरी पिछली ई-बुक: रेजोनेंस विद द सेल्फ का विस्तारित संस्करण है। समग्र विज्ञान के लिए सात बुनियादी सिद्धांतों पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है, साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के सात संस्कारों के गूढ़ अर्थ पर एक नया परिशिष्ट भी जोड़ा गया है।
अध्याय चार का विस्तार कुछ नए तत्वों के साथ किया गया है।

इस पुस्तक के लक्ष्य:

सभ्यता के संकट को समझना: दृष्टि की कमी, भौतिकवादी मूल्य, समाज का पतन

जीवन के लक्ष्यों को बहाल करना: विश्व में मनुष्य की स्थिति;
खंडित दुनिया में अर्थ ढूँढना

जीवन की एक अच्छी तरह से स्थापित समझ का विकास
समाज में अपनी भूमिका की एक अच्छी तस्वीर प्राप्त करें
जीवन दर्शन का विकास

एक स्वस्थ दुनिया में संक्रमण पर एक साथ काम करना:
ईगोसेंट्रिक से इकोसेंट्रिक तक
अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

आज के खंडित समाज में, ऐसा लगता है कि बहुत से लोग सभी अर्थ और उद्देश्य खो चुके हैं। हमारे भौतिकवादी विज्ञान ने हमें सिखाया है कि हम बड़े दिमाग वाले किसी तरह के उन्नत बंदर हैं। "सर्वाइवल ऑफ़ द फिटेस्ट" और भयंकर प्रतिस्पर्धा को हठधर्मिता में अंकित किया गया था। विज्ञान के साथ अपने अंतर्विरोध या असंगति के कारण धर्म ने कई लोगों के लिए अपनी अपील खो दी है। "भगवान मर चुका है," फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा।

मामलों को बदतर बनाने के लिए, दुनिया को जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण क्षरण, महामारी, युद्ध, संसाधनों की कमी, वित्तीय अस्थिरता, सत्तावादी शासन, मनोरोगी नेतृत्व, आदि जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है।

लेकिन यह पूरी कहानी नहीं है। हर समय आध्यात्मिक शिक्षक रहे हैं और अभी भी हैं जिन्होंने यह समझाकर मदद करने की कोशिश की है कि इस दुनिया में आंख से मिलने के अलावा और भी कुछ है। आपने हमें ऐसी अंतर्दृष्टि दी है जो इस दुनिया को आज की तुलना में बहुत बेहतर जगह बना सकती है।

वास्तव में, इस पुस्तक का उद्देश्य इन शिक्षाओं के कुछ सार को संक्षेप में प्रस्तुत करना है और आपको जीवन, मृत्यु, सहयोग और संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए तकनीकों और प्रथाओं की एक श्रृंखला प्रदान करना है।
ध्यान आपके "आंतरिक खेल" पर है और आपके सिस्टम में परस्पर विरोधी आवेगों से कैसे निपटें। अभ्यास के साथ अपने अवलोकन और अनुभव लिखने के लिए कुछ पृष्ठों पर स्थान आरक्षित है।

उन नए संगठनों पर भी ध्यान दिया जाता है जो वर्तमान में मानवता द्वारा अपनाए जा रहे पाठ्यक्रम को बदलने के लिए व्यक्तिगत प्रयासों को संयोजित करना चाहते हैं। आखिरकार, अंतर्दृष्टि को दैनिक जीवन में लागू किया जाना है और आज जीवन अपने उपभोग और अपने पारिस्थितिक पदचिह्न के माध्यम से पूरी दुनिया को प्रभावित करता है।

हो सकता है कि यह जानकारी आपको, पाठक और उन लोगों की सेवा करे जिनके साथ आप जुड़ते हैं। यदि आप मुझसे संपर्क करना चाहते हैं तो कृपया मुझे ResonanceSelf@protonmail.com पर ईमेल करें

उन सभी का धन्यवाद जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया।

मार्टिन यूसर

My academia.edu पेज: https://uu.academia.edu/MartinEuser

मेरी लाइब्रेरी Archive.org पर: https://archive.org/search.php?query=Martin+Euser&sin=

प्रश्न और सुझाव, केवल अंग्रेजी में, ResonanceSelf@pm.com पर भेजे जा सकते हैं। पर्याप्त रुचि होने पर मेरे द्वारा एक फेसबुक समूह या वैकल्पिक मंच स्थापित किया जा सकता है।

परिचय

इस पुस्तक के विषय एक विस्तृत क्षेत्र को कवर करते हैं। वे धारणा, विश्वास प्रणाली और विश्वदृष्टि (धर्म, विज्ञान और दर्शन) से लेकर पूरे प्रकृति में देखे गए अंतर्निहित सिद्धांतों तक हैं। इस सामग्री में से कुछ मेरी पुस्तक रेजोनेंस विद द सेल्फ एंड माय आर्टिकल ऑन विटवन (द प्रैक्टिकल नोस्टिक टीचिंग्स ऑफ राल्फ मोरियार्टी डेबिट) में पाई जा सकती है, जो https://archive.org/search.php?query=Martin +Euser पर मुफ्त में उपलब्ध है।

यहां मैंने उस सामग्री में से कुछ को संक्षेप में प्रस्तुत किया है और कुछ नई अंतर्दृष्टि और मेरे नए लेख जोड़े हैं।

कुछ लोग पूछ सकते हैं: मैंने "रिडिस्कवरी ऑफ ट्रांसेंडेंस", "डिहिप्नोटाइजिंग द ह्यूमन साइक एंड हार्मोनाइजिंग रिलेशनशिप" शीर्षक क्यों चुना?
इसका कारण यह है कि मेरा मानना है कि लोगों के बीच अपनी दैनिक जीवन प्रथाओं का निर्माण करने के लिए एक नींव खोजने की आवश्यकता और रुचि बढ़ रही है। साथी मनुष्यों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने की आवश्यकता है। सवाल यह है: आप ऐसा कैसे करते हैं?
मेरा उत्तर यह है कि आपको कुछ आत्मनिरीक्षण का अभ्यास करने और अपने होने के कारण की खोज करने की आवश्यकता है। अपने भीतर गहरे काम करते हुए उच्च स्व को देख सकते हैं।

अपनी पुस्तक "रेजोनेंस विद द सेल्फ" में मैंने इस शीर्षक के लिए एक कारण के रूप में लिखा है: यहाँ बात यह है: यदि आपके जीवन में अपने उद्देश्य और लक्ष्यों के बारे में कुछ स्पष्टता नहीं है जो आपके चरित्र और क्षमता के अनुकूल हैं, तो आप जीवन के अर्थ के लिए अंतहीन और शायद निराशा से संघर्ष करेंगे।
प्रकृति कैसे काम करती है, इसके पहले सिद्धांतों का अध्ययन करने से मन और हृदय दोनों संतुष्ट होंगे। मनुष्यों सहित प्रकृति के साथ काम करना सीखना, स्वयं को (और उच्चतर स्व को भी!) आनंद देता है। "स्व" आप के उस हिस्से को संदर्भित करता है जो आध्यात्मिक हिस्सा है। वास्तव में, उच्च स्व आपके माता-पिता हैं जिनसे आप आते हैं। हायर सेल्फ में ट्यून करना सीखने का मतलब है कि आप कौन हैं, इसकी खोज करना और अधिक सामंजस्यपूर्ण दुनिया के लिए दूसरों के साथ काम करना सीखना। इससे ज्यादा महत्वपूर्ण क्या हो सकता है? यह आगे विकसित होने, अपनी क्षमता को प्रकट करने का स्वाभाविक तरीका भी है।"

जहां तक वाक्यांश "मानव मानस को सम्मोहित करना" का प्रश्न है, तो बसकोविड-19 महामारी के पिछले दो वर्षों के दौरान मुख्यधारा के मीडिया और राजनेताओं द्वारा डराने-धमकाने की ओर इशारा करते हुए। प्रोफेसर मैथियास डेस्मेट ने इस अवधि के दौरान जन शिक्षा और हिस्टीरिया या

सामूहिक सम्मोहन पर एक प्रासंगिक पुस्तक लिखी (साक्षात्कार के लिए यूट्यूब देखें)।
पुस्तक का शीर्षक: अधिनायकवाद का मनोविज्ञान।
(https://www.bol.com/nl/nl/p/the-psychology-of-totalitarianism/9300000101664004/?bltgh=ovaSM3Swu-0TpZ7-qq9HQw.4_12.14.ProductTitle)

इसके अलावा, अध्याय 2 में, पाठक को पता चलेगा कि संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली लोगों को सामंजस्यपूर्ण ढंग से जीने के लिए आवश्यक कौशल और अंतर्दृष्टि प्रदान नहीं करती है। एक तरफ मैं बुनियादी मनोवैज्ञानिक ज्ञान, सामाजिक संपर्क, विभिन्न धर्मों के बारे में ज्ञान, व्यावहारिक बागवानी और शारीरिक प्रशिक्षण के बारे में सोच रहा हूं।

इस पुस्तक में वर्णित तकनीकों और प्रथाओं से उन लोगों को मदद मिलेगी जो इतिहास में इस समय की स्थिति और वर्तमान वैश्विक स्थिति की स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करना चाहते हैं। यह जल्दी-जल्दी अमीर बनने की योजना नहीं है, जिनमें से पहले से ही बहुत अधिक हैं। यह छोटा आत्म-या अहंकार-व्यक्तित्व नहीं है-जो कि हर चीज का केंद्र है, लेकिन जिस बड़े संसार में वह अंतर्निहित है, वह मायने रखता है। सहानुभूति वह गुण है जिसकी हमारी दुनिया में बहुत आवश्यकता है।

एक अभ्यास जो बहुत मददगार हो सकता है, वह है कई दृष्टिकोणों को लेना सीखना: स्थितियों को कई कोणों या दृष्टिकोणों से देखना सीखें। यह संदर्भ संवेदनशीलता को बढ़ाता है और अन्य लोगों के विचारों और व्यवहार की बेहतर समझ की अनुमति देता है। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सहानुभूति रख सकते हैं, जो आपके प्रति विपरीत दृष्टिकोण रखता है, तो आप बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस तरह के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले तर्कों पर विचार करके कोई भी ऐसे विरोधी दृष्टिकोण का बचाव करने का अभ्यास कर सकता है।

कई झूठे विश्वासों को उजागर करने और झूठी कंडीशनिंग को उलटने की जरूरत है। समग्र रूप से मानवता को इस मुकाम तक पहुंचने में काफी समय लगेगा। आपके पास, एक व्यक्ति के रूप में, अभी शुरुआत करने और अपने भीतर गहराई से देखने का अवसर है।
ऐसा करने से, आप अपने परिवेश को भी प्रभावित करते हैं, क्योंकि इस दुनिया में और सामान्य रूप से ब्रह्मांड में सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है।
व्यक्तित्व परिवर्तन कभी-कभी कठिन काम होता है। लेकिन संतुष्टि और खुशी अपार हो सकती है। मैं आपके सुखद और फलदायी यात्रा की कामना करता हूँ!

लेखक

अध्याय एक: धारणा और विश्वास

क्या आपने कभी सोचा है कि क्या जीवन का कोई अर्थ है?

अपने खुद के जीवन के बारे में क्या? क्या आपको भी लगता है कि आपकी विश्वास प्रणाली लक्ष्य के आपके विचार को प्रभावित करती है? यदि हां, तो कैसे?

एक क्षण के लिए इन प्रश्नों के बारे में सोचें और अपने उत्तर नीचे इस पृष्ठ के प्रिंटआउट पर या किसी नोटबुक में लिखें।

जीवन में मेरा लक्ष्य (या बड़ा उद्देश्य) है:

मेरे विश्वास जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को इस प्रकार प्रभावित करते हैं:

मैं इन प्रश्नों को पूछने का कारण आपको जीवन की अपनी धारणा, आपकी विश्वास प्रणाली की खोज की यात्रा पर ले जाना है। आपके माता-पिता, स्कूल, चर्च, दोस्तों और अन्य लोगों ने आपको उस दुनिया के बारे में क्या बताया या सिखाया है जिसमें हम रहते हैं?
आपको उनसे क्या छिपा हुआ या छिपा हुआ संदेश मिला?
उन्होंने आपको धर्म, आध्यात्मिकता, मृत्यु, प्रेम, काम के बारे में क्या सिखाया?

अपने उत्तर नीचे लिखें।

मेरे माता-पिता, स्कूल, चर्च, दोस्तों, मीडिया ने मुझे धर्म/आध्यात्मिकता के बारे में बताया है:

यहाँ उन्होंने मुझे जीवन और मृत्यु के बारे में बताया:

प्यार के बारे में:

पढ़ाई और काम के बारे में:

अब हम इसके कई पहलुओं के साथ चेतना और धारणा की दुनिया में उतरेंगे और प्राचीन ज्ञान परंपराओं के आधार पर चीजों के बारे में एक दृष्टिकोण विकसित करना शुरू करेंगे [1]। सच्चा ज्ञान कभी बूढ़ा नहीं होता। इसमें नई अंतर्दृष्टि भी शामिल है क्योंकि परिस्थितियाँ बदलती हैं। सार्वभौमिक सिद्धांत कभी नहीं बदलते हैं, लेकिन अंतर्दृष्टि का अनुप्रयोग विशिष्ट परिस्थितियों के अनुकूल होता है क्योंकि वे आवश्यक अंतर्ज्ञान पैदा करते हैं।
अंतर्ज्ञान एक स्थिति को उसके सभी पहलुओं के साथ समग्र रूप से समझने की क्षमता है। बुद्धि तब कार्य योजनाएँ तैयार कर सकती है जिन्हें आवश्यकतानुसार गतिशील रूप से समायोजित किया जा सकता है।

[1]. ज्ञान परंपरा को "फिलोसोफिया पेरेनिस" के रूप में भी जाना जाता है और इसमें दर्शन के विभिन्न विद्यालयों (अद्वैत वेदांत, बौद्ध धर्म, नियोप्लाटोनिज्म, सूफीवाद, कबला, ईसाई रहस्यवाद, थियोसोफी) के सर्वश्रेष्ठ गूढ़ और रहस्यमय लेखन शामिल हैं।

अब हम जो पहली चीज करने जा रहे हैं वह है विश्वास प्रणालियों की जांच करना।

विश्वास: मानवता की विरासत

दार्शनिक रूप से, विश्वास प्रणालियों को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

भौतिकवादी बनाम आध्यात्मिक विश्वास प्रणाली (या जीवन की अवधारणाएं)।

भौतिकवादी दृष्टिकोण में यह विश्वास शामिल है कि पदार्थ ही सब कुछ है। चेतना को पदार्थ के उप-उत्पाद के रूप में देखा जाता है, मस्तिष्क में तंत्रिका नेटवर्क द्वारा उत्पादित रहस्यमय चीज। इस दृष्टिकोण के साथ कई समस्याएं हैं जिनका मैं केवल संक्षेप में उल्लेख कर सकता हूं। वैज्ञानिक इस मामले को बिल्कुल भी ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। प्रसिद्ध क्वांटम यांत्रिकी वैज्ञानिक रिचर्ड

फेनमैन ने कहा कि जो कोई भी प्राथमिक कणों के व्यवहार या क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांत को समझने का दावा करता है, वह गुमराह है।
यदि आप "पदार्थ" को उसके प्राथमिक भागों में तोड़ते हैं, तो "पदार्थ" गायब हो जाता है। जो बचा है वह तरंग ऊर्जा है (मापा जाने पर कण गुणों के साथ)। और भी अधिक रहस्य जोड़ने के लिए, मानव चेतना इस तरंग ऊर्जा को प्रभावित करती प्रतीत होती है, जैसा कि भौतिकविदों और अन्य लोगों ने बार-बार दिखाया है।
जैविक क्षेत्र में कोई नहीं जानता कि जीवन कैसे उत्पन्न हुआ, और कई बड़ी समस्याएं हैं, जैसे कि प्रोटीन-एमआरएनए "तंत्र" कैसे उत्पन्न हुआ।

टेलीपैथी, क्लेयरवोयंस, निकट-मृत्यु अनुभव, शरीर के बाहर के अनुभव, रहस्यमय अनुभव, आदि जैसी घटनाओं के लिए कोई अच्छी व्याख्या नहीं है।
तथाकथित "क्वालिया समस्या" है। ऐसा कैसे होता है कि जब केवल प्रकाश की आवृत्तियाँ होती हैं तो व्यक्ति लाली जैसे गुणों का अनुभव करता है? डेविड चाल्मर्स ने इस प्रश्न के बारे में लिखा है। बेशक, भावनाओं, मूल्यों, अर्थ, अंतर्दृष्टि, आदि के बारे में भी यही पूछा जा सकता है।

अध्याय 7 में, मैं अकादमिक विषयों के लिए एक वैकल्पिक मार्ग की रूपरेखा तैयार करता हूं जो वर्तमान की तुलना में बहुत अधिक अभिन्न है। इस पथ में जीवन का आध्यात्मिक, समग्र दृष्टिकोण शामिल है।

नवउदारवादी पूंजीवाद के साथ, जीवन पर मानवता का भौतिकवादी दृष्टिकोण सतही सुख, व्यसन, लालच, पारिस्थितिकी, एक तकनीकी स्वर्ग के वादे से थोड़ा अधिक प्रदान करता है, जबकि अमीर और गरीब के बीच की खाई हर दिन चौड़ी होती जाती है। कोई आश्चर्य नहीं कि बहुत से लोग निराशा में जीते हैं। आप सोच रहे होंगे कि इतने सारे लोग जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण क्यों रखते हैं। इसका उत्तर इयान मैकगिलक्रिस्ट की नवीनतम पुस्तकों में पाया जा सकता है: द मास्टर एंड हिज़ एमिसरी एंड द मैटर विद थिंग्स। 17 वीं शताब्दी में तथाकथित "ज्ञानोदय" के बाद से सब कुछ गलत हो गया है। बुद्धि ने बुद्धि को चकनाचूर कर दिया। कृपया इस मुद्दे के लिए इयान मैकगिलक्रिस्ट का YouTube चैनल देखेंस्पष्ट करने के लिए।

कोई तर्क दे सकता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने हमें कम से कम (बाद के) औद्योगिक देशों में कुछ समृद्धि लाई है। सच है, लेकिन किस कीमत पर!
पारिस्थितिक विचारों की उपेक्षा के साथ सतत आर्थिक विकास पर आधारित एक झूठी मौद्रिक प्रणाली के संयोजन ने पृथ्वी पर जीवन के विनाश को और भी करीब ला दिया है।

जीवन के आध्यात्मिक दृष्टिकोण में यह विश्वास शामिल है कि चेतना अभिव्यक्ति से पहले होती है। अधिक विशेष रूप से, चेतना, पदार्थ और जीवन एक ही "चीज" या होने या प्रक्रिया के तीन पहलू हैं। आज हमारी भाषाओं में ऐसे त्रिगुणात्मक प्राणियों का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। दार्शनिक चेतना को पदार्थ से अलग करने के जाल में फंस गए हैं। उन्होंने अलग-अलग कैटेगरी बनाई हैं, जहां ऐसा अलगाव नहीं होना चाहिए। रेने डेसकार्टेस उन दार्शनिकों में से एक थे जिन्होंने यह बड़ी गलती की।
ध्यान दें कि इस पुस्तक में मैं जिस आध्यात्मिक दृष्टि का वर्णन कर रहा हूं, उसमें तथाकथित मन-शरीर की समस्या मौजूद नहीं है। चूंकि सब कुछ चेतना-पदार्थ-जीवन की अभिव्यक्ति है, यह केवल प्राणियों के विकासवादी स्तर और अभिव्यक्ति के लिए जिम्मेदार प्रतीत होने वाली विरोधी ताकतों या ऊर्जाओं की बातचीत का मामला है। इस पर बहुत कुछ, जैसे कि भग्न और नेस्टेड सिस्टम, सात अभिधारणाओं पर अध्याय 7 में ग्रंथ सूची में और परिशिष्ट ए में पाया जा सकता है।

पदार्थ और चेतना का आध्यात्मिक या समग्र दृष्टिकोण डॉ. इयान मैकगिलक्रिस्ट (ऊपर उनकी कुछ पुस्तकों का संदर्भ देखें)। यह दृष्टिकोण द्वैत और पूरकता को समझता है। उनका तर्क है कि विरोधों को सुलझाया जा सकता है और अक्सर सद्भाव में एक साथ काम करते हैं। एक उदाहरण

मस्तिष्क के दो गोलार्ध हैं। जबकि बायां गोलार्द्ध नियमों, स्थिर छवियों, कठोर हां-नहीं सवालों के जवाबों से अधिक चिंतित है, दायां गोलार्ध अधिक समग्र रूप से काम करता है। यह किसी स्थिति या व्यक्ति के आकार या संपूर्णता को देखता है और 'प्रवाह' के प्रति अधिक अभ्यस्त होता है। मस्तिष्क कैसे काम करता है, इसकी समझ को व्यापक बनाने के लिए पाठक को मैकगिलक्रिस्ट के कार्यों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

संपूर्ण ब्रह्मांड एक जीवन की अभिव्यक्ति है जो हर चीज में व्याप्त है, एक सागर की तरह जिसमें पानी की असंख्य बूंदें हैं। इसका एक महत्वपूर्ण पक्ष और एक चेतना पहलू दोनों हैं।
आध्यात्मिक दृष्टि के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक के साथ, मेरी ई-पुस्तक मानव मन के रहस्य पढ़ें, विशेष रूप से विटवान के न्यू ग्नोसिस पर भाग, जो एक अलग डाउनलोड के रूप में भी उपलब्ध है। इस पुस्तक में मैं अवधारणाओं के संशोधन का वर्णन करता हूं, एक अवधारणा को एक चीज में बदलना। यह ऐसा कुछ है जो बाएं गोलार्ध को करना पसंद करता है, अंतहीन अमूर्त और सामान्यीकरण के अलावा, केवल निर्जीव वस्तुओं को छोड़कर जहां जीवित विषय एक बार थे।
बायां गोलार्ध प्रस्तुति की तुलना में प्रतिनिधित्व में अधिक शामिल है, जो कि दाएं गोलार्ध की गतिविधि से अधिक है।
जैसा कि कहा जाता है, नक्शा क्षेत्र नहीं है। यह इलाके के कई विवरणों को छोड़ देता है। यह उपयोगी हो सकता है, लेकिन वास्तविकता से भ्रमित नहीं होना चाहिए।

यह मुझे वाम-मस्तिष्क के प्रमुख वैज्ञानिकों की याद दिलाता है, जो अपने मॉडलों में गंभीर खामियों की ओर इशारा करते हुए बड़े पैमाने पर सबूतों का सामना करते हुए भी वास्तविकता के अपने मॉडल से चिपके रहते हैं। इन मॉडलों को संशोधित करने के बजाय, ऐसे वैज्ञानिक वास्तविकता को अनदेखा करना और अपने प्रिय मॉडलों से चिपके रहना पसंद करते हैं। बायां गोलार्द्ध आंतरिक स्थिरता के साथ बंद प्रणालियों को पसंद करता है। इसलिए, उन सबूतों को नज़रअंदाज़ करना या कम करना बहुत मददगार होता है जो उनके मॉडल के साथ विरोध करते हैं। पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति वैज्ञानिकों द्वारा की गई धारणाओं से निर्धारित होती है, जिन्हें अक्सर स्पष्ट या स्वीकार नहीं किया जाता है। यह अवलोकन अगले भाग के लिए एक अच्छा परिचय है।

आप वही देखते हैं जिसे आप सच मानते हैं

साँप और रस्सी का दृष्टान्त

भारतीय उपनिषदों में एक लड़के के बारे में एक सुंदर कहानी है जो शाम को अपने गांव से घूम रहा था और अचानक एक सांप देखा। वह चिल्लाने लगता है: सांप! रेखा! थोड़ी देर बाद वह करीब से देखता है और महसूस करता है कि यह रस्सी का एक कुंडलित टुकड़ा है जिस पर उसने लगभग कदम रखा।
यह इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे हमारी धारणाएं अपने और दुनिया के बारे में हमारे विश्वासों से रंगीन और प्रभावित होती हैं। यदि आप मानते हैं कि आप दूसरों पर भरोसा नहीं कर सकते हैं, तो आप हर जगह धोखे को देखेंगे। यह एक स्व-पूर्ति की बात है। एक व्यक्ति अपने विचारों और विश्वासों को उन स्थितियों पर प्रोजेक्ट करता है जिनका सामना करना पड़ता है b उपयुक्त। धारणा और विश्वास स्वयं की चेतना पर एक फिल्टर की तरह कार्य करते हैं और चेतना से बहुत सी मूल्यवान जानकारी को अवरुद्ध करते हैं।
इसलिए अपने विश्वासों को ध्यान से देखें। आप समाज, शिक्षा, काम, रिश्तों के बारे में अपने विचार कहाँ से लाते हैं? मीडिया से? अपने माता-पिता या दोस्तों से? अनुभव से?
यह दृष्टांत उस सच्चाई या वास्तविकता की ओर इशारा करता है जो विचार धारणा के लिए जिम्मेदार है। ब्रिटानिका इनसाइक्लोपीडिया से:
https://www.britannica.com/biography/Michael-Oakeshott#ref1185950:

".. उद्देश्य आदर्शवाद, जो मानता है कि वास्तविकता का हमारा अनुभव विचार द्वारा मध्यस्थ है, इस विचार को खारिज करते हुए कि वास्तविकता विशेष रूप से व्यक्तिपरक है और इसलिए सापेक्ष (व्यक्तिपरक आदर्शवाद) है।"

इच्छुक पाठक को दार्शनिक शेलिंग भी कहा जाता है, जिसके दर्शन में उद्देश्य आदर्शवाद का विचार शामिल है।

स्पष्ट धारणा हासिल करना आसान नहीं है। इसके लिए मन की शुद्धि की आवश्यकता होती है। इसके बारे में दूसरे अध्याय में, जहां मन को स्पष्ट धारणा और स्पष्ट सोच के पथ पर लाने के लिए कुछ तकनीकों और विधियों को प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य हमारे विचारों और विश्वासों में हमारा मार्गदर्शन करते हैं

यह एक बड़े आश्चर्य के रूप में नहीं आना चाहिए कि मूल्यों का हमारे जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। आखिरकार, मूल्य सफलता के महत्व के रूप में विविध भूमिका निभाते हैं, अच्छे संबंध रखते हैं, पैसा कमाते हैं, विपरीत लिंग के लिए आकर्षक दिखते हैं, लेकिन नैतिक मुद्दों और नैतिक निर्णयों और गुणों के विकास में भी। लोग चीजों, लोगों, उपलब्धियों की सराहना करते हैं। हम अपनी इंद्रियों को अर्थ देते हैं, हमारे विश्वास प्रणाली के माध्यम से फ़िल्टर किए जाते हैं।

आपके मूल्य क्या हैं? एक छोटी प्रश्नावली

अपने मूल्यों को खोजने का एक त्वरित तरीका यह है कि आप स्वयं से निम्नलिखित प्रश्न पूछें: मुझे जीवन साथी से क्या चाहिए या क्या उम्मीद है? मैं ज्यादातर समय (भुगतान या अवैतनिक) का क्या आनंद लेता हूं? मैं किस तरह का काम सबसे ज्यादा करना पसंद करूंगा? मैं अपना पैसा कैसे खर्च करूं? मुझे क्या शौक हैं? क्या मुझे लोगों के साथ काम करना पसंद है? क्या मुझे शोध पसंद है? प्रकृति में काम करना? बच्चे की देखभाल? गाड़ियों की मरम्मत? क्यों? अपने सबसे महत्वपूर्ण मूल्यों का अवलोकन प्राप्त करने का प्रयास करें। उन्हें अगले पेज पर लिख लें। यह देखने के लिए कि क्या आपने किसी भी समय अपने मूल्यों को बदला है, यह देखने के लिए कुछ साल बाद अपने नोट्स को फिर से देखने लायक हो सकता है।

मैंने हाल ही में मैक्सवेल माल्ट्ज की साइकोसाइबरनेटिक्स ऑडियो बुक सुनी। यह पेंगुइन रैंडम हाउस ऑडियो द्वारा प्रकाशित किया गया है। मैंने इसे audiobooks.com पर पाया। साइकोसाइबरनेटिक्स फाउंडेशन के अध्यक्ष मैट फ्यूरी ऑडियो कमेंट्री प्रदान करते हैं। मुझे अपने स्वयं के लेखन के साथ कई समानताएं देखकर सुखद आश्चर्य हुआ, जो कि साइकोसाइबरनेटिक्स का एक आध्यात्मिक रूप है। ऑडियो बुक के पहले आधे घंटे के कुछ मुख्य अंश, जो संक्षिप्त रूप से दिए गए हैं, निम्नलिखित हैं:

विज़ुअलाइज़ेशन और मानसिक छवियों के साथ काम करना
आत्म छवि और सफलता
आत्मा का रंगमंच
मस्तिष्क की लक्ष्य-निर्देशित संपत्ति

ऑडियो बुक में आत्म-छवि को व्यक्ति की मानसिक आत्म-छवि के रूप में परिभाषित किया गया है। यह "मानव व्यक्तित्व और व्यवहार की वास्तविक कुंजी" है। अध्याय एक देखें। माल्ट्ज़/फ्यूरी का तर्क है कि "अवचेतन में एक मानसिक खाका हमारे भविष्य को नियंत्रित करता है"। जब कोई अतीत में फंस जाता है और केवल अपनी गलतियों को याद करता है, तो यह कम आत्मसम्मान का संकेत है।
सलाह है: "अपनी सबसे प्यारी यादों को ताजा करें, कल्पना करें कि आप क्या चाहते हैं और महसूस करें कि आपके पास है और यह हो सकता है"। ऐसा रोजाना करें।
बेशक आपको लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। सकारात्मक रास्ते पर आने के लिए सकारात्मक मनोविज्ञान (मार्टिन सेलिगमैन) और एनएलपी (न्यूरो-भाषाई प्रोग्रामिंग) में भी उपयोगी अभ्यास हैं।

आत्मा के रंगमंच में "याद रखें, अपनी सबसे प्यारी यादों, जीत, सफलताओं, सबसे सुखद समय को याद करें"। यह एंकरिंग के समान है, एक एनएलपी तकनीक। फिर एक विशेष रूप से दिलचस्प बिंदु आता है:
"भविष्य में एक लक्ष्य की उपलब्धि की कल्पना करें और महसूस करें, लेकिन इसे अभी अनुभव करें, लगभग एक पूर्ण लक्ष्य के अनुस्मारक के रूप में।"
यह एक अभ्यास से मेल खाता है जिसका मैंने अध्याय छह में शामिल रॉबर्टो असगियोली पर अपने लेख में उल्लेख किया है।
"अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले आप खुश रह सकते हैं"।
माई नोट: जीवन को एक प्रक्रिया के रूप में देखने से आप इस पल का आनंद उठा सकते हैं और यहां और अभी पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

मस्तिष्क लक्ष्य उन्मुख है। यह टेलीलॉजिकल है। यह बिल्कुल भी रहस्यमय नहीं है। साइबरनेटिक्स (नियंत्रण और प्रतिक्रिया का विज्ञान) यांत्रिक प्रणालियों के (क्रमादेशित) लक्ष्य-उन्मुख व्यवहार से उभरा और शीघ्र हीच द्वितीय विश्व युद्ध। विमान भेदी मिसाइलों को विमानों को अधिक प्रभावी ढंग से नीचे लाना चाहिए। इसलिए, मशीनों में एक प्रतिक्रिया नियंत्रण लागू किया गया था। मशीनों के लक्षित व्यवहार की जांच और अनुकूलन किया गया।

टेलीलॉजी या समीचीनता के विचार को 19 वीं शताब्दी में विज्ञान से प्रतिबंधित कर दिया गया था। यह अभी भी बहस का विषय है, मुझे विश्वास है, लेकिन यह आने वाले समय का स्वीकृत ज्ञान होगा। वैज्ञानिक केवल लोग हैं, जो आमतौर पर बहुत सीमित शिक्षा और सुरंग की दृष्टि से पीड़ित होते हैं। इतिहास इसे लगातार दिखाता है। विज्ञान के महानतम दिमागों ने हमेशा इसे पहचाना है। कोई भी ठीक-ठीक यह नहीं बता पाया है कि कोई टेबल से पेन कैसे निकाल सकता है। आपके हाथ में कलम का विचार उस तथ्य को प्राप्त करने की क्रिया में कैसे साकार होता है?
पक्का कोई नहीं जानता। हमें इस संबंध में विनम्र होना चाहिए!

ऑडियो पर वापस: "स्व-छवि मानव व्यक्तित्व और व्यवहार की कुंजी है"। "जैसे-जैसे आत्म-छवि

बदलती है, वैसे ही व्यक्तित्व और व्यवहार भी बदलते हैं।"
आत्म-छवि "न केवल बुद्धि से, या केवल बौद्धिक ज्ञान से, बल्कि अनुभव से, बेहतर या बदतर के लिए बदल जाती है"।
"हमारे आत्मविश्वास और संतुलन की वर्तमान स्थिति हमारे अनुभवों का परिणाम है।"
दरअसल, और यहां और अध्याय दो में दिए गए अभ्यास एक व्यक्ति को अपने जीवन को व्यवस्थित करने और उसे सकारात्मक दिशा में निर्देशित करने में मदद कर सकते हैं।
"एक बेहतर आत्म-छवि बनाने के लिए रचनात्मक अनुभव का उपयोग करना"।
इसे आगे अध्याय दो में समझाया गया है जहां नकारात्मक विचारों को बदलने के लिए एक विज़ुअलाइज़ेशन तकनीक दी गई है।

सफलता हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती है और हम असफलता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसलिए लचीले और खुले रहें। आत्म-स्वीकृति इस अहसास से प्रेरित होती है कि हम ब्रह्मांड का एक अभिन्न अंग हैं। इसके बारे में अगले अध्याय और परिशिष्ट ए में बहुत कुछ है, जहां सभी युगों के महान संतों के अनुभव और ज्ञान के आलोक में मनुष्य की संभावनाओं पर चर्चा की गई है।

अंतिम: अपनी उपलब्धियों को याद रखें, चाहे वह कितनी भी छोटी या बड़ी क्यों न हो, और उन्हें आपको अपने दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करने दें।

अध्याय दो: विचार प्रक्रिया का विश्लेषण [2]

विचार क्या हैं एक नया दृष्टिकोण

क्या आपने कभी सोचा है कि आपका दिमाग कहाँ से आता है? यह कैसे है कि मनुष्य जटिल गणितीय प्रणालियों का निर्माण कर सकते हैं, भविष्य की घटनाओं का अनुमान लगा सकते हैं और तदनुसार योजना बना सकते हैं? विचार क्या हैं क्या आप विचारों के निर्माता हैं या आप दूसरों से आने वाले विचारों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं? टेलीपैथी के बारे में क्या? निम्नलिखित खंडों में हम विचार प्रक्रिया पर करीब से नज़र डालेंगे। निम्नलिखित पर कुछ नोट्स लें और इन विचारों को वास्तविक जीवन की स्थितियों से जोड़ने का प्रयास करें। जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, उद्धरण मेरी पुस्तक, मिस्ट्रीज़ ऑफ़ द ह्यूमन माइंड से हैं, जो कि आर्काइव.org या academia.edu पर स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है।

[2] इस अध्याय के लिए धन्यवाद डी.जे.पी. कोक, प्वाइंट लोमा थियोसोफिकल सोसायटी की डच शाखा [ब्लावात्स्की हाउस] के पूर्व नेता हैं।

विचारों का चरित्र

वैज्ञानिकों को पता नहीं है कि वास्तव में एक विचार क्या है। वे इस बात की परिकल्पना करते प्रतीत होते हैं कि मस्तिष्क में न्यूरॉन्स का नेटवर्क किसी तरह विचार पैदा करता है, लेकिन यह नहीं पता कि यह कैसे काम करता है, अकेले कैसे अमूर्त सोच उत्पन्न होती है।

विचार बहुत विविधता में आते हैं और विभिन्न गुणवत्ता के होते हैं। उदाहरण के लिए, सोच का एक पहलू लालसा है। वासना और कच्चा जुनून है, लेकिन ऊंची उड़ान वाली महत्वाकांक्षा भी हो सकती है।
लोगों को सताया जा सकता है और विचारों से ग्रस्त भी किया जा सकता है। एक विचार इतना मजबूत हो सकता है कि कोई उसका विरोध नहीं कर सकता।

आइए जीवित चीजों की विशेषताओं को देखें। किसी चीज को जीवित कहने में क्या लगता है?

जीवविज्ञानियों के बीच मानदंड भिन्न हैं, लेकिन हम इसका उपयोग कर सकते हैं:

1. जीवित प्राणी जन्म और मृत्यु की प्रक्रियाओं के अधीन हैं।

2. जीवित चीजों को किसी तरह भोजन की आवश्यकता होती है (चयापचय)

3. जीवों का अपना चरित्र होता है।

4. सजीव वस्तुएँ किसी न किसी रूप में प्रजनन कर सकती हैं।

5. जीवित प्राणियों की अपनी चेतना होती है।

विचार विश्लेषण से पता चलेगा कि विचार इन सभी बिंदुओं को पूरा करते हैं।

1. इतिहास में अक्सर एक निश्चित युग में "एक विचार के जन्म" की बात की जाती है। नाम के लिए कई उदाहरण हैं। न केवल फ्रांसीसी क्रांति जैसी नाटकीय घटनाएं, बल्कि पुनर्जागरण, औद्योगिक क्रांति, कंप्यूटर युग, डेटा हाईवे आदि जैसे कई अन्य धीरे-धीरे विकसित होने वाले एपिसोड भी इस तरह से देखे जा सकते हैं। एक विचार के जन्म के बाद, यह विकसित होगा, कुछ हद तक

विकसित होगा, और अंततः किसी अन्य विचार (प्रतिमान) द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने के लिए मर जाएगा।

2. हम सभी जानते हैं कि हमारी अक्सर इच्छाएं होती हैं, उदाहरण के लिए कुछ खरीदना। जब हम इस इच्छा को पूरा करते हैं, तो साथ की सोच अक्सर जल्दी मर जाती है। अगर हम इसे पूरा नहीं कर सकते हैं, तो दो चीजें हो सकती हैं: हम भूल जाते हैं, या वह इच्छा इतनी मजबूत हो जाती है कि हमें उस इच्छा को पूरा करना पड़ता है। जब तक यह इच्छा पूरी नहीं हो जाती, हम लगभग खुद को पागल कर लेते हैं। हम इस विचार को लगातार अपनी इच्छा शक्ति (विचार का चौथा पहलू, नीचे देखें) से पोषित करते हैं, जो इस विचार को वास्तव में मजबूत और बड़ा बनाता है। इस प्रक्रिया के कई उदाहरण हैं जो दिखाते हैं कि हम खुद पर नियंत्रण खो देते हैं और कुछ कार्यों में फंस जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप वास्तव में अराजक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ओह, हम कैसे कामना कर सकते हैं कि हमने ये चीजें कभी नहीं की थीं।
विचार आकार लेते हैं और लंबे समय तक चलते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस हद तक कायम हैं। यदि हम उन पर थोड़ा ध्यान दें तो उनके मरने की संभावना अधिक होती है।

3. विचारों को उनके अपने चरित्र के साथ इस प्रकार समझा जा सकता है (श्री कोक के विचार की ट्रेन का मेरा दृष्टांत): यदि हमें याद है कि हम कभी-कभी अजीब या समझ से बाहर विचारों का सामना करते हैं जिन्हें हम जल्दी भूल जाते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे अपने चरित्र के इन विचारों का विचलित चरित्र निहित है। ये विचार जड़ लेने और अंकुरित होने के लिए हमारे अंदर उपयुक्त मिट्टी नहीं ढूंढते हैं।

इसके विपरीत, कोई विचार या विचार हमारी चेतना में अधिक आसानी से आ जाएगा यदि उस विचार का चरित्र हमारे व्यक्तित्व के चरित्र से मेल खाता हो।
जातिवादी विचार किसी के दिमाग में अधिक आसानी से गूंजेंगे यदि किसी के भीतर पहले से ही नस्लवाद की ओर कोई तत्व या प्रवृत्ति है। कला की अधिक सराहना तब होती है जब हम अपने भीतर सौंदर्य या सामंजस्य की भावना विकसित कर लेते हैं।

4. विचारों का प्रसार पहली नज़र में अजीब लग सकता है। लेकिन यह तो हम सभी जानते हैं। जब एक शिक्षक हमें कुछ बताता है और हम उसे स्वीकार करते हैं, तो वे विचार हमारे दिमाग में उपजाऊ जमीन पाते हैं ताकि वे विकसित हों, खिलें और फलें-फूलें।और फल दे सकता है। बदले में, हम इन विचारों को दूसरों ("मानसिक बीज बोएं") तक पहुंचा सकते हैं जहां वे नया जीवन पा सकते हैं। आज हम "मेम्स" के बारे में सुनते हैं, लेकिन मैं इसे एक कदम आगे बढ़ाऊंगा और कहूंगा कि विचार केवल हवा में तैरने वाली जानकारी से अधिक हैं।

5. एक विचार की अपनी चेतना होती है। हम सभी जानते हैं कि कभी-कभी हम विचारों से काफी "जुनूनी" हो जाते हैं। हमें विचार के प्रबल प्रभाव से पीछे हटने में बड़ी कठिनाई होती है। हमारी चेतना से अन्य विचारों को अवरुद्ध करते हुए, विचार विशाल अनुपात में बढ़ गया है। आप ऐसी स्थिति से कैसे निपटते हैं? हमें अपनी पूरी ताकत से दूसरे विचारों पर ध्यान देना चाहिए; सबसे बढ़कर, हमें अपने आप को इस लोहे की पकड़ से मुक्त करने के लिए कार्य करना चाहिए। रचनात्मक दृष्टिकोण के लिए अगला भाग देखें।
इस आत्म-जागरूकता का एक सकारात्मक उदाहरण तब होता है जब हम एक महान, प्रेरक विचार की चपेट में आ जाते हैं जो हमें निस्वार्थ कार्यों की ओर ले जाता है जो हम सामान्य रूप से नहीं करते हैं।

श्री कोक ने निष्कर्ष निकाला कि "विचार जीवित चीजें हैं।"
"उनमें न केवल एक स्पंदनात्मक पहलू है, बल्कि उनके भीतर जीवन भी है।" [3]

[3] आज, दार्शनिकों के बीच पैन्सिसिज्म का दर्शन जोर पकड़ रहा है क्योंकि वैज्ञानिक चेतना की

व्याख्या बिल्कुल नहीं कर सकते हैं। वास्तव में, प्राचीन लोगों के बीच पैनप्सिसिज्म सार्वभौमिक था। डेसकार्टेस द्वारा अपनी द्वैतवादी योजना तैयार करने और भौतिकवादी दर्शन को कर्षण प्राप्त करने के बाद इसे अस्वीकार कर दिया गया था।

इसके बाद श्री कोक का तर्क है कि विचारों की धारा जो हमारे सिर से गुजरती है, उसमें बहुत से जीवित प्राणी होते हैं। वह कहते हैं कि हमारा मन, बोलने के लिए, विचार रूपों या छवियों को देखने की क्षमता है। हम जल्द ही देखेंगे कि हमें इन संस्थाओं के प्रभावों को निष्क्रिय रूप से प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

श्री कोक आगे कहते हैं, "विचारों की धारा की अवधारणा, जीवित प्राणियों की बहुलता के रूप में, हमारे जीवन को बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण कुंजी है! इस ज्ञान का अनुप्रयोग (निम्नलिखित पैराग्राफ भी देखें) हमें धारणा और अनुभव के नए दृष्टिकोण खोलने की अनुमति देता है। बेशक हमें इस कुंजी को लागू करने से पहले अपनी सोच में इस स्थिति की शुद्धता का अनुभव करना चाहिए।"

अगला भाग श्री कोक द्वारा एक गैर-सार्वजनिक दस्तावेज़ का एक खुला पैराफ्रेश और अनुवाद है जो मेरे पास है।

जीवित प्राणियों के रूप में विचारों की प्रकृति का पता लगाने के लिए, विचारों के निर्माता के रूप में खुद को पर्यवेक्षक या विचारों के साक्षी के रूप में देखने की सलाह दी जाती है। अपने आप को एक जीवन के हिस्से के रूप में देखें जो सभी प्राणियों का सार है। इससे गवाही देना आसान हो जाएगा।
विचार प्रक्रिया

यहां मैं मामूली संशोधनों के साथ दोहराता हूं, जो मैंने अपनी पहली पुस्तक, मिस्ट्री ऑफ द ह्यूमन माइंड में लिखा था।

ज्ञान परंपरा "सचेत विचार और अचेतन विचार के बीच अंतर करती है।"

"अचेतन सोच वह है जो हम सभी अक्सर करते हैं। हम विज्ञान, व्यावसायिक नारों, तकनीकी नवाचारों, राजनीतिक प्रचार आदि की हठधर्मिता को अनजाने में स्वीकार करते हैं। मजबूत व्यक्तित्वों के लिए लोगों पर विचार थोपना काफी आसान है, जब तक कि वे खुद पर विचारों के प्रभाव और स्थिति के बारे में नहीं जानते हैं। दुनिया। फिर भी, हमें बेहतर जानना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि कैसे युद्ध प्रचार लोगों को पागल बना सकता है। प्रचार, नारे, विज्ञापन आदि लोगों को आसानी से प्रभावित कर सकते हैं यदि वे उन संदेशों के प्रभाव से अनजान हैं।"

"विचार प्रक्रिया की इस अज्ञानता और दूसरों और स्वयं पर विचारों के प्रभाव ने मानव जाति के लिए कई आपदाएँ लाई हैं। हम इस भ्रम के अधीन हैं कि हम सचेत रूप से सोच रहे हैं, कि हम अपने विचारों को नियंत्रित कर रहे हैं जब तथ्य अन्यथा इंगित करते हैं। तथ्य यह है कि हम शक्तिशाली व्यक्तित्वों द्वारा प्रक्षेपित और प्रवर्धित विचारों की लहरों की सवारी करते हैं जिनके पास ऐसा करने के स्पष्ट कारण हैं (व्यक्तिगत लाभ, राजनीतिक शक्ति, व्यावसायिक कारणों आदि के लिए)। ध्यान रहे, यह सब बड़ी चतुराई से किया गया है। हमें विश्वास करना होगा कि हमारे पास इतने सारे अधिकार हैं (हमारी जिम्मेदारियों के बारे में क्या?) हमें विश्वास करना होगा कि हमें इस या उस नवीनतम तकनीकी वस्तु की आवश्यकता है (क्या हमें वास्तव में इसकी आवश्यकता है?) वे हमें लगभग कुछ भी विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं। यह एक डरावनी स्थिति है।"

"हम इस निष्क्रिय मानसिकता को कैसे तोड़ सकते हैं? सचेत या स्पष्ट सोच के माध्यम से।

चेतन सोच: विचारों के प्रवाह को देखना

"विचारों को जीवित प्राणी के रूप में पहचानना सचेत सोच की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह अपने स्वयं के विचारों के लिए स्वयं की जिम्मेदारी के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ता है। विचार सरल, प्राथमिक प्राणी हैं जो उन्हें दिए गए आवेग का पालन करते हैंलेटा हुआ जब विचार प्रक्रिया हाथ से निकल जाती है तो वे आमतौर पर अपनी चेतना व्यक्त करते हैं।
कई मानसिक विकारों को संभावित रूप से रोका जा सकता है यदि इन तथ्यों को जाना जाए और उनके बारे में ज्ञान को ठीक से लागू किया जाए।

"विचार प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए, कोई भी रेडियो या टेलीविजन तरंगों को प्रसारित करने की तकनीक के बारे में सोच सकता है। एक रिसीवर विशिष्ट आवृत्तियों को प्राप्त कर सकता है और चैनलों में से एक में ट्यूनिंग करके, संदेशों को दृश्यमान और समझने योग्य बनाया जाता है। इसी तरह, एक व्यक्ति विचार तरंगों को उठाता है जो उनकी विचार आवृत्तियों की सीमा के भीतर हैं। मानव मन के मामले में, यह स्पष्ट है कि यह प्रेषक और विचारों के प्राप्तकर्ता दोनों के रूप में कार्य कर सकता है।"

"जब हम एक बच्चे को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि जन्म से ही उसका अपना चरित्र होता है। धीरे-धीरे, अपने जीवन के पहले वर्षों में, वह अपने चरित्र को व्यक्त करना शुरू कर देता है। यह चरित्र बैंडविड्थ बनाता है, इसलिए बोलने के लिए, जिसके भीतर विचारों को अवशोषित या माना जा सकता है।
पालन-पोषण, शिक्षा और कई अन्य कारक बच्चे को प्रभावित करते हैं और जीवन के एक संकीर्ण दृष्टिकोण के माध्यम से इस सीमा को और कम करते हैं। ऐसा नहीं है कि बच्चा यौवन के दौरान परंपराओं और पूर्वाग्रहों के खिलाफ नहीं लड़ता है, उदाहरण के लिए, लेकिन पर्यावरण के प्रभाव आमतौर पर वापस लड़ने के लिए बहुत मजबूत होते हैं। और इसलिए एक 'सभ्य' नागरिक का पुनर्जन्म होता है, जीवन के उपयोगितावादी तरीके से ठीक से समायोजित किया जाता है।"

नोट: आज यह शिक्षा पर्याप्त नहीं है, क्योंकि स्वस्थ, सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली में परिवर्तन मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक परम आवश्यकता बन गया है।

"यह बताता है कि क्यों नए, ताज़ा विचारों को मानव मन में प्रवेश करने में इतनी परेशानी होती है। हमारे दिमाग जीवन के बारे में पारंपरिक अवधारणाओं और विचारों में बहुत अधिक क्रिस्टलीकृत हैं। प्राप्त करने वाला मस्तिष्क केवल कुछ निश्चित आवृत्तियों के विचारों को प्राप्त और पारित कर सकता है। इस तथ्य का अनजाने में या यहां तक कि जानबूझकर वाणिज्यिक और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग किया जाता है।

"आप यह सब कैसे बदल सकते हैं? सबसे पहले, परिवर्तन की प्रक्रिया स्वयं लोगों से शुरू होनी चाहिए, क्योंकि उन्हें उस मानसिक (मनोवैज्ञानिक) स्थिति या स्थिति को पहचानना होगा जिसमें वे हैं। तभी वह अपनी मानसिकता बदलने का फैसला कर सकता है। वह अन्य विचार आवृत्तियों, यानी उच्च विचार पहलुओं में ट्यून कर सकता है" (नीचे सात विचार पहलुओं को देखें), परिष्कृत विचार गुण। जहां मैं "वह" लिखता हूं, आप निश्चित रूप से "वह" भी पढ़ सकते हैं।

नकारात्मक विचारों को बेअसर करने की सरल तकनीक

"अब हम सफल नहीं होंगे यदि हम अपने चरित्र दोषों से लड़ने की कोशिश करते हैं।"

"क्यों नहीं? ऐसा इसलिए है क्योंकि लड़ाई के माध्यम से हम अपने विचारों को पोषित करते हैं, जो

जीवित प्राणी हैं। ताकि वे भूखे मरने की बजाय और मजबूत हो जाएं। लड़ने के बजाय हमें अवांछित विचारों को भूलना चाहिए, उन्हें मरने देना चाहिए। इसके लिए हमें अपने विचारों को पहचानना होगा और केवल एक विपरीत, सकारात्मक विचार सोचकर उन्हें एक सकारात्मक आवेग देना होगा। इस सकारात्मक विचार के अनुसार सोचने और कार्य करने से हम नकारात्मक विचारों के प्रभाव से अधिक हो जाते हैं। इस अभ्यास से चिपके रहने से आप विचारों की गुणवत्ता को बदल सकते हैं और अपने दिमाग को अन्य आवृत्तियों पर भी काम कर सकते हैं, अधिक परोपकारी, आध्यात्मिक, सकारात्मक आदि। कुछ अभ्यास के बाद हमें ये नकारात्मक विचार भी नहीं मिलेंगे (हम नोटिस या निरीक्षण कर सकते हैं लेकिन उन्हें हमें परेशान न करने दें)। मैं यहां काफी समझदार लोगों की बात कर रहा हूं।

नोट: समाज में जो गलत है उस पर गुस्सा या नाराजगी जैसी बातें नकारात्मक विचारों के रूप में नहीं गिनी जाती हैं। क्रोध की ऊर्जा का उपयोग चीजों को करने के लिए किया जा सकता है, आमतौर पर शक्तियों के एक पूल के माध्यम से, उदा। B. नागरिक समाज संगठनों, ट्रेड यूनियनों, आदि द्वारा।
जीवन में हर चीज में सामान्य ज्ञान हमेशा आवश्यक होता है।

विचार के सात पहलू

ज्ञान परंपरा विचार के सात पहलुओं को सूचीबद्ध करती है, अर्थात्:
शारीरिक, भावनात्मक, महत्वपूर्ण, इच्छा, बुद्धि, अंतर्ज्ञान, प्रेरणा।
अपनी पहली किताब (ऊपर देखें) में मैंने इन पहलुओं का विस्तार से वर्णन किया है। यहां मैं इनमें से कुछ सामग्रियों का सारांश दूंगा।
उद्धरण मेरी किताब से हैं जैसा कि ऊपर बताया गया है।

सोच का भौतिक पहलू शारीरिक देखभाल और आवश्यकताओं से संबंधित है। बेशक यह कुछ हद तक जरूरी है।

जैसा कि हम देखेंगे, शरीर पर बहुत अधिक ध्यान अन्य पहलुओं से विचलित करता है।

सोच का भावनात्मक पहलू मन पर किए गए इंद्रिय छापों से संबंधित है और प्रतिक्रिया व्यक्ति अपनी धारणा को देता है। इसकी अधिकता भावुकता में बदल सकती है। यह एक अच्छी पहचान हो सकती हैस्टोइक्स (स्टोइकिज़्म) के कुछ लेखों जैसे एपिक्टेटस और मार्कस ऑरेलियस को पढ़ने में सक्षम हो। आज, लोगों को मन की शांति पाने में मदद करने के लिए स्टोइक विचार कर्षण प्राप्त कर रहे हैं। मैं बाद में मार्कस ऑरेलियस के पास वापस आऊंगा।

सोच का महत्वपूर्ण पहलू ठोस क्रिया में मन की गतिविधि ("मानस, मन") को संदर्भित करता है। ओवरएक्सप्रेसिंग जीवन शक्ति के उदाहरण के रूप में, उन प्रबंधकों पर विचार करें जो व्यवसाय में हर चीज की योजना बनाना और उसे नियंत्रित करना चाहते हैं।
सोच के लालसा पहलू को अक्सर गलत समझा जाता है।
इच्छा एक तटस्थ शक्ति है, जैसे तार से बहने वाली बिजली। इसका उपयोग अच्छे और बुरे के लिए किया जा सकता है।

मैंने अपनी पहली किताब में लिखा था:

"हमारे कार्यों के पीछे की प्रेरणा को समझना आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया में मौलिक है। यह मकसद स्वार्थी या निस्वार्थ हो सकता है। "अच्छे" या "बुरे" के बारे में बात करने के बजाय, जो सापेक्ष शब्द हैं जो प्रत्येक संस्कृति और ऐतिहासिक युग में भिन्न होते हैं, हम "स्वार्थी" या "निःस्वार्थ" शब्दों का

उपयोग अपने स्वयं के कार्यों और विचारों का न्याय करने के लिए एक मानदंड के रूप में बेहतर तरीके से कर सकते हैं। . हालाँकि, हमें सूक्ष्म उद्देश्यों से धोखा दिया जा सकता है, उदाहरण के लिए महत्वाकांक्षा, जो परोपकारी हो सकती है, या दूसरी ओर काफी स्वार्थ हो सकता है।

हमारे उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से देखने के लिए बहुत ईमानदारी की आवश्यकता होती है कि वे क्या हैं। विकसित निर्णय या समझ के स्तर के आधार पर, हम इन सूक्ष्म उद्देश्यों को समझेंगे।

क्या हम अपनी वासनाओं के गुलाम हैं या हम अपने मन की गतिविधियों को नियंत्रित करते हैं? यह महत्वपूर्ण विषय भगवद गीता में अर्जुन के साथ कृष्ण की चर्चा का हिस्सा है।

उच्च रूप उदाहरण: उच्च महत्वाकांक्षा। निचले रूप का उदाहरण: सकल जुनून।

विचार का बौद्धिक पहलू "विचार का केवल एक पहलू है और उच्चतम नहीं। बुद्धि सामान्य रूप से समस्याओं को उनके संदर्भ से अलग करके कार्य करती है। खंडित, आंशिक ज्ञान है। जब तक वास्तविक समझ के साथ संयुक्त नहीं किया जाता है, तब तक चीजों के मूल या सार तक पहुंचने की इसकी सीमित क्षमता होती है। यह अक्सर लड़ाई के लक्षणों को समाप्त करता है और कुछ भी हल नहीं करता है।

उच्चतर रूप: किसी समस्या के दिल को वास्तव में समझने के संदर्भ में व्यावहारिक समाधान निकालने के लिए बुद्धि का उपयोग करना या वास्तव में स्थिति क्या है।

निचला रूप: अपनी अंतर्निहित सीमाओं और कमियों की आवश्यक समझ के बिना, विज्ञान या अन्य जगहों पर मॉडल पर आँख बंद करके भरोसा करना।

सोच का सहज पहलू शुद्ध बौद्धिकता का नहीं, बल्कि चीजों, लोगों, स्थितियों की गहरी समझ से संबंधित है। आप एक पल में एक स्थिति को समझ सकते हैं और समस्या के समाधान की पहचान कर सकते हैं।
"हम इसे 'मानसिक आंख' से देखते हैं, इसलिए बोलने के लिए। हमारे पास प्रेरणा का यह फ्लैश होने के बाद, इसे अपने स्वयं के बौद्धिक पहलू के साथ व्यवस्थित रूप से काम करने में कुछ समय लग सकता है।"

"समझ को भागों और संपूर्ण के बीच संबंधों को समझने के साथ करना है। आप विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन के बीच संबंध देख सकते हैं। व्यक्ति यह महसूस करता है कि व्यक्ति को वास्तव में सामूहिक आदि से अलग नहीं किया जा सकता है। मनुष्य में, प्रकृति में और सामान्य रूप से ब्रह्मांड में अंतर्निहित सद्भाव और व्यवस्था को पहचानता है।

सोच के इस पहलू को ज्ञानोदय का पहलू कहा जा सकता है।
"जब किसी ने न केवल विचार के स्तर पर बल्कि उससे परे इस पहलू को पूरी तरह से विकसित कर लिया है, तो उसे तकनीकी रूप से बुद्ध या बोधिसत्व कहा जाता है।"

उदाहरण: "मानव जाति की स्थितियों को सुधारने में दूसरों की मदद करने के लिए चीजों की अपनी समझ का उपयोग करें।"

सोच का प्रेरक पहलू।

"कला के महान कार्यों में प्रेरणा का प्रभाव स्पष्ट है। साथ ही, सभी युगों के मनीषियों ने एकता चेतना की स्थिति में, सभी जीवन की वास्तविक पूर्णता का एक अनुभव, महान दर्शन का अनुभव

किया है। कभी-कभी हम सभी प्राणियों (सामान्य रूप से जीवन के लिए) से जुड़ाव महसूस करते हैं, एकता की भावना में डूबे हुए जब हम एक जंगल से गुजरते हैं।

सामान्य तौर पर, हम अपनी समझ या सहज क्षमता विकसित करके ही इस पहलू को विकसित (पहचानें) कर सकते हैं।

उदाहरण: विज्ञान के लिए नई अवधारणाओं को लाना (वास्तविक अंतर्ज्ञान पर आधारित), जैसे मैक्स प्लैंक, क्वांटम यांत्रिकी के संस्थापकों में से एक; कला की उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण।

"जब विचार के सभी सात पहलू पूरी तरह से विकसित हो जाते हैं, तो हम वास्तव में पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण, स्वस्थ इंसान की बात कर सकते हैं।"
हमने आंतरिक आत्मा के प्रभाव के लिए खुद को खोलने के लिए व्यक्तित्व को पार कर लिया है।

कार्य और अभ्यास

1. अब जब आपने मन के सात पहलुओं का अध्ययन कर लिया है, तो आप एक या दो पहले से कर सकते हैंउन उभरते हुए पहलुओं के नाम बताइए जो आपके दिमाग में या उसके माध्यम से काम करते हैं? तुम कैसे जान सकते हो?
आप इन और अन्य पहलुओं को अपनी सोच में महारत हासिल करने के लिए कितना समय देते हैं?

2. प्रतिदिन नकारात्मक विचार को बेअसर करने के लिए विधि का प्रयोग करें।
अपने अनुभव लिखिए। यदि आप उत्तर देने से पहले दस तक गिनते हैं, तो क्या यह आपको सकारात्मक विचार की कल्पना करने का समय देता है?

विचार पैटर्न बदलें

विचार, क्रिया, आदत, चरित्र का चक्र

हम पहले ही देख चुके हैं कि हम अपने विचार पैटर्न को कैसे बदल सकते हैं। इस प्रक्रिया को और स्पष्ट करने के लिए, हम कुछ प्रमुख चरित्र प्रश्नों को देखेंगे (फिर से डी.जे.पी. कोक के काम के एक व्याख्या और अनुवाद पर आधारित, लेकिन मेरे अपने नोट्स के साथ संवर्धित)।

स्तब्धतावाद, पैनप्सिसिज्म

शाही दार्शनिक मार्कस ऑरेलियस अपने "ध्यान" में कहते हैं:

"आपका जीवन वही है जो आपके विचार इसे बनाते हैं"।

"यह सत्य इस तथ्य पर आधारित है कि प्रत्येक क्रिया के पीछे एक संगत विचार होता है और वह बार-बार की जाने वाली क्रिया एक आदत बन जाती है। आदतें हमारे चरित्र को आकार देती हैं, अर्थात् हमारे जीवन का पैटर्न। हमारे अपने विचार-जीवन की एक आलोचनात्मक परीक्षा से इन तथ्यों को स्पष्ट करना चाहिए।
यह इस प्रकार है कि हमारी सोच की आदतों को बदलने से हमारे चरित्र में बदलाव आएगा! बेशक, हमें अपनी सोच की आदतों को बदलने के इस अभ्यास का उपयोग करना चाहिए।"

"परिवर्तन की दिशा सुपरपर्सनल, ट्रांसपर्सनल, निस्वार्थ विचारों की दिशा में होनी चाहिए।" पुरुषों

और महिलाओं के आत्म-विस्मरण का अभ्यास करने, सभी की भलाई के लिए काम करने, हठधर्मिता, समूह हितों और अन्याय के खिलाफ लड़ने के इतिहास में महान उदाहरण हैं, या बनाई गई कला के महान कार्य, आदि।
ये थे सभ्यताओं के सच्चे संस्थापक! वे हमारे उदाहरण हो सकते हैं।"

हर कोई एक संस्कृति वाहक बन सकता है और एक ऐसे समाज को आकार देने में मदद कर सकता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने सर्वोत्तम गुणों को विकसित करने और व्यक्त करने का अवसर मिले।

"आपको बस इतना करना है कि अपने भीतर मौजूद रचनात्मक शक्तियों का उपयोग करें। तकनीक सरल है: आप कैसे बनना चाहते हैं, इसकी एक तस्वीर बनाने के लिए अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करें! "

आप रचनात्मक कल्पना (मानव आत्मा की एक आकार देने वाली शक्ति) की जबरदस्त शक्ति की खोज करेंगे। मैं यहां केवल कल्पना के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि आध्यात्मिक-मानसिक स्तर पर विचार के उच्च पहलुओं की शक्तियों के बारे में, विशेष रूप से अंतर्ज्ञान और प्रेरणा के बारे में।

“एक तरफ, आप जानते हैं कि आपका चरित्र अभी क्या है। दूसरी ओर, आप जानते हैं कि आप कैसे बनना चाहते हैं (और संभवतः गहरे नीचे पहले से ही हैं: उच्च आत्म जो आपके संविधान का हिस्सा है और जिसमें उच्च स्तर की चेतना और आध्यात्मिक विकास है)। परिशिष्ट ए देखें। आप इन ऊर्जाओं को अपने व्यक्तित्व के माध्यम से प्रवाहित करने की अनुमति देकर अपने व्यक्तित्व को उच्च स्व के आंतरिक गुणों के लिए पारदर्शी बना सकते हैं। इसे "आध्यात्मिक दुनिया के साथ संरेखण", "आंतरिक दुनिया के लिए पुलों का निर्माण", "आध्यात्मिक स्पंदनों का निर्माण" कहा जा सकता है। यह दुनिया को बेहतर के लिए बहुत प्रभावित करेगा।

"ये सभी बल सूक्ष्म मैट्रिक्स (उपरोक्त मामले में इसके उच्च भाग) के माध्यम से काम करते हैं, आंतरिक और बाहरी क्षेत्रों के लिए कनेक्टिंग क्षेत्र [मैट्रिक्स पर आगे देखें]। सूक्ष्म प्रकाश या क्षेत्र मैट्रिक्स यह समझाने में एक महत्वपूर्ण कारक है (उदाहरण के लिए) कैसे एक विचार आवेग शरीर की गति की ओर जाता है, टेलीपैथी और क्लैरवॉयन्स कैसे काम करता है, आदि।

नोट: इस मैट्रिक्स में आकार देने वाले गुण हैं। रूपर्ट शेल्ड्रेक ने मॉर्फिक (रचनात्मक) कार्य-कारण को पोस्ट किया: फॉर्म फ़ील्ड्स का अस्तित्व। उन्होंने कुत्ते के मालिकों और उनके कुत्तों के बीच टेलीपैथी पर प्रयोग भी किए। बहुत सम्मोहक सामान।

"इस प्रक्रिया के माध्यम से (ऊपर देखें) आप धीरे-धीरे अपने आप को एक अधिक संपूर्ण इंसान में बदल लेते हैं। मन के उच्चतर पहलू स्वयं में और स्वयं के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने में सक्षम होंगे।"

व्यक्तित्व उच्च स्व से जुड़ा है। इसी से हमारा मन प्रज्वलित या प्रज्वलित होता है। संयोग से, यह अमूर्त सोच के विकास या विकास के रहस्य को सुलझाता है जिसने इतने सारे जीवविज्ञानी को हैरान कर दिया है।

"एक दृष्टिकोण से सोचना मस्तिष्क के अशांत दर्पण पर उच्च आत्मा से निकलने वाली विचार की शुद्ध किरण का एक प्रकार का 'प्रतिबिंब' है। आप उस दर्पण को साफ कर सकते हैं और उस शुद्ध किरण को एक क्रिस्टल स्पष्ट दिमाग पर प्रतिबिंबित कर सकते हैं।"

"तकनीक यह है: आपको अपनी एक छवि बनानी होगी जैसा आप बनना चाहते हैं और उस छवि

को परिपूर्ण करना चाहते हैं। यह आदर्श छवि आपके जीवन की समझ के विकास के अनुपात में विकसित और परिष्कृत होगी। यदि आप सोचने और अभिनय करने के पुराने तरीकों में वापस आ जाते हैं तो निस्संदेह आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यह आपकी सोच की आदतों को बदलते रहने के लिए एक प्रोत्साहन होना चाहिए।"

F निरीक्षण करने के लिए चेतना का प्रवाह

"विचारों की प्रकृति को जीवित प्राणियों के रूप में जांचने में, विचारों के निर्माता के रूप में विचारों के साक्षी के रूप में खुद को अधिक देखने की सलाह दी जाती है। अपने आप को एक जीवन के हिस्से के रूप में देखें जो हर चीज का सार है। इससे गवाह की स्थिति में आना आसान हो जाएगा। ”

"आपके विचार स्वाभाविक रूप से किस "ट्रैक" को पहचानने के लिए एक अच्छा अभ्यास है कि आप सोने से पहले के क्षणों में अपने विचार प्रवाह का निरीक्षण करें। बस एक गवाह के रूप में निरीक्षण करें (इस अभ्यास में)। आप इन विचारों की गुणवत्ता या चरित्र को पहचानना और सोच के विभिन्न पहलुओं को पहचानना सीख सकते हैं। इससे खुद को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। आप इस व्यायाम को दिन के शांत समय में भी कर सकते हैं। यदि आप जो देखते हैं वह आपको पसंद नहीं है, तो आप अपने सोच पैटर्न को बदलने के लिए निम्नलिखित अनुभागों में विधियों का उपयोग कर सकते हैं।

पाइथागोरस का व्यायाम

"एक उपयोगी व्यायाम, जिसे कभी-कभी पाइथागोरस के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, यह है कि आप बिस्तर पर जाते समय पीछे मुड़कर देखें और दिन की घटनाओं का मूल्यांकन करें। अपने आप से पूछें: "आज मैंने क्या किया?", "क्या मैंने वह किया जो मैंने करने के लिए निर्धारित किया था?", "उस दिन मैंने क्या सीखा?", "मैं बेहतर क्या कर सकता था?", "क्या मुझे कोई चोट लगी है (यदि ऐसा है, "मैं इसे कैसे ठीक कर सकता हूं?"), आदि। यह दुनिया के मामलों से निपटने के लिए बहुत उपयोगी है और आपको गहरी नींद से अधिक लाभ प्राप्त करने में मदद करेगा क्योंकि आप पहले से ही कुछ के साथ कुछ हद तक आराम कर रहे हैं। प्रक्रिया के लिए दिन के तनावों की। निःसंदेह, यह अभ्यास शुद्ध चित्त होकर करना चाहिए।"

"इसके अलावा, जैसे-जैसे आपकी जागरूकता बढ़ेगी, आप अपनी कमजोरियों को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। यह केवल उम्मीद की जानी चाहिए क्योंकि एक तेज रोशनी सचमुच आपके दिमाग से चमक रही है। इन कमजोरियों से लड़ा नहीं जाना चाहिए बल्कि मानवता के लाभ के लिए गतिशील रूप से काम करके भुला दिया जाना चाहिए ताकि आप आंतरिक शक्ति प्राप्त कर सकें और आपकी चेतना आपके आध्यात्मिक कोर पर अधिक केंद्रित हो।

"आप वही बन जाते हैं जो आप सोचते हैं। याद रखें कि ऊर्जा एक चक्र है और भेजे गए विचार कुछ समय बाद आपके पास वापस आएंगे। इसलिए सावधान रहें कि आप दुनिया में क्या भेजते हैं। एक नकारात्मक प्रक्षेपण एक बूमरैंग की तरह आपके पास वापस आएगा और आपको अप्रत्याशित रूप से पकड़ लेगा, यदि इस जीवन में नहीं तो निश्चित रूप से एक और पुनर्जन्म में। एक संचरित सकारात्मक आवेग प्रवर्धित होता है और दूसरों को (और स्वयं को भी) उत्तेजित करता है। इस कथन पर विचार करें कि एक शक्ति, एक बार खर्च हो जाने पर, नष्ट नहीं होती है, लेकिन सूक्ष्म स्तरों पर तब तक बनी रहती है जब तक कि दूसरी शक्ति द्वारा पुन: संतुलित नहीं की जाती।

"एक वह है जिसे आप पहचानते हैं। अपने आप को जीवन की वास्तविकताओं को समझने में

सक्षम और व्यावहारिक जीवन में उच्च आदर्शों को महसूस करने में सक्षम एक पुरुष या महिला पर विचार करें। उत्थान विचारों के निर्माता बनें और आप उनके एक जीवित अवतार होंगे!"

विचारों के प्रवाह पर नियंत्रण

हमारे विचार पैटर्न को बदलना (सोच की आदतें)

अगले तीन पैराग्राफ कुछ डी.जे.पी. कोक का काम (मेरा अनुवाद और व्याख्या)।

"अपने विचार जीवन को नियंत्रित करने की आवश्यकता का कारण अब स्पष्ट हो जाएगा: अपने मन में उठने वाले विचारों के प्रकार को नियंत्रित करके, आप इस दुनिया पर एक शक्तिशाली, सकारात्मक, सामंजस्यपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं और खुद से दूर नहीं हो सकते हैं। हानिकारक इच्छाएँ या गलत विचार।

"हम विचार की शक्ति का सुरक्षित रूप से उपयोग कर सकते हैं यदि हम अपने दिमाग को सामान्य रूप से मानव जाति की भलाई के लिए एक उच्च आदर्श की ओर निर्देशित करते हैं, उदा। मानव भाईचारे का आदर्श (बहनत्व, आदि)। इस आदर्श के बारे में ध्यान से सोचें और अपनी सोच के उन सभी तत्वों को हटा दें जो इसके विपरीत हैं और उन्हें सकारात्मक बिल्डिंग ब्लॉक्स (विचारों) से बदल दें।"

"ये विचार कई लोगों के मन को छू लेंगे और इस दुनिया में बदलती परिस्थितियों के लिए एक प्रेरक शक्ति होंगे। इसे प्राप्त करने के लिए निरंतर और उद्देश्यपूर्ण सोच की आवश्यकता होती है। निस्वार्थता के अभ्यास के माध्यम से व्यक्ति स्वयं की मदद करने के लिए दूसरों की मदद करने के प्रभावी तरीके भी देखेगा। बहुत से लोग, लेकिन पर्याप्त नहीं, लंबे समय से ऐसा कर रहे हैं। क्या आप उनसे जुड़ना चाहेंगे?"

"मुझे उपरोक्त प्रक्रिया में कुछ व्यावहारिक नोट्स जोड़ने दें। इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए, इस छवि के कुछ हिस्सों की पहचान करने के लिए विशिष्ट, व्यावहारिक चरणों की कल्पना करें और वह करें जो आपको करने की आवश्यकता है। कुछ उदाहरण देने के लिए, क्या आपने कभी इस दुनिया में पैसे के प्रवाह के तरीके को बदलने में मदद करने पर विचार किया है? परियोजनाओं में निवेश क्यों नहीं, लोग n अपने और अपने परिवार के लिए जीविका कमाने के लिए (या अपनी बचत को बैंकों में निवेश करें जो इस प्रकार की परियोजनाओं का समर्थन करते हैं)?"

"उपभोक्ता शक्ति के बारे में क्या: कुछ उत्पादन मानकों, श्रम स्थितियों, पर्यावरणीय परिस्थितियों आदि को पूरा करने वाले उत्पादों को खरीदना? आप अपने पड़ोसियों, बुजुर्गों, बेघरों आदि के लिए क्या कर सकते हैं? बेशक, सबसे महत्वपूर्ण है, प्रेम और करुणा का जीवन जीकर, अपनी प्रतिभा का उपयोग करके और दूसरों की भलाई के लिए देख कर दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना। समूहों को संगठित करें, समूहों में भाग लें, आध्यात्मिक दुनिया की वास्तविकता के बारे में जानकारी फैलाएं, रोजमर्रा की जिंदगी में आध्यात्मिकता के बारे में, संगठनों और प्रभावशाली लोगों (राय निर्माताओं) को पत्र लिखें; उपयोगी आध्यात्मिक कार्य करने के कई अवसर हैं। मुझे व्यक्तिगत रूप से LETS (लोकल एक्सचेंज ट्रेडिंग सिस्टम्स) योजनाओं में भाग लेने में आनंद आता है। ये ऐसी प्रणालियाँ हैं जो स्थानीय मुद्रा के साथ काम करती हैं और ब्याज के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस तरह की व्यवस्था में भाग लेने से सामाजिक संपर्क उत्तेजित होते हैं और आप कई नए दोस्त बना सकते हैं।

"एक बात निश्चित है: वे महत्वपूर्ण कार्य हैं, जो ज्ञान और समझ द्वारा निर्देशित हैं। कल्पना का

उपयोग करना प्रारंभिक कार्य है, सही मानसिक पैटर्न विकसित करना, 'जमीन तैयार करना'।

क्या कोई मैट्रिक्स या छापों का संग्रह है?

आप में से कुछ लोगों ने ग्रेग ब्रैडेन की द डिवाइन मैट्रिक्स पढ़ी होगी।
इस पुस्तक में, ब्रैडेन वर्णन करता है कि आप अपनी गहरी इच्छाओं को साकार करने के लिए इस मैट्रिक्स के गुणों का उपयोग कैसे कर सकते हैं। इस पर मेरी टिप्पणी बुद्धिमानी से कार्य करना, यथार्थवादी लक्ष्य रखना है जो आपके चरित्र और क्षमताओं के अनुरूप हों।

ऐसे मैट्रिक्स का विचार नया नहीं है। यह सदियों से जाना जाता है। (विज्ञान में भी एक होलोग्राफिक ब्रह्मांड के बारे में अटकलें हैं, जो एक निकट से संबंधित विचार है।)
इसका एक नाम "सूक्ष्म प्रकाश" है।
यह प्रकाश मैंने स्वयं देखा है। यह वह माहौल है जिसमें हम रहते हैं, हमारी भावनाएं और विचार हैं। इसके कई क्षेत्र हैं। हमारे सपनों में छवियां इस प्रकाश में हमारे दिमाग द्वारा बनाई जाती हैं।

ऐसा लगता है कि कम ही लोग इसके बारे में जानते हैं। यह समुद्र में मछली को यह बताने जैसा है कि समुद्र है। क्या?वे कहते हैं, हमें समुद्र नहीं दिखता। नहीं, आप इसे नहीं देखते हैं, "आप इसके ठीक बीच में हैं", जैसा कि एक आध्यात्मिक शिक्षक (विटवन) ने एक बार कहा था। गुफा के बारे में प्लेटो का रूपक दिमाग में आता है। यह अभी भी इस अशांत समय के लिए एक बहुत ही उपयुक्त रूपक है। यदि आपने इसे अभी तक नहीं पढ़ा है, तो कृपया करें। बात इतनी ही है।

क्या आपने कभी सोचा है कि जब आपके पास गहराई से चलने वाला अनुभव होता है तो भावनात्मक-मानसिक ऊर्जा कहां जाती है?
मैट्रिक्स या फ़ील्ड जीवन से सभी छापों को पंजीकृत और संग्रहीत करता है। यह कार्य कर्म से संबंधित है। इस या किसी अन्य जीवन में आपको कर्म प्रभावों से निपटना होगा। इसके बारे में अधिक जानकारी गूढ़ साहित्य में पाई जा सकती है।

"इच्छा (ऊर्जा) इच्छा का अनुसरण करती है," विलियम क्वान जज भगवद गीता पर अपनी टिप्पणी में कहते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि आप अपना ध्यान, अपनी इच्छा (अपनी आध्यात्मिक अभीप्सा के रूप में) को आंतरिक तलों की ओर निर्देशित करते हैं, तो आप भीतर से आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं और अपनी ऊर्जा को अंदर जाने के लिए एक नया सर्किट बना सकते हैं!

"मानव मानस निश्चित रूप से छवियों का जवाब देगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह एक ऐसी प्रथा है जिसे आज बड़ी संख्या में लोग जानते हैं। इसके लिए पहले कुछ दृढ़ संकल्प और ध्यान की आवश्यकता होती है, लेकिन जल्द ही यह आदत बन जाती है! जब आप कल्पना का अभ्यास करते हैं तो विचार की वास्तविक धाराएँ गति में आती हैं। आपके कार्य इन धाराओं के प्रभाव को हजार गुना बढ़ा देंगे। यह इस दुनिया के लिए एक उपचार प्रभाव लाएगा जिसकी इसे इतनी सख्त जरूरत है। प्रेम (करुणा) दुनिया की सबसे बड़ी उपचार शक्ति है! आपके और दूसरों के द्वारा प्रकट सभी के लाभ के लिए एक सच्चा दिव्य जादू। आप चाहें तो फर्क कर सकते हैं!"

मैं यहां दो संदर्भ देना चाहता हूं:

1. रॉबर्टो असगियोली, "द एक्ट ऑफ विल", वाइल्डवुड हाउस, लंदन, 1974।

यह साइकोसिंथेसिस के विकासकर्ता डॉ. रॉबर्टो असगियोली। इसमें सक्षम इच्छा और पारस्परिक इच्छा की अवधारणा शामिल है।

2. प्राकृतिक व्यवस्था का स्कूल (www.sno.org):
प्राकृतिक व्यवस्था का स्कूल।
ग्नोसिस (ज्ञान की परंपरा) आधुनिक रूप में।

इस संदर्भ में, विशेष रूप से मनुष्य की "मानसिक प्रकृति" और "फर्स्ट क्रॉसिंग" पर सामग्री देखें, जो असंतुष्ट आत्म, अर्थ और अंतर्दृष्टि की खोज और मानस की सामग्री को बदलने की संभावना से संबंधित है।

अभ्यास का सारांश

इस पुस्तक में मैं जिन तकनीकों और प्रथाओं का वर्णन करता हूं, वे उन लोगों के लिए कुछ मार्गदर्शन प्रदान करेंगे जो इतिहास के इस बिंदु पर खुद को और वैश्विक स्थिति की स्थिति की एक स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करना चाहते हैं। यह जल्दी-जल्दी अमीर बनने की योजना नहीं है, जिनमें से पहले से ही बहुत अधिक हैं। यह छोटा आत्म या अहंकार व्यक्तित्व नहीं है जो हर चीज का केंद्र है, बल्कि जिस बड़े संसार में वह अंतर्निहित है, वह मायने रखता है। सहानुभूति वह गुण है जिसकी हमारी दुनिया में बहुत आवश्यकता है। निम्नलिखित अभ्यासों के अलावा, पाठक विटवन पर मेरे लेख में और अधिक अभ्यास पाएंगे, देखें, मेरे संग्रह में।

https://ia904505.us.archive.org/13/items/the-practical-gnostic-teachings-of-ralph-m-de-bit-vitvan/The%20practical%20Gnostic%20teachings%20of%20Ralph%20M% 20deBit%20%28Vitvan%29.pdf

अभ्यास 1

एक अभ्यास जो बहुत मददगार हो सकता है वह है कई दृष्टिकोण लेना: स्थितियों को कई कोणों या दृष्टिकोणों से देखना सीखें। यह संदर्भ संवेदनशीलता को बढ़ाता है और अन्य लोगों के विचारों और व्यवहार की बेहतर समझ की अनुमति देता है। अगर कोई खुद को किसी ऐसे व्यक्ति के स्थान पर रख सकता है, जो आपके प्रति विपरीत दृष्टिकोण रखता है, तो आप बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस तरह के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले तर्कों पर विचार करके कोई भी ऐसे विरोधी दृष्टिकोण का बचाव करने का अभ्यास कर सकता है। यह सूक्ष्म सोच के बारे में है।

व्यायाम 2

सचेत सोच: विचारों के प्रवाह का अवलोकन करना।

नकारात्मक विचारों को बेअसर करने की सरल तकनीक।
"अब हम सफल नहीं होंगे यदि हम अपने चरित्र दोषों से लड़ने की कोशिश करते हैं।"
"क्यों नहीं? ऐसा इसलिए है क्योंकि लड़ाई के माध्यम से हम अपने विचारों को पोषित करते हैं, जो जीवित प्राणी हैं। ताकि वे भूखे मरने की बजाय और मजबूत हो जाएं। लड़ने के बजाय हमें अवांछित विचारों को भूलना चाहिए, उन्हें मरने देना चाहिए। इसके लिए हमें अपने विचारों को स्वीकार करना होगा और केवल एक विपरीत, सकारात्मक विचार सोचकर उन्हें सकारात्मक बढ़ावा देना होगा।
इस सकारात्मक विचार के अनुसार सोचने और कार्य करने से हम नकारात्मक विचारों के प्रभाव से अधिक हो जाते हैं। इस अभ्यास से चिपके रहने से आप विचारों की गुणवत्ता को बदल सकते हैं

और हमारे दिमाग को अन्य आवृत्तियों पर भी काम करने की अनुमति दे सकते हैं, अधिक परोपकारी, आध्यात्मिक, सकारात्मक आदि।
कुछ अभ्यास के बाद, हम इन नकारात्मक विचारों को प्राप्त करना बंद कर देंगे (हम उन्हें नोटिस कर सकते हैं या देख सकते हैं, लेकिन हम उन्हें हमें परेशान करने की अनुमति नहीं देते हैं)। मैं यहां काफी समझदार लोगों की बात कर रहा हूं। दूसरों को एकीकरण और सकारात्मक जीवन अभिविन्यास प्राप्त करने के लिए मनोचिकित्सा की आवश्यकता हो सकती है।"

कृपया ध्यान दें: उपरोक्त व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के लिए है, न कि हमारी वर्तमान राजनीतिक, वित्तीय और आर्थिक व्यवस्था की कई मूर्खताओं पर वैध गुस्सा, जो दुनिया भर में कई लोगों को नष्ट कर रही है।

व्यायाम 3

"विचारों की प्रकृति को जीवित प्राणियों के रूप में जांचने में, विचारों के निर्माता के रूप में विचारों के साक्षी के रूप में खुद को अधिक देखने की सलाह दी जाती है। अपने आप को एक जीवन के हिस्से के रूप में देखें जो हर चीज का सार है। इससे गवाह की स्थिति में आना आसान हो जाएगा। "
"जिस लेन में आपके विचार स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होते हैं, उसे पहचानना सीखने का एक अच्छा अभ्यास यह है कि आप सोने से पहले के क्षणों में अपने विचार प्रवाह का निरीक्षण करें। बस एक गवाह के रूप में निरीक्षण करें (इस अभ्यास में)। आप इन विचारों की गुणवत्ता या चरित्र को पहचानना और सोच के विभिन्न पहलुओं को पहचानना सीख सकते हैं।
इससे खुद को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।
आप इस व्यायाम को दिन के शांत समय में भी कर सकते हैं। यदि आप जो देखते हैं वह आपको पसंद नहीं है, तो आप अपने सोच पैटर्न को बदलने के लिए निम्नलिखित अनुभागों में विधियों का उपयोग कर सकते हैं। "

व्यायाम 4

अब जब आपने विचार के सात पहलुओं का अध्ययन कर लिया है, तो क्या आप एक या दो प्रमुख पहलुओं का नाम बता सकते हैं जो आपके दिमाग में या उसके माध्यम से काम करते हैं? तुम कैसे जान सकते हो? क्या आपने अपनी चेतना में विचारों के प्रवाह को देखा है?
आप इन और अन्य पहलुओं को कितना समय देते हैंअपनी सोच को नियंत्रित करने के लिए?
अपने उत्तर लिखिए।

व्यायाम 5

विचार पैटर्न बदलें

"तकनीक यह है: आपको अपनी एक छवि बनानी होगी जैसा आप बनना चाहते हैं और उस छवि को परिपूर्ण करना चाहते हैं। यह आदर्श छवि आपके जीवन की समझ के विकास के अनुपात में बढ़ती और परिष्कृत होती है। जब आप सोच और अभिनय के पुराने तौर-तरीकों में वापस आ जाते हैं, तो निस्संदेह आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यह आपकी सोच की आदतों को बदलते रहने के लिए एक प्रोत्साहन होना चाहिए।"

व्यायाम 6

पाइथागोरस का व्यायाम

"एक उपयोगी व्यायाम, जिसे कभी-कभी पाइथागोरस के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, यह है कि आप बिस्तर पर जाते समय पीछे मुड़कर देखें और दिन की घटनाओं का मूल्यांकन करें। अपने आप से पूछें: "आज मैंने क्या किया?", "क्या मैंने वह किया जो मैंने करने के लिए निर्धारित किया था?", "उस दिन मैंने क्या सीखा?", "मैं बेहतर क्या कर सकता था?", "क्या मुझे कोई चोट लगी है (यदि ऐसा है, "मैं इसे कैसे सही कर सकता हूं?"), आदि। यह दुनिया के मामलों से निपटने के लिए बहुत उपयोगी है और आपको गहरी नींद से अधिक लाभ उठाने में मदद करेगा क्योंकि आप पहले से ही तनाव का हिस्सा हैं। दिन संसाधित किया है। निःसंदेह, इस अभ्यास को नेक भाव से करना चाहिए।"

व्यायाम 7

विचार पैटर्न में बदलाव (सोच की आदतें)
विचारों के प्रवाह पर नियंत्रण

"अपने विचार जीवन को नियंत्रित करने की आवश्यकता का कारण अब स्पष्ट हो जाएगा: अपने मन में उठने वाले विचारों को नियंत्रित करके, आप इस दुनिया पर एक शक्तिशाली, सकारात्मक, सामंजस्यपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं और खुद को नहीं ले सकते। दूर।"
"हम विचार की शक्ति का सुरक्षित रूप से उपयोग कर सकते हैं यदि हम अपने दिमाग को सामान्य रूप से मानवता की भलाई के लिए एक उच्च आदर्श पर केंद्रित करते हैं, जैसे कि मानव भाईचारे का आदर्श (बहनत्व/बहन/आदि)। इस आदर्श के बारे में ध्यान से सोचें और अपनी सोच के उन सभी तत्वों को हटा दें जो इसके विपरीत हैं और उन्हें सकारात्मक बिल्डिंग ब्लॉक्स (विचारों) से बदल दें।"
"ये विचार कई लोगों को छूएंगे और इस दुनिया में बदलती परिस्थितियों के लिए एक प्रेरक शक्ति होंगे। इसे प्राप्त करने के लिए निरंतर और लक्ष्य-उन्मुख सोच की आवश्यकता होती है। निःस्वार्थता और आत्म-विस्मृति के अभ्यास के माध्यम से, व्यक्ति स्वयं की मदद करने के लिए दूसरों की मदद करने के प्रभावी तरीके भी देखेगा। बहुत से लोग, लेकिन पर्याप्त नहीं, लंबे समय से ऐसा कर रहे हैं। क्या आप उनसे जुड़ना चाहेंगे?"
इस अभ्यास को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इस बारे में अधिक मार्गदर्शन के लिए रॉबर्टो असगियोली के साइकोसिंथेसिस और विल के अधिनियम पर अध्याय छह का अध्ययन करना मददगार हो सकता है।

व्यायाम 8

साइकोसाइबरनेटिक्स पर अनुभाग से:

ऑडियो बुक में आत्म-छवि को व्यक्ति की मानसिक आत्म-छवि के रूप में परिभाषित किया गया है। यह "मानव व्यक्तित्व और व्यवहार की वास्तविक कुंजी" है। अध्याय एक देखें। माल्ट्ज़/फ्यूरी का तर्क है कि "अवचेतन में एक मानसिक खाका हमारे भविष्य को नियंत्रित करता है"।
जब कोई अतीत में फंस जाता है और केवल अपनी गलतियों को याद करता है, तो यह कम आत्मसम्मान का संकेत है।

सलाह है: "अपनी सबसे प्यारी यादों को ताजा करें, कल्पना करें कि आप क्या चाहते हैं और महसूस करें कि आपके पास है और यह हो सकता है"। ऐसा रोजाना करें।
बेशक आपको लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। सकारात्मक रास्ते पर आने के लिए सकारात्मक मनोविज्ञान (मार्टिन सेलिगमैन) और एनएलपी (न्यूरो-भाषाई प्रोग्रामिंग) में भी उपयोगी अभ्यास हैं।

आत्मा के रंगमंच में "याद रखें, अपनी सबसे प्यारी यादों, जीत, सफलताओं, सबसे सुखद समय को याद करें"। यह एंकरिंग के समान है, एक एनएलपी तकनीक। फिर एक विशेष रूप से दिलचस्प बिंदु आता है:
"भविष्य में एक लक्ष्य की उपलब्धि की कल्पना करें और महसूस करें, लेकिन इसे अभी अनुभव करें, लगभग एक पूर्ण लक्ष्य के अनुस्मारक के रूप में।"
यह एक अभ्यास से मेल खाता है जिसका मैंने अध्याय छह में शामिल रॉबर्टो असगियोली पर अपने लेख में उल्लेख किया है।
"अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले आप खुश रह सकते हैं"।
माई नोट: जीवन को एक प्रक्रिया के रूप में देखने से आप इस पल का आनंद उठा सकते हैं और यहां और अभी पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

बोनस एक्सरसाइज: दूसरों को भी दें अपनी तरह आजादी

यह आज्ञा विटवन की ओर से है (उनकी शिक्षाओं पर एक लेख के लिए मेरा संग्रह देखें)।
विचार यह है कि किसी को अपने विचारों को दूसरे पर थोपना नहीं चाहिए।
जीवन से निपटने के तरीके के बारे में एक व्यक्ति के अलग-अलग विचार हो सकते हैं।
जब तक वह व्यक्ति दूसरों के प्राकृतिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं करता है और दूसरों को चोट पहुंचाने वाली आपराधिक या दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों में शामिल नहीं होता है, तब तक मुझे किसी को आपके सोचने के लिए मजबूर करने का प्रयास करने का कोई कारण नहीं दिखता है।
यह अन्य लोगों को गी करेगासाथ काम करने के लिए बेन।
बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि आप मुखर नहीं हो सकते।
हालाँकि, दूसरों को आंकने में जल्दबाजी न करें। आपको शायद उसकी स्थिति या पृष्ठभूमि के बारे में सीमित ज्ञान है। हो सकता है कि दूसरों के पास आपके जीवन से पूरी तरह से अलग अनुभव और अंतर्दृष्टि हो।

अध्याय तीन

द हायर सेल्फ: योर ट्रू पेरेंट्स

इससे पहले कि मैं आपको उच्च आत्मा के बारे में बताऊं, विकास के बारे में कुछ जानकारी क्रम में है। गूढ़ परंपरा के अनुसार विकास की तीन पंक्तियाँ हैं: शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक। यह जानना दिलचस्प है कि "विकासवाद" शब्द का अर्थ "इफ्लक्स" है, जो सामग्री और गुणवत्ता का खुलासा है।
तो भौतिक विकास अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त वाहन विकसित करने के बारे में है; आध्यात्मिक विकास मन, मानसिक क्षमताओं और मस्तिष्क के विकास से संबंधित है; आध्यात्मिक विकास आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करने के बारे में है जैसे किसी चीज का प्रत्यक्ष ज्ञान और प्रेरणा के लिए खुलापन।

वैज्ञानिकों ने खुद को भौतिक रूप और संज्ञानात्मक कार्यों के सीमित सेट की जांच करने के लिए सीमित कर दिया है। मनुष्यों के लिए आवश्यक अधिकांश चीजों को "व्यक्तिपरक" चीजों के रूप में अनदेखा कर दिया गया है जिन्हें मापा नहीं जा सकता है या केवल मस्तिष्क का एक कार्य है। यह अत्यधिक न्यूनीकरणवाद है, एक ऐसा कारक जिसके कारण मानवता अब दयनीय स्थिति में है।

कुछ मनोवैज्ञानिक आगे बढ़ गए हैं, जैसे अब्राहम मास्लोव, जिन्होंने बाद में अपने काम में मूल्यों के अपने पदानुक्रम में आत्म-उत्थान जोड़ा, और रॉबर्टो असगियोली ने साइकोसिंथेसिस और विल के अपने सूत्रीकरण के साथ। बाद के बारे में मैंने एक लेख को एक अलग अध्याय में शामिल किया।

दीप्तिमान स्व

उच्च स्व क्या है? यह कैसा दिखता है? इसका आकार क्या है इस रहस्यमय प्राणी के बारे में कई सवाल पूछे जा सकते हैं, जो एक तरफ, हम में से प्रत्येक के माता-पिता हैं और हमें बहुत दूर लगते हैं।

प्राचीन शिक्षाएँ स्वयं को घेरने वाली थोड़ी सी गोपनीयता को प्रकट करती हैं।
सबसे पहले, प्रत्येक मनुष्य अपने स्वयं के उच्च स्व से ऊर्जा का प्रक्षेपण या बहिर्वाह है।
ये उच्च स्वयं अस्तित्व के अपने स्वयं के विमानों पर परस्पर जुड़े हुए हैं। उच्चतर स्वयं का कोई लिंग नहीं है, हालांकि कुछ लोग कह सकते हैं कि उनकी मानसिक दृष्टि से यह पुरुष, महिला या बच्चे के रूप में प्रकट हुआ है।
उच्च आत्मा के साथ मुठभेड़ों के कई प्रमाण हैं, विशेष रूप से एक स्पष्ट आंतरिक प्रकाश के साथ जो आनंद, शांति और मन की स्पष्टता लाता है। बहुत से लोगों ने अपने जीवन में कम से कम एक बार गहन आध्यात्मिक अनुभव किया है। मनोचिकित्सक रिचर्ड बके ने इसके लिए ब्रह्मांडीय चेतना पर एक पूरी किताब समर्पित की। नीचे देखें।

परिशिष्ट A में लोगों और उनके संविधान के बारे में विस्तार से बताया गया है। आप जो मॉडल पाते हैं, वह सभी जीवन की परस्परता के बारे में आपकी समझ में बहुत कुछ जोड़ सकता है क्योंकि सब कुछ जीवन, ऊर्जा, चेतना और पदार्थ के सागर में समाया हुआ है।

उच्चतर स्व के व्यक्तित्व अभिव्यक्ति की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट ए देखें।
ये अतीत के लगभग भुला दिए गए सबक हैं। फिर भी बहुत से लोग कहते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कम से कम एक बार आत्मा को अपनी चेतना में कार्य करते हुए अनुभव किया है।

क्या उच्च आत्म व्यक्तित्व से दूर है?
हां और ना। किसी को यह महसूस करना होगा कि उच्च स्व व्यक्तित्व के अलावा अन्य क्षेत्रों में काम करता है। हालांकि, महत्वपूर्ण निर्णयों जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों पर विचार करते समय व्यक्ति उच्च आत्मा से संपर्क कर सकता है। जब लोगों को कुछ निर्णय लेने के बारे में गंभीर संदेह होता है और अपने दिमाग को आंतरिक आत्मा में निर्देशित करते हैं, तो उच्च आत्म के साथ कुछ प्रतिध्वनि हो सकती है जो उत्तर को रिले करेगी: नहीं। यदि आपको कोई गंभीर संदेह है तो ऐसा न करें। स्मरण रहे कि मनुष्य चेतना की धारा है। जैसा कि अध्याय दो में बताया गया है, एक व्यक्ति अपनी चेतना को आध्यात्मिक स्तरों पर केंद्रित कर सकता है।
स्पष्ट रूप से, उच्च स्व उस व्यक्तित्व से निकटता से संबंधित है जिसका वह कारण कारक है। फिर भी, एक व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करना सीखना चाहिए। यह केवल आध्यात्मिक विकास है जो निचले स्व के परिवर्तन की ओर ले जाएगा।
सद्गुणों का विकास अग्रभूमि में है। साहस, ध्यान, करुणा, अखंडता आदि। जीवन की पूर्णता। एक अच्छी तरह से एकीकृत व्यक्तित्व अपने स्वयं के क्षुद्र स्वार्थों को पार करने में सक्षम है।

उच्च स्व के साथ मुठभेड़ों की गवाही

ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने उस पर अपने उच्च स्व के प्रभाव की गवाही दी, जिसे उन्होंने अपना डेमन, एक अर्ध-दिव्य प्राणी कहा। दानव शब्द से भ्रमित नहीं होना चाहिए, जो इसके ठीक विपरीत इंगित करता है।
एक अन्य दार्शनिक, प्लोटिनस, खुद के साथ अपने मुठभेड़ों को भी संदर्भित करता है, जैसा कि रिचर्ड ब्यू ने अपनी पुस्तक कॉस्मिक कॉन्शियसनेस में लिखा है। उत्तरार्द्ध ने कई व्यक्तियों का वर्णन किया है जिनके पास एक ईरो हैआंतरिक प्रकाश का अनुभव किया है। वह उन लोगों के चरित्र का वर्णन करता है जिनके पास इस प्रकाश की ऐसी दृष्टि थी, जो हमेशा उच्च नैतिकता के लोग थे। इस मामले में गुण महत्वपूर्ण हैं।
यहां कई नामों का उल्लेख किया जा सकता है: गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, सुकरात, प्लेटो, प्लोटिनस, जीसस क्राइस्ट, सेंट पॉल, मोहम्मद, सेंट जॉन ऑफ द क्रॉस, जैकब बोहेम, ब्लेक, एडवर्ड कारपेंटर, वॉल्ट व्हिटमैन बस कुछ नाम रखने के लिए नाम।
सूची लंबी है और इसमें विभिन्न युगों के कुछ ही प्रसिद्ध लोग शामिल हैं। मैं कुछ और नाम बता सकता हूं, लेकिन यह सूची मेरे उद्देश्यों के लिए पर्याप्त होगी।

जब तक किसी के पास आध्यात्मिक विकास का एक निश्चित स्तर नहीं होता, तब तक इस तरह के गहन दर्शन होने की संभावना बहुत कम होती है। लेकिन कई लोगों के जीवन में एक अंतर्ज्ञान चमकता है, या बल्कि एक कूबड़। यह सब डिग्री की बात है।

इस अध्याय का निष्कर्ष यह है कि मन के ऊर्जा जगत पर मन को केन्द्रित करना और उसके साथ बंधन को मजबूत करना संभव है। यह कैसे करना है, मैंने दूसरे अध्याय में बताया। एक साधारण तकनीक बहुत आगे जाती है। फिर भी, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता और स्पष्ट लक्ष्यों का विकास और ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है।
इस संदर्भ में, अगला अध्याय स्वयं और समाज की अंतःक्रिया से संबंधित है।

मानवता के लिए महत्व के कुछ सार्वभौमिक सिद्धांत

बहुत से लोग गुणों को विकसित करने के मूल्य पर संदेह करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि हम एक अन्यायपूर्ण दुनिया में रहते हैं। यह मानते हुए कि जिस वित्तीय और आर्थिक व्यवस्था में हम रहते हैं, वह बहुत ही त्रुटिपूर्ण है, इन लोगों को अपने भीतर कुछ गुण विकसित करने की

आवश्यकता के बारे में गुमराह किया जाता है। इसका कारण निम्नलिखित पैराग्राफों में स्पष्ट हो जाएगा।

नैतिक सिद्धांत: प्रकृति के ताने-बाने में निहित

दूसरे अध्याय में मैंने संक्षेप में मैट्रिक्स का उल्लेख एक ऐसे क्षेत्र के रूप में किया है जिस पर छापें अंकित या दर्ज की जाती हैं। यह मैट्रिक्स गूढ़ हलकों में अच्छी तरह से जाना जाता है। इसे कहते हैं: सूक्ष्म प्रकाश। इसमें कई विशेषताएं हैं, लेकिन यहां मैं रिकॉर्डिंग सुविधाओं को कवर करने जा रहा हूं। चूँकि हमारे इरादे और, सबसे बढ़कर, हमारे कार्य इस क्षेत्र के सार को आकार देते हैं, कोई भी तुरंत धर्मों और आध्यात्मिक दर्शन की सलाह को समझना शुरू कर सकता है:

उ. सुनहरा नियम: दूसरों के साथ वह मत करो जो तुम अपने साथ नहीं करना चाहते।

यह अक्सर कहा जाता है: दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि आप स्वयं के साथ व्यवहार करें। चूंकि हम अक्सर यह नहीं जानते कि अपने लिए क्या अच्छा है, दूसरों के लिए तो दूर, मुझे लगता है कि ऊपर दिया गया नकारात्मक सूत्रीकरण बेहतर है।

ख. जैसा बोओगे वैसा काटोगे

यह नए नियम की एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है।

बी और ए के बीच संबंध तुरंत स्पष्ट है। हिंदू धर्म में कर्म का विचार मिलता है। गूढ़ परंपरा के अनुसार, कर्म केवल नियति नहीं है। इसके बजाय, यह कार्रवाई और कार्रवाई के परिणामों को संदर्भित करता है।

भौतिकवादी लोग इस बात पर आपत्ति करेंगे कि अपराधी अक्सर निर्दोष होते हैं।
यह एक सही अवलोकन है। हालांकि, कर्म का विचार पुनर्जन्म के विचार के साथ होना चाहिए। अब मैं चाहता हूं कि आप समझें कि व्यक्तित्व का दोबारा जन्म नहीं होता है। मृत्यु के बाद क्या होता है कि जीवन में सीखे गए पाठ और स्वयं के सर्वोत्तम गुणों को एक नोटबुक में एक पृष्ठ की तरह स्वयं में संग्रहीत किया जाता है। एक समय आएगा जब स्वयं पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए एक नए व्यक्तित्व को प्रोजेक्ट और विकसित करेगा।
यह व्यक्तित्व पिछले कार्यों के परिणामों का सामना करता है, क्योंकि यह पहले से ही स्वयं की पिछली अभिव्यक्ति में नहीं हुआ है। कर्म न्याय से कोई नहीं बच सकता। कोई नहीं। इस जीवन में कोई क्या कर सकता है सकारात्मक प्रवृत्तियों और चरित्र लक्षणों को विकसित करना और अतीत की कुछ गलतियों के लिए कार्रवाई करना। यह एक गतिशील, विकासवादी प्रक्रिया है! मनुष्य लंबे समय तक अधिक से अधिक ज्ञान और मन और आत्मा की क्षमताओं के प्राणी के रूप में विकसित होगा।
अर्थात्, यदि मनुष्य ऐसा करने का चुनाव करता है।
यहां हम देखते हैं कि हमें जीवन की स्पष्ट दृष्टि विकसित करने की आवश्यकता क्यों है। गुण महत्वपूर्ण हैं।
इसके बारे में ध्यान से, तार्किक और दार्शनिक रूप से सोचें।

नोट: अब मैं न्याय, कारण और प्रभाव के बारे में जो समझता हूं वह यह है:

आप वास्तव में जो हैं वो बनना सीखें

जन्म के समय, एक बच्चे का पहले से ही अपना चरित्र पैटर्न होता है। इस बात को हर मां जानती है। एक जैसे जुड़वा बच्चों के साथ, वह बहुत जल्दी जानती है कि कौन है। लगभग बीस वर्षों के दौरान, इस चरित्र पैटर्न की अभिव्यक्ति आमतौर पर बच्चे के समय और स्थान की परंपराओं और नैतिकता के अनुसार प्रतिबंधित हो जाती है। कई युवा वयस्कों के पास Sc . हैउनके विकास में कठिनाइयाँ। यह अध्याय दो में उल्लिखित है। वे अपने विकास में निराश हो जाते हैं। इसके लिए मुख्य रूप से समाज जिम्मेदार है। एक कारण यह है कि इस दुनिया पर नवउदारवादी वित्तीय, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की पकड़ है।

फिर भी, हम अपने उच्च मूल्यों पर खरा उतरने के लिए कुछ विकल्प चुन सकते हैं। हमें दिन भर में इतनी सारी चीजों का सेवन करने की जरूरत नहीं है। हम आत्म-साक्षात्कार के लिए कम माल और अधिक समय के साथ रहने के बारे में सोच सकते हैं। हम स्वयंसेवक वगैरह कर सकते हैं। हम अपने शरीर और अपने अंतर्ज्ञान को सुन सकते हैं और एक अधिक प्राकृतिक या सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली विकसित कर सकते हैं जो इस पर निर्भर करता है कि हम अंदर कैसा महसूस करते हैं।

इसके अलावा, गूढ़ परंपरा का कहना है कि स्वयं ने मानव की तुलना में अधिक गुणों का विकास किया है, जिसका वह निर्माता है। यह प्रगतिशील विकास सिखाता है: यह विचार कि सारा जीवन विकसित होने की इच्छा रखता है, भीतर से गहरे गुणों को प्रकट करना। अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट ए देखें।

सभी जीवन की एकता

शाश्वत ज्ञान परंपरा की सबसे गहन शिक्षाएं एकता चेतना से संबंधित हैं जो पूरे जीवन में व्याप्त है। एक ऐसा क्षेत्र है जिससे सभी प्राणी निकलते हैं। हम जीवन के सागर में बूंदों की तरह हैं। हमारे लिए सीमित प्राणियों के लिए यह पूरी तरह से समझ से बाहर होगा। फिर भी हम इस सत्-चित्त-आनंद (अस्तित्व, ब्रह्मांडीय मन, आनंद) का एक छोटा सा अनुभव एकता चेतना के संक्षिप्त विस्फोटों में कर सकते हैं।
एकता में विविधता से लगता है कि क्षेत्र कैसे काम करता है। धन्य है वह व्यक्ति जो इस क्षेत्र में गहराई से प्रवेश कर सकता है।

अध्याय 4: स्वयं, समाज, पारिस्थितिकी तंत्र

गूढ़ परंपरा किसी समाज के संगठन को निर्धारित नहीं करती है। राष्ट्रों और समय के साथ मानसिकताएँ भिन्न होती हैं, इसलिए समाजों का आकार भिन्न होगा। फिर भी, कुछ सामान्य सिद्धांत दिए गए हैं जिनसे आगे की कार्रवाई के लिए दिशानिर्देश प्राप्त किए जा सकते हैं।

निम्नलिखित विषयों को कवर करते हुए मैं इनमें से कुछ पर संक्षेप में चर्चा करूंगा।

मौद्रिक प्रणाली

चक्रवृद्धि ब्याज और घातीय वृद्धि के बारे में सबसे बुनियादी तर्क यह बताता है कि एक परिमित ग्रह पर अनंत वृद्धि असंभव है।
अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। बुरा विचार। अमीर गरीबों की तुलना में कहीं अधिक संसाधनों का उपयोग करते हैं। बुरा विचार भी। थॉमस पिकेटी ने इसके बारे में एक बेस्टसेलर लिखा था।

माइक मैलोनी कवर करते हैं कि हमारी मौद्रिक प्रणाली पैसे पर उनकी प्रशंसित मुफ्त वीडियो श्रृंखला और फेडरल रिजर्व सिस्टम में कैसे काम करती है।
वीडियो नंबर पांच विशेष रूप से इस बारे में है कि हमारे समाज में पैसा कैसे बनाया जाता है।

पारिस्थितिक विचार

कृषि भूमि का तेजी से क्षरण हो रहा है। यह इस तरह नहीं चल सकता।
मिट्टी का उपचार जरूरी है। पर्माकल्चर, खाद्य वन और संबंधित तरीके दिमाग में आते हैं। ये पहले से ही दुनिया के कुछ हिस्सों में सफलतापूर्वक उपयोग किए जा चुके हैं।
हालाँकि, जलवायु परिवर्तन इन परिणामों को पूर्ववत कर सकता है।

पीक प्रॉस्पेरिटी कोर्स (पीकप्रोस्परिटी डॉट कॉम पर मुफ्त)

दुनिया आज अरबों लीटर तेल की खपत करती है। एक बार आसानी से निकालने योग्य तेल निकल जाने के बाद, इसे किसी और चीज़ से बदलना मुश्किल लगता है।
दुर्लभ पृथ्वी खनिजों की कमी और उन्हें खनन करने के लिए आवश्यक बड़ी मात्रा में ऊर्जा का अक्सर उल्लेख किया जाता है। वैकल्पिक ऊर्जाओं का कम ऊर्जा घनत्व भी एक बड़ी समस्या है।
जॉन माइकल ग्रीर की एक किताब द लॉन्ग डिसेंट, इस संबंध में कई लोगों के लिए शिक्षाप्रद हो सकती है।
विलियम कैटन ने "ओवरशूट" के बारे में लिखा है क्योंकि मानवता जिस स्थिति में है।
जोसेफ टैंटर ने जटिल समाजों के पतन के बारे में लिखा। यह एक पहचानने योग्य मामला है।

विकास में गिरावट

आयरिश प्रधान मंत्री ने स्थिर अर्थव्यवस्था का आह्वान किया है। यह एक अच्छा विचार लगता है।
धन का संतुलन धन के निचले स्तर पर हो सकता है, जो वर्तमान में पश्चिमी दुनिया में है।
अधिक से अधिक वैज्ञानिक अब "गिरावट" की वकालत कर रहे हैं।
यह अच्छी तरह से हो सकता है कि एक सरल जीवन का अर्थ कम तनाव के साथ एक खुशहाल जीवन भी होता है।

हमारे सभी सिस्टम को फिर से डिजाइन करने की जरूरत है। निर्माताओं को टिकाऊ सामान का उत्पादन करना चाहिए: कपड़े, स्वादिष्ट मांस के विकल्प, आदि। एक सीमित ग्रह पर अनन्त विकास असंभव है।
विलियम कैटन की किताब ओवरशूट देखें।
अधिक क्षेत्रीय रूप से आधारित उत्पादन उपयुक्त प्रतीत होता है।

कुछ प्रासंगिक अर्थशास्त्री:
माइकल हडसन (यूट्यूब पर शेफर्ड वालविन चैनल देखें)
जेफरी सैक्स (यूट्यूब पर भी)
रिचर्ड वोल्फ ("डेमोक्रेसी एट वर्क" यूट्यूब चैनल)

मेरे अपने देश, नीदरलैंड में, प्रमुख लोग भी एक लचीला समाज में परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हैं:

जान रोटमैन (संक्रमण प्रोफेसर)
बॉब डी विट (सोसाइटी 4.0)
वाउटर वैन डिएरेन (रोम का क्लब)

कृत्रिम होशियारी

मनुष्य तकनीक पर बहुत निर्भर हो गया है।
हम अपनी ही वैज्ञानिक तकनीक के गुलाम हो गए हैं।
जब हम एल्गोरिदम को नैतिक निर्णय लेने देते हैं तो सीमा निश्चित रूप से पार हो जाती है।
युवाल नूह हरारी निकट भविष्य में हमारे सामने आने वाले कुछ खतरों की रूपरेखा तैयार करते हैं।
यह देखना बाकी है कि एआई कितना बुद्धिमान और समझदार बनता है। मेरा अनुमान है कि एआई मानवीय समस्याओं और नैतिक मुद्दों की समझ के उच्च स्तर तक पहुंचने से बहुत दूर है। यह मानवता को गुटों में बांट सकता है।
होमो सेपियन्स होशियार हो गए हैं, लेकिन निश्चित रूप से बुद्धिमान नहीं हैं।

बायोटेक्नोलॉजी और बिग फार्मा

यह एक और गर्म विषय है। क्या भविष्य में इंसान साइबर बन जाएंगे? भविष्य में जेनेटिक इंजीनियरिंग कितनी दूर जाएगी? यहां बहुत सी खामियां हैं। जटिल तकनीकों पर लोगों की बढ़ती निर्भरता की ओर इशारा किया जा सकता है। क्या हम अपनी ही तकनीक के गुलाम हो गए हैं?

बिग फार्मा की प्रतिष्ठा खराब है। न केवल कई दवा अध्ययनों के परिणामों को दोहराया नहीं जा सकता है, ओपिओइड (फेंटेनल, ऑक्सीकोडाइन, आदि) के बारे में भी कई मुकदमे हुए हैं। बिल गेट्स भारत में व्यक्तित्वहीन हैं। इसका उन टीकों से कुछ लेना-देना है जिन्हें मैं समझता हूं। प्रीप्रिंट में अब ऐसे अध्ययन हैं जो दिखाते हैं कि एमआरएनए टीके बिल्कुल भी प्रभावी नहीं हैं और अधिक मृत्यु दर के साथ एक संबंध दिखाया गया है, जिसमें थियो शेफर्स भी शामिल हैं। क्या मैंने इन टीकों के कई दुष्प्रभावों का उल्लेख किया है? इनमें से अधिक से अधिक दिखाई देंगे। क्या आप इसे देख सकते हैंविशेष रूप से, अधिक जानकारी के लिए वैकल्पिक मीडिया देखें। Youtube पर "द न्यू वर्ल्ड" (डी नीउवे वेल्ड, डच) शुरू करने के लिए एक अच्छी जगह है।

जलवायु परिवर्तन

शायद अल्पावधि में सबसे बड़ा खतरा जलवायु परिवर्तन और हमारा बायोटोप है। अधिक से अधिक वैज्ञानिक हमें निकट भविष्य में गंभीर व्यवधानों की चेतावनी दे रहे हैं।
पॉल बेकविथ के पास इस विषय पर बड़ी संख्या में वीडियो हैं। यूट्यूब देखें।
आइए आशा करते हैं कि आर्कटिक की बर्फ कभी भी जल्द नहीं पिघलेगी। आप बहुत से आत्म-सुदृढ़ फीडबैक लूप नहीं चाहते हैं जो जलवायु को और बर्बाद कर दें।
हालांकि, ऐसा लगता है कि मानवता एक कठोर जागृति की ओर बढ़ रही है।

सामाजिक व्यवस्था

चार्ल्स टेलर एक प्रसिद्ध सामाजिक दार्शनिक हैं जो समाज में कई मुद्दों से निपटते हैं। एक अन्य लेखक चार्ल्स ह्यूग स्मिथ हैं।
आप amazon.com पर किंडल बुक्स के तहत नाम पा सकते हैं।

फिलॉसफी: पैनप्सिसिज्म एंड इकोथोलॉजी

इकोथियोलॉजिस्ट माइकल डाउड ने पारिस्थितिक विचारों, जलवायु परिवर्तन और ओवरशूट पर कई साक्षात्कार आयोजित किए हैं।
एक दर्शन के रूप में Panpsychism स्पष्ट रूप से इस दुनिया में जमीन हासिल कर रहा है।

मनोवैज्ञानिक परामर्श और ऑनलाइन समूह

जलवायु की स्थिति और समाज के संभावित पतन के कारण निराश लोगों के लिए, जेम बेंडेल और उनका मंच कुछ सांत्वना दे सकता है।

अध्याय 5

मृत्यु के बाद हमारे साथ क्या होता है?
(थियोसोफिकल दृष्टिकोण के अनुसार मृत्यु)
लेखक: मार्टिन यूसर, 2001,2021
सारांश: अगस्त 2022

1
परिचय

इस लेख का विषय मृत्यु और मृत्यु प्रक्रिया है। जीवन और मृत्यु के बारे में अमूल्य जानकारी थियोसोफिकल स्रोतों से मिलती है। यह इंगित किया गया है कि प्रदान की गई जानकारी की जांच कैसे करें।
यह समीक्षा इस तथ्य पर आधारित है कि मृत्यु और नींद समान प्रक्रियाएं हैं। आप इसके बारे में 7 में अधिक पढ़ सकते हैं। इस लेख में सामान्य सूत्र मनुष्य की चेतना की धारा के रूप में अवधारणा है।
इस विषय पर विस्तृत चर्चा के लिए, मैं पाठक को अपनी पुस्तक, रेजोनेंस विद द सेल्फ का संदर्भ देता हूं, जो कि आर्काइव.ओआरजी (https://archive.org/search.php?query=Martin+Euser) पर निःशुल्क उपलब्ध है।

2
मृत्यु के बारे में पारंपरिक विचार हमें इसके बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं

हमारी पाश्चात्य संस्कृति में मृत्यु आज भी वर्जित है। हम में से अधिकांश अपनी मृत्यु के बारे में सोचना पसंद नहीं करते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि वे केवल एक बार जीते हैं और मृत्यु के बाद या तो अनन्त स्वर्ग या नरक है या कुछ भी नहीं है।
दोनों दृष्टिकोणों में "सस्ते समाधान" के बारे में कुछ है। अगर ऐसी कोई स्थायी संभावना है, तो हमें अब इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। दार्शनिक रूप से, स्वर्ग और नरक की स्थिर अवस्थाओं की धारणा कुछ बचकानी है। प्रकृति हमें दिखाती है कि सब कुछ निरंतर गति में है, परिवर्तनशील है। परिवर्तन जीवन के सार का हिस्सा है। प्लेटो हमें अपने काम फादो में विचार के लिए भोजन देता है। इस संवाद में सुकरात का तर्क है कि प्रकृति में हर जगह हम ध्रुवीय विपरीत के खेल का निरीक्षण कर सकते हैं: दिन और रात, सोना और जागना, जीवन और मृत्यु, आदि। इन युग्मों के विपरीत, उनका कहना है कि हर चीज में बनने की क्षमता है विपरीत स्थिति डालें।
विपरीत के प्रत्येक जोड़े में संक्रमणकालीन रूप होते हैं, मध्यवर्ती रूपों में उदा। बी संक्रमणकालीन रूपों के रूप में अच्छा और बुरा: बेहतर हो रहा है और खराब हो रहा है। दिन से गोधूलि के माध्यम से रात निकलती है, रात से गोधूलि के माध्यम से दिन का उदय होता है शाम।
नींद जाग्रत के बाद आती है और जाग्रत नींद के बाद। इनमें से प्रत्येक विपरीत जोड़े में संक्रमणकालीन रूप मिलते हैं। कोई आसानी से समझ सकता है कि ये विपरीत और मध्यवर्ती रूप हमेशा किसी चीज़ की अवस्था होते हैं और उस चीज़ का प्रकट होना इन विपरीत या मध्यवर्ती रूपों में से एक है।
यदि विचार की यह ट्रेन सभी युग्मों पर लागू होती है, तो प्रश्न उठता है कि क्या यह जीवन और मृत्यु पर भी लागू होता है। यदि ये भी विपरीत जोड़ी बनाते हैं, तो यह तर्कसंगत होगा कि जीवन और मृत्यु के संक्रमणकालीन रूप हैं।
मृत्यु निश्चित रूप से प्रकट जीवन का विरोध करती है। आओ हम इसे नज़दीक से देखें। एक जन्म से ही अस्तित्व में आता है। व्यक्ति मरकर मृत्यु की अवस्था में प्रवेश करता है। कोई केवल इसलिए

मर सकता है क्योंकि वह जीवित है। इसी प्रकार मृत्यु के द्वारा ही मनुष्य जीवन में आ सकता है। निष्कर्ष: जीवन और मृत्यु एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं और संक्रमणकालीन अवस्थाओं के माध्यम से एक दूसरे में विलीन हो जाते हैं। एक बहुत ही प्रशंसनीय तर्क! प्रकृति की प्रक्रियाओं को देखने के लिए केवल यह देखना होगा कि अनंत चक्र हैं: सूर्य के चारों ओर घूमने वाले ग्रह, एक पौधे में उगने वाले बीज, और मनुष्यों में बायोरिदम। सवाल यह है कि इन बदलते राज्यों से क्या होता है? उत्तर है: जागरूकता!
मनुष्य देहधारी चेतना है, चिंतन करने, सोचने की क्षमता से संपन्न है। व्यक्तित्व (व्यक्तित्व का अर्थ है: मुखौटा) पृथ्वी के विमानों पर खुद को व्यक्त करने के लिए मनुष्य के आंतरिक कोर, उच्च स्व या मोनाड द्वारा निर्मित एक अस्थायी वाहन है। यदि हम एक विकसित, सभ्य इंसान की बात करें तो विचार के महान पहलुओं को पृथ्वी पर व्यक्त किया जा सकता है और होना चाहिए। यह विकास प्रक्रिया वास्तविकता के लिए पुनर्जन्म, पुन: अवतार के सिद्धांत का परीक्षण करने का अवसर भी प्रदान करती है। देखें 7.

3.
मृत्यु प्रक्रियाओं का ज्ञान क्यों उपयोगी है।

पिछले खंड से निष्कर्ष यह है कि हमारे समाज में मृत्यु की प्रक्रियाओं के वास्तविक ज्ञान का अभाव है। वास्तव में, हम स्वयं जीवन के बारे में बहुत कम जानते हैं! हालांकि, कुछ धर्मों में हम मरते समय क्या होता है इसका संदर्भ पा सकते हैं (देखें 6)। प्राचीन ज्ञान के बाद से एच.पी. ब्लावात्स्की "थियोसोफी" नाम के तहत मृत्यु और उसके बाद के बारे में जानकारी का खजाना है। इसका मतलब यह नहीं है कि थियोसोफी इसके बारे में जो कहता है, उस पर आंख मूंदकर विश्वास कर लें। इसके विपरीत, हमें प्रकृति में प्रक्रियाओं और ब्रह्मांड की संरचना की स्वतंत्र रूप से जांच करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह कैसे करना है इसका वर्णन 7 में किया गया है।

जिज्ञासा को संतुष्ट करने के अलावा, मृत्यु की प्रक्रियाओं का ज्ञान उपयोगी है क्योंकि इस तरह का ज्ञान जीवन को व्यापक अर्थों में चिंतित करता है और इसे व्यापक कश्मीर में रखता है।संदर्भ।
वास्तव में, जीवन और मृत्यु प्रकृति में एक आवर्ती चक्र के दो चरण हैं: जीवन के बाहरी स्तरों पर चेतना के प्रकट होने का चक्र, इसके बाद चेतना को आंतरिक स्तरों पर वापस ले जाना (उस पर और बाद में)। मनुष्य के लिए इस चक्र में शामिल हैं: जन्म, पृथ्वी पर जीवन, मृत्यु, आध्यात्मिक स्तरों पर जीवन, पुनर्जन्म (पुनर्जन्म)। यदि हम पुनर्जन्म के दृष्टिकोण से शुरू करें तो स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि हम अगले जन्म में कौन, क्या और कैसे होंगे। हम किन परिस्थितियों में पैदा हुए हैं?
ये प्रश्न दिलचस्प लग सकते हैं-और वे कुछ हद तक हैं-लेकिन मुख्य प्रश्न यह है, "अगले जीवन में हमारे चरित्र के बारे में क्या?"
यह प्रश्न इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देने में चरित्र प्रमुख कारक है। उदाहरण के लिए, जिस परिवार से हम आकर्षित होते हैं, वह ऊर्जावान रूप से हमसे मेल खाएगा। इस संदर्भ में चरित्र को एक मनो-चुंबकीय क्षेत्र, मानव आत्मा के गुणों के रूप में देखा जा सकता है। विचार की इस ट्रेन के और विस्तार के लिए, मैं आपको इस पुस्तक के दूसरे अध्याय का उल्लेख करता हूं, जिसमें मैंने चरित्र और उसके शोधन या श्रेष्ठता के प्रश्न से निपटने का प्रयास किया है। आंतरिक आध्यात्मिक संकायों के विकास पर विस्तार से चर्चा की गई है।
यहाँ बात यह है कि हम अभी तय करते हैं कि अगले जन्म में हमारा चरित्र कैसा होगा!
तो, अनिवार्य रूप से, हमारा चरित्र (अनिवार्य रूप से) अब तक हमने जो बनाया है उससे बहुत भिन्न नहीं हो सकता है। इसलिए अब हमें अपने आप पर काम करने और अपने भीतर आध्यात्मिक भावना विकसित करने की जरूरत है जो हमारे दिमाग में अधिक स्पष्टता और अंतर्दृष्टि के लिए एक उद्घाटन पैदा करे। ऐसा करने का एकमात्र तरीका निःस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिक मामलों पर नियमित ध्यान है। अभी में जियो, अब शाश्वत, स्वयं बनो और जो कुछ भी तुम्हारे पास आता है वह करो। अपने काम के लिए बहुत अधिक परिणाम या पुरस्कार की अपेक्षा न करें। नहीं तो

आपका मन उम्मीदों में (मोह का एक रूप!)
यह हमारे जीवन और चेतना को एक समग्र चरित्र या गुण प्रदान करता है। हम एक-दूसरे से और संपूर्ण (हर चीज का स्रोत) से अधिक जुड़ाव महसूस करेंगे। प्रकृति और संस्कृति में सुंदरता के लिए हमारी प्रशंसा बढ़ेगी।
संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि मृत्यु प्रक्रियाओं का ज्ञान वास्तव में व्यापक अर्थों में जीवन प्रक्रियाओं का ज्ञान है और इसलिए दैनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे जीवन की समझ बढ़ती है, वैसे-वैसे यहां चर्चा किए गए मुद्दों (धारा 7) की जांच करने की संभावना भी बढ़ जाती है।

4
आदमी: चेतना की एक धारा
मनुष्य का समग्र संविधान

मेरी पिछली किताब, रेजोनेंस विद द सेल्फ में, मनुष्य के समग्र संविधान से संबंधित एक योजना है। यह तथाकथित "अंडा योजना" है जिसे प्रोफेसर जी डी पुरुकर द्वारा मनुष्य और ब्रह्मांड के बीच संबंध को स्पष्ट करने के लिए डिजाइन किया गया था। कई तकनीकी शब्दों के कारण मैं यहां इससे परहेज करता हूं। यह अध्याय मूल अंश का संक्षिप्त रूप है।

5 मृत्यु एक क्रमिक प्रक्रिया है

जीवन के अंत में क्या होता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हमें पहले इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि पृथ्वी पर जीवन के प्रति हमारा आकर्षण का एक निश्चित स्तर है। हम इस दुनिया के मंच पर एक भूमिका निभाना चाहते हैं।
मनुष्य में चेतना की धारा प्रकट होती है क्योंकि उस धारा के भीतर एक निश्चित गुण होता है जो जीवन के बाहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित होता है। यदि आप ईमानदार हैं, तो आप इस तथ्य को पहचान लेंगे। जीवन के दौरान, यह आकर्षण कुछ हद तक कम हो जाता है। हमने कई चीजों का अनुभव किया है और हम जहां भी देखते हैं पैटर्न की पुनरावृत्ति देखते हैं। चेतना की धारा में आंतरिक स्तरों और अवस्थाओं के प्रति आकर्षण बढ़ता है। धीरे-धीरे हम बाहरी जीवन में रुचि खो देते हैं। कभी-कभी "हम अब काफी नहीं हैं"।
चेतना की धारा ऊपर और नीचे चमकती है, इसलिए बोलने के लिए, आंतरिक और बाहरी क्षेत्रों या चेतना की अवस्थाओं के बीच। व्यक्तिगत, मानवीय आत्मा के लिए महत्वपूर्ण मोड़ आ गया है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण कम होने की यह अवधि आमतौर पर कई महीनों तक रहती है और हर व्यक्ति की लंबाई में भिन्न होती है।

जैसे-जैसे शरीर, बाहरी वाहन, घिसता जाता है, यह अंततः टूट जाएगा। चेतना का प्रवाह बाधित होता है। इसकी तुलना एक लाइटबल्ब से करें। एक साधारण सादृश्य के रूप में, कोई कह सकता है कि काम पर एक समान प्रक्रिया है। शरीर विलीन हो जाएगा।
यह हमें बाद के जीवन पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

6 थियोसोफी के अनुसार मृत्यु के बाद की अवस्थाएं

प्रक्रियाओं के बारे में निम्नलिखित जानकारी n मृत्यु के बाद कुछ हद तक स्केच होगा। मैं इच्छुक पाठक को डॉ. Gottfried de Purucker (पागलपन का स्रोत [गूढ़ता]) जहां अधिक विवरण पाया जा सकता है। एक बात मैं और आगे नहीं जाऊँगा, वह है अदृश्य लोकों में आत्मिक मार्गदर्शकों की उपस्थिति। ये सूक्ष्म लोकों में खोए और खोए हुए लोगों की मदद करते हैं, खासकर शारीरिक मृत्यु के ठीक बाद। हो सके तो वे उन लोगों की भी मदद करते हैं जो अभी भी पृथ्वी पर रहते हैं।
ब्रेन डेथ होने से पहले के अंतिम घंटों को "पैनोरमिक विजन" के रूप में जाना जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जीवन को पीछे मुड़कर देखना शामिल है। यह पूर्वव्यापी जीवन की सभी घटनाओं की एक त्वरित गति चित्र की तरह है जो उन घटनाओं के पीछे के कारणों के प्रकाश में देखी जाती है। मनुष्य तब देखता है कि दूसरों ने उसके कार्यों का अनुभव कैसे किया है।
हम आमतौर पर किसी घटना के कारणों को समझने में बहुत अच्छे नहीं होते हैं, लेकिन जीवन और मृत्यु के बीच इस संक्रमणकालीन अवधि के दौरान चेतना की बदली हुई स्थिति इन कारणों को देखना संभव बनाती है।
मनुष्य जो कुछ हुआ है उसका न्याय देखता है और कर्म के प्रकाश में या कारण और प्रभाव के बीच के संबंध में जीवन को समाप्त होते हुए देखने में सक्षम है। वैसे, सामूहिक कर्म पर मेरी टिप्पणी नीचे देखें। मनोरम दृश्य को सीखने की प्रक्रिया या व्यक्तिगत मानव के लिए एक निर्देश के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

शारीरिक मृत्यु के बाद, निम्नलिखित स्थिति उत्पन्न होती है:

1. एक भौतिक शरीर है जो विघटित हो जाएगा। शरीर से जुड़ा ऊर्जा क्षेत्र या आभा भी बिखर जाएगा। आभा में कई परतें होती हैं।

2. व्यक्तिगत चेतना अस्थायी रूप से हम विन्यास में रहती है
एक "वांछित शरीर"। याद रखें कि सामान्य तौर पर व्यक्तित्व की विशेषता इच्छाधारी सोच से होती है। इसमें ऐसी ताकतें और ऊर्जाएं शामिल हैं जो खोई नहीं हैं। हालांकि, उन्हें अन्य रूपों में बदला जा सकता है।
भौतिक मृत्यु के बाद इच्छा की शक्ति मनुष्य को कुछ समय के लिए एक निश्चित रूप में रखती है। मृतक खुद को सांसारिक इच्छाओं से मुक्त करने की कोशिश करता है जो अभी भी उसे दुनिया से बांधती है।

जिस स्थान पर यह रूप स्थित है, वह कैथोलिकों के लिए शुद्धिकरण के रूप में जाना जाता है। यूनानियों ने इसे पाताल लोक कहा, प्राचीन मिस्रवासी एमेंटी।
मिस्र की किताब ऑफ द डेड देखें, जहां मृतक के दिल को तौला जाता है। तिब्बती लोग इसे बार्डो कहते हैं।

इस अवस्था की अवधि व्यक्ति द्वारा स्वयं अपनी वर्तमान जीवन शैली के माध्यम से निर्धारित की जाती है। यदि कोई आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करता है और समुदाय की सेवा करता है, तो मृतक को बार्डो में एक संक्षिप्त प्रवास होगा। यह कुछ दिनों से लेकर कुछ हफ्तों तक हो सकता है। यदि आप हैसियत पर बहुत ध्यान देते हैं और बहुत सारी स्वार्थी महत्वाकांक्षाएँ रखते हैं, तो आप उस अवस्था में अधिक समय तक रहेंगे। इसमें कुछ वर्षों से लेकर अधिक समय तक कहीं भी लग सकता है।
जब मृतक अपनी मूल इच्छाओं से मुक्त हो जाता है, तो दूसरी मृत्यु होती है। इसका मतलब यह है कि सांसारिक जीवन के दौरान विकसित होने वाली आकांक्षाएं और सभी महान गुण आत्मा के क्षेत्र, उच्च स्व में समाहित हो जाते हैं।
यह व्यक्तित्व की इस स्थिति के अंत का प्रतीक है। या यों कहें, ये आध्यात्मिक और बौद्धिक गुण और महान आकांक्षाएं ही वही चीजें हैं जो व्यक्तिगत व्यक्ति के पास रहती हैं। कभी-कभी इन गुणों और ऊर्जाओं को "आध्यात्मिक सुगंध" कहा जाता है और यही वह है जो चेतना की एक नई अवस्था में प्रवेश करती है।

यह एक उदात्त, स्वप्न जैसी अवस्था है जिसमें पृथ्वी जीवन के दौरान व्यक्तित्व द्वारा पोषित सभी आदर्शों की आध्यात्मिक पूर्ति होती है। [4] इस अवस्था को पृथ्वी पर अपात्र कष्टों के लिए एक प्रकार के पुरस्कार के रूप में भी देखा जा सकता है। यह अवांछनीय पीड़ा मानवता के सामूहिक कार्यों और विचारों का परिणाम है। क्योंकि मनुष्य एक व्यापक समग्रता का हिस्सा है, वह अनिवार्य रूप से सभी दुखों, हिंसा और मूर्खता से बचने में सक्षम नहीं होगा। दूसरी ओर, कभी-कभी लोग खुद इस दुनिया के दुख में योगदान करते हैं।

[4] बुद्ध जैसे उच्च विकसित प्राणियों में, चेतना निर्वाण की स्थिति में है जो इन सापेक्ष भ्रमों से परे है।

व्यक्तित्व का जो अवशेष है वह अब स्वप्न में आंतरिक आत्मा या उच्चतर स्व के गर्भ में सोता है। यह नींद कई सदियों तक चल सकती है।
अगले जीवन में, नया मानव आम तौर पर थोड़े बेहतर चरित्र के साथ शुरू होता है।

किसी को आश्चर्य हो सकता है कि दूसरी मृत्यु के बाद इच्छा की शक्तियों का क्या होता है। ये बल सूक्ष्म मैट्रिक्स (अध्याय 2 देखें) में बीज के रूप में रहते हैं जो कि फिर से जन्म लेने वाले मानव के अगले जीवन में पुन: सक्रिय हो जाते हैं।
आप देखते हैं कि यह इस दिन के लिए कितना महत्वपूर्ण हैजानने के लिए जी. आप अपने अगले जीवन के लिए अभी बीज बोएं! आप अपने अगले जीवन के चरित्र को इस बात से निर्धारित करते हैं कि आप अभी क्या करते हैं, अब आप कैसे रहते हैं। बाकी के लिए, यह चरित्र पिछले जन्मों से निर्धारित होता है। कितना जायज है यह सब!
हम अपने आप को जो बनाते हैं उससे अलग कैसे हो सकते हैं? और कोई रास्ता नहीं है।
बेशक सामूहिक कर्म भी हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन यह कभी भी मन की शक्तियों का उपयोग न करने का बहाना नहीं होना चाहिए। साथ ही, इस तथ्य से दूसरों के भाग्य के प्रति उदासीनता नहीं होनी चाहिए। इस दुनिया के सभी प्राचीन लोग पुनर्जन्म की वास्तविकता में विश्वास करते थे और बहुसंख्यक अभी भी करते हैं। बौद्ध, हिंदू, ड्रइड्स, सेल्ट्स, ब्रिटन, गॉल, प्लेटो, पाइथागोरस और कई नोस्टिक ईसाई कुछ ही ऐसे लोग और व्यक्ति हैं, जिन्होंने बाहर जाकर पुनर्जन्म को अपनाया [5]।

[5] इंका और माया सभ्यताएं, प्राचीन मिस्रवासी, स्टोइक्स, रोमन कवि वर्जिल, ल्यूक्रेटियस और होरेस सभी पुनर्जन्म के विचार से शुरू हुए। सूची को और भी आगे बढ़ाया जा सकता है। मैं यहूदी ज़ोहर (एक प्रसिद्ध कबालीवादी ग्रंथ) और ईसाई बाइबिल का भी उल्लेख करता हूं। उत्तरार्द्ध में पुनर्जन्म के सिद्धांत के कुछ निहित संदर्भ शामिल हैं। जॉन के सुसमाचार (9, पद 1) और मत्ती 11, पद 14 और 15 को देखें। चर्च के प्रसिद्ध पिता ओरिजन इस शिक्षा से बहुत परिचित थे। यूसेबियस और अन्य चर्च फादर्स ने यह सुनिश्चित करने में मदद की कि वर्तमान सिद्धांत में यीशु नासरी की मूल शिक्षाओं के बहुत कम खुले तत्व शामिल हैं। इसने पश्चिम को जीवन की गहन पृष्ठभूमि से लगभग 1500 वर्षों तक पूर्ण अज्ञानता में ला दिया है।

पुनर्जन्म हमारे समाज की खोई हुई चाबी है। अगर इस कुंजी को ठीक से समझा और लागू किया जाए, तो कर्म की उचित समझ के साथ, हमारा समाज मौलिक रूप से बदल जाएगा। यह हमारी बिंदास दुनिया में व्यवस्था ला सकता है, जहां स्व-हित (राज्यों सहित) और अल्पकालिक लाभ सभी के दीर्घकालिक हितों पर पूर्वता लेते हैं।
पुनर्जन्म के बारे में एक सवाल जो है "हम पिछले जन्मों को याद क्यों नहीं करते?" यहाँ संक्षेप में उत्तर दिया जा सकता है। बात यह है कि हमारे पास एक नए जीवन में एक नया मस्तिष्क है। इस नए मस्तिष्क में न तो पिछले जन्मों की यादें हैं और न ही पिछले जन्मों की।

7 इस जानकारी की जांच कैसे करें?

एक वाजिब सवाल है, "आप यह सब कैसे जानते हैं?" या "आपको कैसे पता चलेगा कि यह जानकारी सही है?"। यह सिर्फ किताबों से है या शिक्षकों से?
निश्चित रूप से मानवता के महान शिक्षकों द्वारा हमें जानकारी का खजाना दिया गया है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं है। कोई भी अपने लिए इन शिक्षाओं के मूल्य और सच्चाई का अनुभव कर सकता है। आखिर तुम चेतना की धारा हो। आप चेतना के केंद्र को विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत से अधिक आध्यात्मिक में स्थानांतरित कर सकते हैं। आप मन का उपयोग और निर्देशन कर सकते हैं ताकि यह आंतरिक प्रकाश के लिए सुलभ हो जाए, जिसे समझ भी कहा जाता है।
गॉटफ्रीड डी पुरुकर ने अपने काम "पागलपन का स्रोत [गूढ़ता]" में इसका एक महत्वपूर्ण संकेत दिया है। वह कहता है:
"ध्यान आपके दिमाग में एक विचार रखता है और जागरूकता को उस विचार के साथ आनंददायक और आसान तरीके से काम करने की इजाजत देता है।"
"ध्यान करने का सही तरीका यह है कि एक नेक विचार, एक सुंदर विचार, एक उपयोगी विचार को संजोकर अपने मन में धारण करें ताकि यह एक आनंद बन जाए। उस विचार को प्यार करो। उसे ध्यान में रखें। उसे वहाँ रहने दो "मन को विचार करने दो जैसे मुर्गी अपने अंडों और चूजों पर विचार करती है। शारीरिक या व्यक्तिगत मानसिक इच्छा का उपयोग करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप सफल नहीं होंगे, क्योंकि इच्छाशक्ति के इस तरह के अभ्यास के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। "और दबाव डालता है। यह ध्यान करने का सही तरीका नहीं है। एक स्वच्छ विचार की सराहना करें और इसे ध्यान में रखें, इसे ध्यान में रखें [गतिशील रूप से]; वह ध्यान है और जब कोई ज्ञान योग के इस सरल नियम का अभ्यास करता है [6] तब आप क्या यह स्वाभाविक बात है कुछ समय बाद यह आपकी दैनिक जागरूकता का हिस्सा बन जाता है अक्सर आपको शायद ही एहसास होगा कि आप यह सोच रहे हैं कि यह हमेशा आपके दिमाग के पीछे रहेगा यह ध्यान है और एकाग्रता बहुत आवधिक है w यदि आपके पास समय है उस विचार को अधिक स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से चेतना में लाने के लिए, और अपना सारा ध्यान इच्छा से नहीं, बल्कि सहजता से देने के लिए।

[6] विकिपीडिया से: ज्ञान योग (उच्चारण dznjana joga) योग की मुख्य शाखाओं में से एक है और इसे प्राचीन उपनिषदों के रूप में वर्णित किया गया है, वेदों के दार्शनिक भाग जो हिंदू धर्म का लिखित आधार बनाते हैं। ज्ञान योग का सबसे अच्छा अनुवाद "आत्म-ज्ञान के माध्यम से प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि का मार्ग" के रूप में किया जाता है। यह मार्ग मुख्य रूप से प्रकृति में दार्शनिक है (इसकी तुलना ज्ञान के संबंध में ग्नोसिस शब्द से करें), लेकिन पश्चिम में दर्शन द्वारा आमतौर पर जो समझा जाता है, उसके विपरीत, यह सट्टा नहीं बल्कि प्रयोगात्मक है।
ज्ञान योग किसी भी धर्म, विश्वास या सिद्धांत से आध्यात्मिक-दार्शनिक आधार पर सुख और दुख, सफलता और असफलता, जन्म और मृत्यु, अच्छाई और बुराई आदि की दुनिया से मुक्ति चाहता है।

डॉ. डी पुरुकर आगे बताते हैं कि इस प्रकार का ध्यान योग का मूल रहस्य है-मन की अवर्णनीय शांति, ज्ञान और भीतर ईश्वर के प्रेम के साथ एकता। यह बहुत मूल्यवान सलाह है!

साथ ही भाईचारे या एकता के विचार को व्यवहार में लाना होगा। केवल इस तरह से किसी की अपनी चेतना के गुणों को शब्द के अच्छे अर्थों में बदला जा सकता है। यह एक दूसरे के लिए "अच्छा" होने के बारे में इतना नहीं है। वे संप्रदायों में भी ऐसा करते हैं। नहीं, इसमें भी सब कुछ है एक-दूसरे की विशिष्टता का सम्मान करें और एक-दूसरे से सीखें। समग्र की भलाई के लिए मिलकर काम करना इस अभ्यास का एक अनिवार्य हिस्सा है!
एक दूसरे के सार के साथ पहचान कर एक दूसरे से आवश्यक कुछ सीख सकता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को दूसरे व्यक्ति की स्थिति में रखकर, उनके साथ प्रतिध्वनि या सामंजस्य स्थापित करके कर

सकता है। यह सब सहानुभूति कौशल के बारे में समझ का उपयोग करने और विकसित करने का मामला है। इसलिए दूसरों के साथ हमारा संबंध आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया में गहराई से शामिल है।
हालाँकि आध्यात्मिक विकास की प्रक्रियाएँ कभी-कभी दर्दनाक हो सकती हैं, क्योंकि हम अपने भीतर और अपने आसपास के लोगों में अत्यधिक प्रतिरोध का सामना कर सकते हैं, आध्यात्मिक पथ भी बहुत सुंदर है! लोग दूसरों के साथ अपने संबंधों में अधिक गहराई, गर्मजोशी और मानवता का अनुभव करेंगे। बेशक आप आंतरिक संघर्षों और अशांति और शायद वातावरण में होने वाले झगड़ों को भी जानते होंगे। वास्तव में सभी मूल्यवान चीजों पर विजय प्राप्त की जानी चाहिए!

उपरोक्त की एक आलोचनात्मक परीक्षा निश्चित रूप से आवश्यक है। ऐसे मामलों (गूढ़ शिक्षण) में शिक्षाओं की स्वतंत्र रूप से जाँच करने के लिए व्यक्ति को हमेशा अपने आप पर वापस फेंक दिया जाता है। यह सच है कि सभी महान शिक्षणवह मोटे तौर पर एक ही बात सिखा रहा है, और इससे हमें वह आत्मविश्वास मिल सकता है जिसकी हमें जरूरत है। एक ध्वनि दर्शन, जैसे कि एसोटेरिक टीचिंग [7] में निहित है, सुसंगत, ध्वनि है, और इसमें उपचार की शिक्षाएँ शामिल हैं, जिसके माध्यम से व्यक्ति धीरे-धीरे अपने समग्र संविधान और "बाहरी दुनिया" के साथ इसके संबंध के बारे में जागरूक हो जाता है।
प्राचीन ज्ञान परंपरा हमें आध्यात्मिक पथ पर संकेत देती है। इस रास्ते पर चलने का विकल्प सभी के लिए खुला है। साधक के उद्देश्य से निर्धारित पथ।

[7] जैसा कि पहले ही एक फुटनोट में संकेत दिया गया है, मैं मुख्य रूप से, लेकिन विशेष रूप से नहीं, प्वाइंट लोमा थियोसोफिकल परंपरा के शिक्षकों के काम को पुन: पेश करता हूं, जैसे जी डी पुरुकर और डी.जे.पी. कोक

ऑनलाइन लिंक

नोट 1: आपके अपने देश में एक थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस भी हो सकता है।

नोट 2: निम्नलिखित पुस्तकों के शीर्षक संभवतः स्वचालित सॉफ़्टवेयर द्वारा आपकी भाषा में परिवर्तित कर दिए गए हैं। अंग्रेजी संस्करण में आपको शीर्षक का सही नाम मिलेगा।

http://www.theosophischer-verlag.de/online/01.html ऑनलाइन बुकिंग

थियोसोफिकल सोसायटी पासाडेना/द हेग। (डच) ऑनलाइन टेक्स्ट और प्रकाशन देखें!
(https://www.theosophy.net/)
अंग्रेजी में कई पुस्तकें ऑनलाइन उपलब्ध हैं:
थियोसोफिकल यूनिवर्सिटी प्रेस
(ट्यूप ऑनलाइन: https://www.theosociety.org/pasadena/ts/tup-onl.htm)
भोगवाद का स्रोत, पुरकर, जी. डी
नोट: भोगवाद का शाब्दिक अर्थ है, जो साधारण इन्द्रियों से छिपा हो। यहाँ भोगवाद का अर्थ गूढ़वाद या गूढ़तावाद का पर्याय है।

ब्लावात्स्की हाउस द हेग (डच): http://webshop.stichtingisis.org/index.php?o=language&p=NL
थिंकिंग डिफरेंट जैसे दिलचस्प पाठ्यक्रम प्रदान करता है!
थियोसॉफी की कुंजी, ब्लावात्स्की, एच.पी.
थियोसोफिकल फ्रैगमेंट्स, कोक, डी.जे.पी. 9 टुकड़ों का सेट।
ओशन ऑफ़ थियोसोफी, जज, W.Q.

गूढ़ दर्शन की नींव, पुरकर, जी। डी।
मैन इन इवोल्यूशन, पुरुकर, जी. डी.

विटवान। प्राचीन ज्ञान का आधुनिक सूत्रीकरण। स्कूल ऑफ नेचुरल ऑर्डर एसएनओ (अंग्रेज़ी)
www.sno.org
सहित: मानव मनोविज्ञान; आत्मज्ञान के मार्ग में प्रवेश करें; बाइबिल की नोस्टिक व्याख्या।

https://archive.org/search.php?query=Martin+Euser&sin= पर मेरी अपनी पुस्तकें
1. रेजोनेंस विद द सेल्फ (अंग्रेजी एपब संस्करण); पीडीएफ और किंडल प्रारूप में भी।
2. मानव मन के रहस्य (आध्यात्मिकता और विज्ञान सेतु)
3. ट्रान्सेंडेंस को फिर से खोजना। मानव मानस को सम्मोहित करना और संबंधों में सामंजस्य बिठाना

द-प्रैक्टिकल-ग्नोस्टिक-टीचिंग-बाय-राल्फ-एम-डी-बिट-विटवान
(https://archive.org/details/the-practical-gnostic-teachings-of-ralph-m-de-bit-vitvan)

ग्रन्थसूची

एल्विन बॉयड कुह्न।
थियोसोफिकल लेखक जिन्होंने ईसाई धर्म आदि (अंग्रेजी भाषा) पर विस्तार से लिखा है। मेरे संग्रह में पुस्तकें देखें।
गेराल्ड मैसी।
लेखक/शोधकर्ता जिन्होंने ईसाई धर्म, मिस्र, आदि (अंग्रेजी भाषा) पर व्यापक रूप से लिखा है। मेरे संग्रह में HTML फ़ाइल देखें।
एलन बैन। कबला की कुंजी (अंग्रेजी भाषा)। मेरे संग्रह में पीडीएफ फाइल देखें।

छठा अध्याय

रॉबर्टो असगियोली मनोसंश्लेषण और इच्छा के कार्य पर
मार्टिन यूसर द्वारा
अगस्त 2020

परिचय

इस लेख में, मेरे पुराने ब्लॉग पोस्ट से संपादित, मैं संक्षेप में और अनौपचारिक रूप से इच्छा से वास्तविकता तक की आकर्षक यात्रा में जाता हूं। काफी कुछ लेखक हैं जिन्होंने इस बारे में लिखा और व्याख्यान दिया है, खासकर न्यू एज (लॉ ऑफ अट्रैक्शन हाइप) में। हालांकि, मैं अपनी सामग्री अन्य स्रोतों से प्राप्त करता हूं: रॉबर्टो असगियोली, इतालवी मनोचिकित्सक जिन्होंने मनोसंश्लेषण की नींव रखी, और बारहमासी परंपरा से भी। यदि पर्याप्त लोग इस मार्ग का अनुसरण करते हैं तो यह किसी के टूटे हुए स्वयं और सामान्य रूप से दुनिया को ठीक करने की नींव रखता है। मैं इस विषय पर अपनी समापन टिप्पणियों में कुछ और कहूंगा।
मुझे विशेष रूप से असगियोली के काम "विल ऑफ एक्ट" में दिलचस्पी है, जिसमें उन्होंने सक्रिय इच्छा की प्रक्रिया के चरणों या चरणों का वर्णन किया है।
ध्यान दें कि मैं आकर्षण के नियम में नहीं जाऊँगा क्योंकि यह प्रकृति में बहुत अधिक आत्म-केंद्रित है: यह व्यक्तिगत, अक्सर भौतिकवादी, लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में है।
ठीक वही चीजें जो हमारे आवास को नष्ट कर देती हैं। ऐसा करने में, यह प्रश्न अक्सर भुला दिया जाता है: क्या मेरी इच्छाएं समग्र रूप से समाज के लिए अच्छी हैं? क्या वे दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में मदद करते हैं (स्थायी रूप से, कम से कम कहने के लिए) या क्या मैं सिर्फ कल्पनाओं और इच्छापूर्ण सोच में लिप्त हूं? यह उल्लेख नहीं करने के लिए कि कुछ इच्छाएँ पीड़ित के लिए बहुत स्वस्थ नहीं हो सकती हैं या मानस की गहरी परतों के साथ संरेखित नहीं हो सकती हैं।
गहरे स्तर पर, कोई कह सकता है कि मन की पूर्णता और मनोसंश्लेषण का संबंध आपकी क्षमताओं को व्यक्त करने और अधिक से अधिक अच्छे के लिए अपनी क्षमता को महसूस करने की एक प्राकृतिक प्रक्रिया से है। मानस / स्वयं के तत्वों का एकीकरण शामिल है। विल शामिल बलों में से एक है।

इच्छा के कार्य के चरण

विल एक बहुत ही रोचक विषय है। हम में से प्रत्येक के पास इच्छा के कार्य के साथ कुछ अनुभव है और इस क्षेत्र में प्रयोग कर सकते हैं।

सक्रिय इच्छा की प्रक्रिया बहुत जटिल है। रॉबर्टो असगियोली ने अपनी पुस्तक एक्ट ऑफ विल में इसका वर्णन किया है। मैं इसे यहां विस्तार से कवर नहीं कर सकता।
हालांकि, मैं वाष्पशील प्रक्रिया के चरणों या चरणों का उल्लेख करूंगा।
ध्यान दें कि यह प्रक्रिया कुछ तरल है, क्योंकि चरण या चरण थोड़ा ओवरलैप हो सकते हैं और धीरे-धीरे एक दूसरे में मिल सकते हैं। चरणों के बीच आगे और पीछे जाने वाले कुछ लूप होंगे। हालांकि, निर्णय बिंदु आमतौर पर समय पर एक स्पष्ट बिंदु होता है।

असगियोली की किताब की मेरी डच कॉपी से उल्टा अनुवाद, हमारे पास है:

1. प्रशंसा, प्रेरणा और इरादे के आधार पर लक्ष्य या उद्देश्य।
2. सलाह।
3. चुनाव और निर्णय।

4. सुदृढीकरण: वसीयत का आदेश या फिएट। [फिएट: "इसे होने दो"]
5. किसी कार्यक्रम की योजना बनाना और उसका विकास करना।
6. नियंत्रण निष्पादन।

यह वसीयत की प्रक्रिया अपने पूर्ण और आदर्श रूप में है।
असगियोली के विषय के उपचार पर आधारित नोट्स:

1. एक लक्ष्य हासिल किया जाना चाहिए। एक लक्ष्य या लक्ष्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना चाहिए
समझना। (कुछ लेखक इच्छा या इच्छा को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में उद्धृत करते हैं। मैं इसे कुछ सार्थक हासिल करने की गहराई से महसूस की गई आवश्यकता के रूप में व्याख्या करता हूं। सरल आवश्यकताएं प्रकृति में अधिक जैविक हैं और यहां चर्चा नहीं की गई है।)
इसमें कल्पना की शक्ति (विचारों का निर्माण, दृष्टि, एक बीज विचार का निर्माण) शामिल है। चीजों को आगे बढ़ाने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। एक समग्र दृष्टि केवल एक प्रारंभिक बिंदु है। उद्देश्य का मूल्यांकन या मूल्यांकन अनिवार्य रूप से निर्णय में समाप्त होता है।
फिर एक मकसद पैदा करना होता है जो एक ड्राइव और एक इरादा देता है
इस लक्ष्य/लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए। एक आकृति एक गतिशील चीज है। यह उन मूल्यों से उत्पन्न होता है जिन्हें हम उन लक्ष्यों के लिए श्रेय देते हैं जिन्हें हम प्राप्त करना चाहते हैं।
हम देखते हैं या मानते हैं कि लक्ष्य उदात्त, आवश्यक, आदि है।

2. चूंकि कई लक्ष्य हैं, हमें उनमें से एक को चुनना चाहिए। इस
वरीयता का निर्धारण परामर्श समारोह का परिणाम है
जहां हमें विभिन्न लक्ष्यों का पता लगाने या उनकी जांच करने की आवश्यकता है, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की हमारी क्षमता (हमारी क्षमताओं में हमारा विश्वास), हमारी पसंद के परिणाम, सामाजिक वांछनीयता, स्वीकृति, आदि।
विवेक, मन की स्पष्टता आवश्यक है! अपनी इच्छाओं और विचारों को दूसरों तक पहुँचाने से हमें प्रतिक्रिया मिल सकती है, जिससे कभी-कभी लक्ष्य और प्रारंभिक योजना का समायोजन हो जाता है।

3. विचार से चुनाव और निर्णय लेना चाहिए।
आपको पूरा करना है, एकीकृत करना है,
और एक निर्णय पर आओ।

4. इसके बाद पसंद और निर्णय का सुदृढीकरण आता है। यह सक्रिय करता है
आवश्यक रचनात्मक और गतिशील ऊर्जा
लक्ष्य / लक्ष्य। की तस्वीरआना अब गतिशील है। यह हमारे इरादों और मूल्यों से चार्ज या रंगीन होता है।

5. योजना और एक कार्यक्रम की जरूरत है। कार्यान्वयन के तरीकों पर चर्चा की जाती है
समय, परिस्थिति, परिस्थितियों के विचार जैसे खेल।

6. अंत में, कार्यान्वयन की जाँच की जाती है।
विल एक थिएटर डायरेक्टर की तरह हैं। यह पूरी प्रक्रिया का मॉडरेटर है।
मुझे ऐसा लगता है कि मानव कार्यों की पूरी श्रृंखला प्रभावित होती है
प्रक्रिया: इच्छा से कल्पना तक प्रेरणा से भेदभाव तक
शारीरिक क्रिया के लिए ही योजना बनाना।
बहुत प्रभावशाली! शारीरिक प्रदर्शन स्वयं, सेंसरिमोटर फ़ंक्शन, इच्छा का कार्य नहीं है, बल्कि इस भाग की महारत है।

नोट: किसी योजना के समायोजन की अक्सर आवश्यकता होती है क्योंकि उस योजना के निष्पादन के दौरान परिस्थितियाँ और परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। कामचलाऊ व्यवस्था के लिए धीरज और प्रतिभा बहुत जरूरी है। अंतिम चरण, जिसका उल्लेख असगियोली ने नहीं किया है, अपने श्रम का फल प्राप्त करना है, जो हासिल किया गया है उसकी सराहना करना, आराम करना, आराम करना और जाने देना है।

डच लेखक मारिनस नूप, "रचनात्मक सर्पिल" के खोजकर्ता, जिसमें बारह चरण होते हैं, अपनी पुस्तक में इन तीन चरणों (बारह में से) या चरणों का नाम देते हैं। उनका काम अब नीदरलैंड में स्कूलों और समुदायों में बच्चों और वयस्कों को उनके सपनों या आकांक्षाओं को तैयार करने में मदद करने के लिए उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग कुछ सलाहकारों द्वारा कॉर्पोरेट वातावरण में परिवर्तनकारी कार्य में भी किया जाता है।

नूप ने संक्षेप में यह भी उल्लेख किया है कि संभावित रूप से हर कदम पर ब्लॉक हो सकते हैं, जिन्हें "नकारात्मक" भावनाओं के रूप में जाना जाता है (लेकिन वे ताकत का स्रोत हो सकते हैं), और उन्हें अपनी नवीनतम पुस्तक में कुछ हद तक संबोधित करते हैं। उनका तर्क है कि ये भावनाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि रचनात्मक प्रक्रिया विरोधाभासों से घिरी हुई है। लोगों को अक्सर अपनी गहरी इच्छाओं को खोजने या स्वीकार करने, उन्हें आकार देने और अक्सर अपनी क्षमताओं में या अपने नेटवर्क के समर्थन में विश्वास की कमी होती है। अन्य ब्लॉकों के साथ कोई ऐसे लोगों के बारे में सोच सकता है जो अपना मन नहीं बना सकते; जो लोग दृढ़ नहीं हो सकते; जो लोग साझा और संवाद नहीं कर सकते। मुझे ऐसा लगता है कि उसका 12-चरणीय चक्र, जैसे असगियोली के चरण या चरण, निदान उपकरण के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। इसके लिए एक प्रश्नावली तैयार की जा सकती है। असगियोली अपने काम "साइकोसिंथेसिस" में इनमें से कुछ समस्याओं का इलाज करता है और चिकित्सीय अभ्यासों की एक श्रृंखला भी देता है।

अभिव्यक्ति के लिए एक दृष्टि लाना
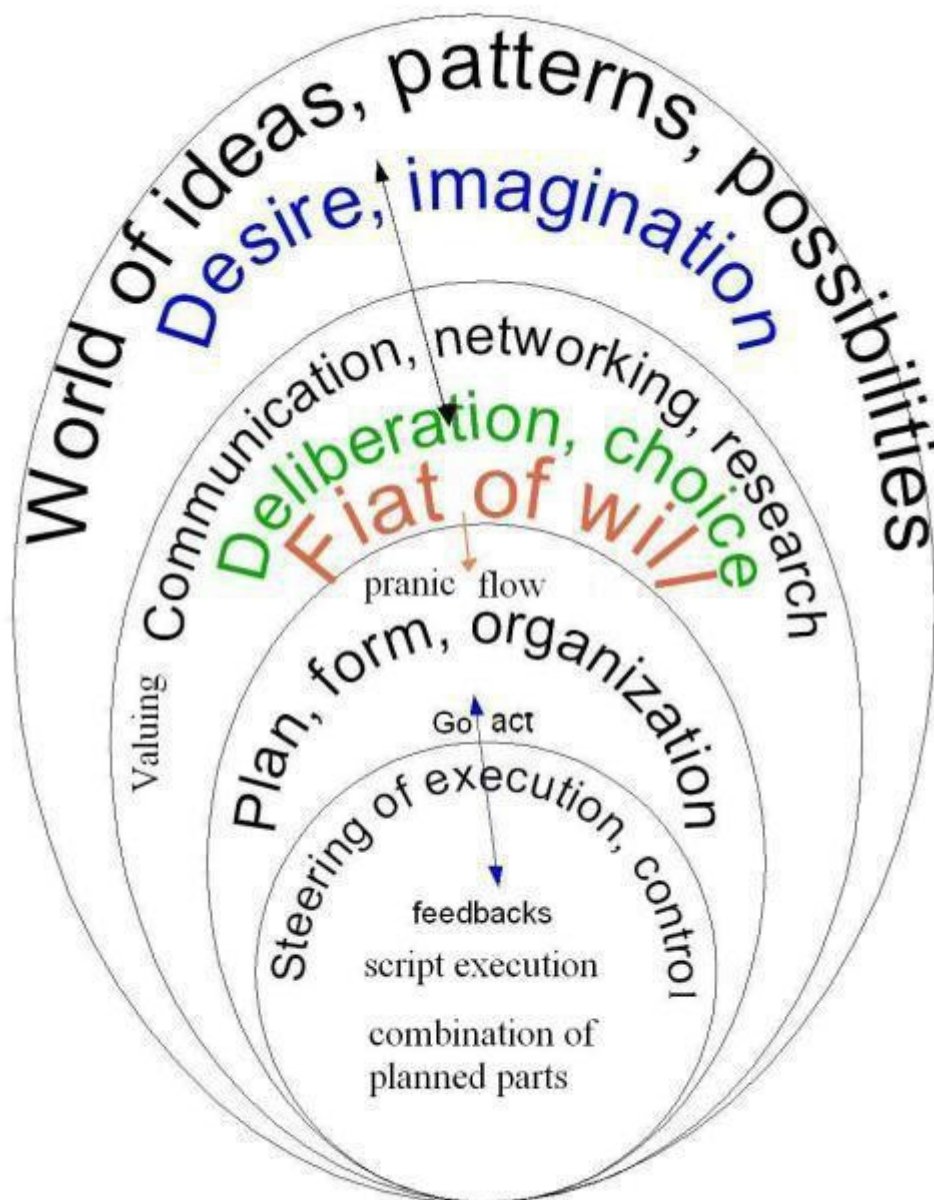
Diagram of levels and stages of the creative process

नीचे दिया गया चित्र सक्रिय इच्छा की प्रक्रिया को सारांशित करता है। कोई देखता है कि कैसे मनुष्य एक सक्रिय इच्छा के माध्यम से सृजन (आकार देने) के कार्य में देखने, सोचने और कार्य करने के क्षेत्रों को जोड़ता है। उदाहरण: साकार होने वाली एक सामंजस्यपूर्ण दुनिया की एक अच्छी तरह से विकसित दृष्टि उद्देश्य और आवश्यकता या आवश्यकता के दो ध्रुवों को जोड़ती है। संभावना के दायरे और यहां और अभी के बीच एक संबंध स्थापित होता है, कम से कम जब दृष्टि को साकार करने के लिए ठोस कदम उठाए जाते हैं।

दूसरे शब्दों में, क्या हो सकता है या होना चाहिए (और पहले से ही मानसिक क्षेत्र में एक विचार या रोगाणु-विचार के रूप में मौजूद है) अब रचनात्मक और भौतिक विमानों के माध्यम से यहां और अभी में एक रास्ता है। यह सृष्टि का जादू है! यह चिंतन और सुसंगत योजना और कार्य संयुक्त है। इसमें पृथ्वी पर अपना परिवर्तनकारी कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए आध्यात्मिक शक्तियों को शामिल करना शामिल है। यह काम वैकल्पिक मौद्रिक प्रणाली विकसित करने से लेकर स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण आदि तक कुछ भी हो सकता है।
बेशक, उदात्त कार्य को समाज के विरोध का सामना करना पड़ेगा। स्वार्थ आपके काम को विफल करने का प्रयास करेगा। इच्छुक कर्मचारियों का आधार बनाने की आवश्यकता मुझे स्पष्ट प्रतीत होती है।

ऊपर दिया गया चित्र मुख्य रूप से रॉबर्टो असगियोली के काम से संबंधित है। यहां मैंने चार नेस्टेड परतों से युक्त एक मॉडल तैयार किया है जैसा कि छवि में दिखाया गया है जिसमें सक्रिय इच्छा के छह चरणों की प्रारंभिक तस्वीर है। चित्र उन स्तरों या क्षेत्रों की पारस्परिक पैठ को दर्शाता है जिनमें मानस/बुद्धि संचालित होती है। यह एक परत केक नहीं है! इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: मनुष्य किसी चीज़ के लिए तरसता है (एक विचार के कारण); यह पहला चरण है जिसमें कल्पना भी होती है। यह मानव मानस में रहता है और विचारों, विचारों आदि की दुनिया के साथ बातचीत करता है। जिस तरह से मैंने इसे वाक्यांशित किया है, इसका मतलब है कि इस आरेख में मैं उच्च महत्वाकांक्षाओं के बीच अंतर नहीं कर रहा हूं, जो मन के उच्च, पारस्परिक स्तर तक पहुंचता है, और अधिक अंतर करता है। व्यक्तिगत इच्छाएँ जो केवल निम्न वर्गों में काम करती हैं। दूसरा स्तर संचार, नेटवर्किंग, सलाह, प्रशंसा और चयन को दर्शाता है। यह आंशिक रूप से "बाहरी दुनिया", सामाजिक पर्यावरण के साथ व्यापक अर्थों में बातचीत से संबंधित है। इसमें मूल्यांकन और निर्णय लेने की प्रक्रिया भी शामिल है। पर्यावरण से प्रतिक्रिया और इनपुट इसमें भूमिका निभाते हैं।
यह ऊपर वर्णित किया गया है। स्तर (या स्तर) के बाद सभी स्तरों के लिए, एक स्तर से दूसरे स्तर तक शक्तियों का उछाल होता है। स्तर आपस में जुड़ते हैं और एक हद तक प्रतिध्वनित होते हैं! सकारात्मक विकल्प (इसके लिए जाएं, इसे करें!) वसीयत की सहमति (फिएट) से संबंधित है। फिएट का अर्थ है "इसे रहने दो ..."।
यह फिएट जीवन शक्तियों को सक्रिय करता है, प्रेरित करता है, संगठित करता है [हिंदू परंपरा में प्राण कहा जाता है] जो प्रवाह, इसलिए बोलने के लिए, रचनात्मक प्रक्रिया की अगली (तीसरी) परत और चरण: योजना, संगठन, आदि, जो बनाने के साथ करना है स्क्रिप्ट या ब्लूप्रिंट (कार्यकारी कार्रवाई की संरचना)। इस चरण को पहचानना बहुत आसान है: हम सभी के पास ऐसे विचार थे जिनकी हमने योजना बनाई थी। यदि आपमें कोई संवेदनशीलता है, तो आपने योजना के साथ ऊर्जा के प्रवाह को देखा है। प्रबंधक अक्सर संगठन में व्यस्त, बहुत सारी जीवन ऊर्जा दिखाते हैं। घटनाओं को डिजाइन और संरचित करने या योजना बनाने के लिए एक लचीले दिमाग की आवश्यकता होती है। "नियंत्रण, अनुवर्ती, प्रतिक्रिया, अनुकूलन", इसलिए बोलने के लिए। आपको उन अवसरों को देखना होगा जो मौजूद हैं या उत्पन्न हो रहे हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधनों को इकट्ठा करना है। यह पहले से ही दूसरे स्तर पर शुरू होता है, जहां आपको अपने विचारों के पेशेवरों और विपक्षों को तौलना होता है, और इस चरण में यह जरूरी और सामयिक हो जाता है।

चौथी परत कार्यान्वयन के नियंत्रण (नियंत्रण) से संबंधित है। किए जाने वाले कार्यों की निगरानी की

आवश्यकता है। यह चरण पहले से तैयार और नियोजित भागों और कार्यान्वयन के चरणों को सारांशित करता है।
प्रतिक्रिया तब उत्पन्न होती है जब निष्पादन और योजना में सुधारों को आवश्यक समझा जाता है। यह चरण पिछले सभी स्तरों के प्रभावों को जोड़ता है। इस स्तर पर प्रतिरोध और जड़ता (साथ ही नियोजन/आयोजन चरण में) कई कारकों के कारण कई सिरदर्द पैदा कर सकता है। लचीलेपन की आवश्यकता है। यदि आप एक तरह से कुछ नहीं कर सकते हैं, तो दूसरे तरीके से प्रयास करें। कुछ करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों को देखना सीखें। जब कोई लक्ष्य (या किसी लक्ष्य का हिस्सा) प्राप्त करता है, तो उसे उससे कुछ संतुष्टि प्राप्त होगी। जब चीजें आपकी अपेक्षा के अनुरूप नहीं होती हैं, तो संभवतः आपके पास सीखने के लिए एक सबक होता है।

कुछ अंतिम टिप्पणियाँ

उपरोक्त विवरण डीसक्रिय इच्छा प्रक्रिया में और भी बहुत कुछ जोड़ा जा सकता है।
सबसे पहले, वसीयत में क्या शामिल है, इसका विस्तार, इसकी औपचारिक स्थिति।
यह निश्चित रूप से एक प्रमुख शक्ति की तरह दिखता है, इसलिए इसे पर्याप्त होना चाहिए।
इन विषयों पर ज्ञान परंपरा के पास कहने के लिए बहुत कुछ है, जिसमें विचारों की प्रकृति प्रतिनिधित्व के बजाय प्रस्तुतियों के रूप में, चेतना के प्रवाह को देखकर, और किसी के दिमाग को गहरे या आंतरिक परतों में कैसे निर्देशित किया जाए।
उच्च स्व के साथ प्रतिध्वनि सचेत प्रयास के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। यह अपने आप में एक पूरा अध्याय है। इसमें विचार का एक गतिशील क्षेत्र बनाने के लिए कल्पना और इच्छाशक्ति का उपयोग और अक्सर केंद्रित समूह कार्य शामिल होता है। इसमें निश्चित रूप से किसी की आंतरिक विशेषता पैटर्न की पूर्ण अभिव्यक्ति शामिल है।
यह आपके आंतरिक स्व (मनोसंश्लेषण का एक लक्ष्य) के साथ संरेखित करने का तरीका है और इस प्रकार एक ऐसी शक्ति बन जाती है जो इस दुनिया में और इस पर पूर्णता लाती है। इस महत्वपूर्ण विषय को मेरी पुस्तक (दूसरे लेख में) में विस्तार से शामिल किया गया है। यह ज्ञान आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था, और शायद मानव इतिहास में किसी भी समय की तुलना में अधिक आवश्यक है।

अध्याय सात

एक अभिन्न प्रकार के विज्ञान के लिए सात महत्वपूर्ण अभिगृहीत

बुद्धि परंपरा का सारांश
मार्टिन यूसर द्वारा

परिचय

ज्ञान परंपरा (संक्षेप में, मानव जाति का सामूहिक ज्ञान ऋषियों और मनीषियों द्वारा सदियों से पारित किया गया) सात प्रमुख सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करता है जो पूरे प्रकृति में लागू होते हैं। साथ में, ये सिद्धांत अपने और ब्रह्मांड के बारे में अधिक समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। मैंने अपने YouTube चैनल पर सात प्रस्तुतियां (केवल पाठ) दीं, जिन्हें आप बिंदु दर बिंदु यहां पा सकते हैं। इनमें से कई सिद्धांतों को हमारे बेहतरीन विद्वानों से कुछ मान्यता मिली है। प्राकृतिक प्रक्रियाओं के बारे में एक बुनियादी सहज जागरूकता किसी को सिद्धांतों, या स्वयंसिद्धों के इन सूत्रों में निहित ज्ञान और अनुभव को देखने में मदद करेगी यदि आप करेंगे। एक किताब जो निम्नलिखित सामग्री को समझने में मदद कर सकती है वह है इयान मैकगिलक्रिस्ट की द मैटर विद थिंग्स। Youtube पर आप इयान के साथ उनकी पुस्तक के बारे में चर्चा/संवाद पा सकते हैं। उनकी एक पुरानी किताब द मास्टर एंड हिज़ एमिसरी है, जो विभाजित मस्तिष्क और पश्चिमी दुनिया को आकार देने से संबंधित है। ऐसा प्रतीत होता है कि बाएं गोलार्द्ध ने उन क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया है जहां दायां गोलार्द्ध प्रभारी होना चाहिए। बायां गोलार्द्ध दाएं से अधिक कठोर है और प्रासंगिक जानकारी को खराब तरीके से संभालता है, जबकि दायां गोलार्द्ध पूरे को देखता है और सहानुभूतिपूर्ण है। इसके बारे में इयान की किताबों और व्याख्यानों में बहुत कुछ है।

सिद्धांत या स्वयंसिद्ध

सिद्धांतों की एक छोटी सूची:
1. चक्र प्रकृति में सर्वव्यापी हैं
2. कार्यों के परिणाम होते हैं। प्रतिक्रिया की भूमिका
3. प्रकृति में होलोन, आंशिक होल होते हैं
4. हर चीज का एक अनूठा कंपन पैटर्न होता है
5. प्रगतिशील विकास
6. द्वैत अभिव्यक्ति की पहचान है
7. विविधता में एकता

पहला सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: चक्र

प्रकृति में कई या सभी प्रक्रियाओं में एक चक्रीय घटक होता है। उदाहरण:
-ग्रहों की कक्षाएँ और उसके बाद के मौसम
-बायोरिदम, श्वास आदि।
-सभ्यताएं: वे आती हैं और जाती हैं (लगभग 250 वर्षों के चक्र में दुनिया भर में बदलाव, वर्तमान में चीन की ओर)
-विज्ञान में प्रतिमान (कुह्न, वैज्ञानिक क्रांतियों की संरचना)
-विचार (पिछले अध्यायों में अधिक जानकारी)
-हार्मोन चक्र, नींद-जागने का चक्र
-ऑक्सीजन-कार्बन डाइऑक्साइड चक्र: जानवर ऑक्सीजन लेते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड

छोड़ते हैं; पौधे इसके विपरीत करते हैं। इस चक्र के बिना, लोगों का अस्तित्व नहीं होता।

प्रक्रियाओं की इस संपूरकता का वर्णन छठे स्वयंसिद्ध में भी किया गया है। जीवन और मृत्यु के चक्र पर चर्चा करने से पहले, हमें जीवन के बारे में विचारों पर चर्चा करने की आवश्यकता है।

दो विरोधी विश्वदृष्टि: वैज्ञानिक भौतिकवाद बनाम आध्यात्मिक विश्वदृष्टि।

वैज्ञानिक भौतिकवाद: चेतना मस्तिष्क में होने वाली प्रक्रियाओं का एक उपोत्पाद मात्र है; सिस्टम को उनके घटकों में कम करके समझा जा सकता है।

आध्यात्मिक विश्वदृष्टि: चेतना रूप और अभिव्यक्ति से पहले का आधार है।

वैज्ञानिक भौतिकवाद चेतना, गुण, जीवन, अमूर्त सोच, कोशिकाओं के संगठन आदि की व्याख्या नहीं कर सकता है। वह करोड़ों लोगों (मृत्यु के निकट के अनुभव, रहस्यमय अनुभव, टेलीपैथी, सहज ज्ञान युक्त अंतर्दृष्टि) के अनुभवों की उपेक्षा करता है। अधिक से अधिक दार्शनिक और वैज्ञानिक पैन्सिसिज्म को जीवन का दर्शन मानने लगे हैं। दुर्भाग्य से, अकादमिक शोध बड़े लॉबी (तेल, फार्मा, आदि) और राजनीति से बहुत अधिक प्रभावित है, जिससे कई वैज्ञानिक अपने सच्चे विश्वासों को आवाज देने से डरते हैं। विश्वदृष्टि से संबंधित एक दिलचस्प वेबसाइट है: एस्सेन्टिया फाउंडेशन, जो विश्लेषणात्मक आदर्शवाद में एक निःशुल्क पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
ज्ञान परंपरा चेतना की अंतिम परिकल्पना को सभी प्रकट प्राणियों के आधार के रूप में मानती है और इसे सर्वेश्वरवाद को सौंपा जा सकता है। आइए इसे जीवन और मृत्यु के चक्र के संदर्भ में देखें। यदि चेतना अभिव्यक्ति का मूल है, तो जीवन और मृत्यु की प्रक्रियाओं के लिए इसका क्या अर्थ है? यह प्लेटो के फीदो में चर्चा का विषय है, एक प्रसिद्ध कहानी जिसमें फादो सुकरात की जेल में अंतिम दिन से संबंधित है। यदि जन्म से पहले चेतना या आत्मा है, तो मृत्यु के बाद वह चेतना कहां है? सुकरात बताते हैं कि हम जीवन चक्र का केवल आधा हिस्सा ही देखते हैं। शरीर के संबंध में हम अपने आध्यात्मिक अंग की स्मृति खो देते हैं।
ज्ञान परंपरा हमें बताती है कि पुनर्जन्म जीवन का एक तथ्य है। इसके लिए मजबूत तर्क हैं:

• नैतिक विचार और सहज ज्ञान युक्त अंतर्दृष्टि
• अनुभव (मृत्यु के निकट, पिछले जन्म की यादें)
• अरेअत्यावश्यक लेखन

व्यक्तित्व का कभी पुनर्जन्म नहीं होता। यह उच्च आत्म है जो एक शरीर को प्रोजेक्ट या विकसित करता है, जैसे एक पर्णपाती पेड़ अपनी पत्तियों को छोड़ देता है और अगले वर्ष नए पत्ते पैदा करता है। इस विषय पर और भी बहुत कुछ कहा जाना है। उदाहरण के लिए, इतने सारे लोगों के लिए रहने की स्थितियाँ इतनी भिन्न और अक्सर अनुचित क्यों हैं? ऐसे प्रश्नों को उचित स्पष्टीकरण पर पहुंचने के लिए अन्य सिद्धांतों की सहायता की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से, कारण-प्रभाव सिद्धांत, जो अगले भाग का विषय है।

दूसरा सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: कारण और प्रभाव

कारण-परिणाम सिद्धांत: प्रत्येक क्रिया के परिणाम होते हैं। कुछ न करने पर भी परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण : किसी डूबने वाले की सहायता नहीं करना । प्रकृति गड़बड़ी के बाद संतुलन के लिए प्रयास करती है। प्रत्येक क्रिया क्रिया के अनुरूप प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। यह सिद्धांत अस्तित्व के सभी स्तरों पर काम करता है: शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक। बाइबिल के अनुसार जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
ऊर्जा नष्ट नहीं होती है। यह सिद्धांत मानसिक ऊर्जा पर भी लागू होता है। क्या आपने कभी इसके बारे में गहराई से सोचा है? 73 एक ऐसा क्षेत्र है जो विभिन्न प्रकार की ऊर्जा को संग्रहीत करता है

जिसे हम अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक सेकंड के साथ बातचीत करते हैं। हम आम तौर पर इस क्षेत्र से अनजान होते हैं, जैसे मछलियां उस समुद्र से अनजान होती हैं जिसमें वे तैरती हैं। क्रिया प्रतिक्रिया की ओर ले जाती है; प्रतिक्रिया आगे की कार्रवाई की ओर ले जाती है। हम कह सकते हैं कि प्रतिक्रिया वापस कार्रवाई की ओर ले जाती है। यह फीडबैक लूप बनाता है। इस पर तीसरे सिद्धांत पर अनुभाग में और अधिक। भौतिक स्तर पर, रक्त शर्करा के स्तर का नियमन, उदाहरण के लिए, फीडबैक लूप के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। ज्ञान परंपरा में, कारण और प्रभाव की श्रृंखला को कर्म कहा जाता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि कर्म नियति नहीं है। नियति का संबंध मौजूदा पैटर्न और आदतों से है। मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, यह उन पर निर्भर है कि वे उस इच्छा का उपयोग आदतों को बदलने और व्यवहार के एक पैटर्न को तोड़ने के लिए करें। उदाहरण के लिए, आप अपना ध्यान अपनी चेतना की गहरी परतों की ओर निर्देशित करके अपने विचार पैटर्न को बदल सकते हैं। ऐसा करने की एक तकनीक इस पुस्तक के अध्याय दो में वर्णित है। इस संबंध में सहायता के लिए राल्फ मोरियार्टी डी बिट (विटवान) का व्यावहारिक ज्ञानशास्त्रीय लेखन भी देखें। मेरा संग्रह देखें। (archive.org, मार्टिन यूसर की खोज करें)
लोगों के बीच हितों के टकराव के कारण अक्सर जीवन अस्त-व्यस्त लगता है। इस संबंध में, कई अलग-अलग प्रकार के कर्म हो सकते हैं: व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, वैश्विक, कुछ का नाम लेने के लिए। विश्व कर्म को हमारी वित्तीय-आर्थिक-राजनीतिक प्रणालियों की कार्रवाई, प्रतिक्रिया और परिणामों के रूप में देखा जा सकता है जो पारिस्थितिकी तंत्र और खुद को नष्ट कर रहे हैं। एक परिमित ग्रह पर अनंत वृद्धि असंभव है, इसलिए उपरोक्त प्रणालियों का पुनर्गठन आवश्यक होगा।

कर्म न्याय का सार्वभौमिक नियम (या पैटर्न) है और नैतिक व्यवहार में गहराई से शामिल है। दूसरों के साथ वह मत करो जो तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे साथ किया (सुनहरा नियम)। गुण मायने रखते हैं, जैसा कि उनके सही दिमाग में कोई भी समझेगा। इस विषय पर और भी बहुत कुछ कहा जाना है। उदाहरण के लिए, इतने सारे लोगों के लिए रहने की स्थितियाँ इतनी भिन्न और अक्सर अनुचित क्यों हैं? ऐसे प्रश्नों को केवल कर्म और पुनर्जन्म के अध्ययन के माध्यम से ही संतोषजनक ढंग से समझाया जा सकता है। इस विश्लेषण में वर्तमान परिस्थितियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ऐसी घटनाएं शामिल हैं जिनके आज कई लोगों के लिए विनाशकारी परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, 1870 के दशक में बर्लिन में एक सम्मेलन में, राष्ट्र राज्यों की स्थापना के लिए अफ्रीका के मानचित्र पर जातीय जनजातियों की सीमाएँ खींची गईं। संघर्ष और आपदा के लिए एक नुस्खा।

क्या कोई व्यक्ति अपना जीवन पैटर्न बदल सकता है? हाँ। इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में एक विधि का वर्णन किया गया है। कर्म और पुनर्जन्म के बारे में कई सवालों के जवाब भी विलियम क्वान जज ने इकोज ऑफ द ओरिएंट की पहली दो किताबों में दिए हैं। ऑनलाइन देखें (निःशुल्क): theosociety.org (ऑनलाइन पुस्तक अनुभाग)

तीसरा सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: समग्र संगठन

एक होलोन "कुछ ऐसा है जो अपने आप में एक संपूर्ण और एक बड़े पूरे का एक हिस्सा है" (विकिपीडिया)। यह शब्द आर्थर कोस्टलर द्वारा गढ़ा गया था। कोएस्टलर के शब्दों में, एक होलोन एक ऐसी चीज है जिसमें एक बड़ी प्रणाली का हिस्सा होते हुए भी अखंडता और पहचान होती है; यह एक बड़े सिस्टम का सबसिस्टम है। स्रोत: विकिपीडिया। होलोन्स को एक पदानुक्रम (विकिपीडिया) के भागों के रूप में समझा जा सकता है। एक होलोन एक बड़े जीव, प्रणाली या पदानुक्रम में भाग लेता है। होलोन्स के उदाहरण: मानव शरीर (या जानवर या पौधे) में एक कोशिका स्वयं उस शरीर में एक होलोन होती है। विकास के क्रम में अंतर करेंकोशिकाएं ऊतकों, अंगों और अंग प्रणालियों में बदल जाती हैं, जो स्वयं किसी प्रकार के होलोन या सबसिस्टम हैं।

जेम्स ग्रियर मिलर द्वारा विशेष रूप से जैविक क्षेत्र में जटिल प्रणालियों के उप-प्रणालियों का अध्ययन किया गया था। 1978 से उनका "लिविंग सिस्टम्स थ्योरी (LST)" लगभग दस पदार्थ-ऊर्जा प्रसंस्करण उप-प्रणालियों और ग्यारह सूचना प्रसंस्करण उप-प्रणालियों को मानता है। ध्यान दें कि मिलर की प्रणाली में नैतिकता, रचनात्मकता (मन के उच्च क्रम के कार्यों) से संबंधित कोई

उच्च क्रम उपप्रणाली नहीं है। इसलिए, उनके सिद्धांत को अर्थ, मूल्यों, नैतिकता, रचनात्मकता और आध्यात्मिकता तक विस्तारित करने के लिए मनोवैज्ञानिक उप-प्रणालियों पर अधिक शोध की आवश्यकता है।

प्रकृति के राज्यों के बीच होलार्किक संबंधों के संबंध में, यह बताया जा सकता है कि जानवरों और मनुष्यों की त्वचा पर बाल हमारे विकासवादी अतीत के अवशेष हैं: ऐसा लगता है कि इसकी उत्पत्ति पौधों में हुई है। जानवरों और मनुष्यों की हड्डियों की संरचना में खनिज महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मनुष्य में पशु भाग सर्वविदित है और फ्रायड, जंग जैसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन किया गया है। जुनून और कठोर इच्छाओं को साहित्य में अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। प्लेटो के रथ की उपमा दो घोड़ों, एक सफेद और एक काले और एक रथ को नियंत्रित करने की कोशिश करने वाले रथ के साथ सर्वविदित है।

प्लेटो के फादरस संवाद बताते हैं कि सफेद घोड़े (इच्छा) को काले घोड़े (जुनून) से प्यार हो गया है और सारथी ने गाड़ी (मानव शरीर) से नियंत्रण खो दिया है। मान लीजिए कि आप किसी और के साथ चर्चा कर रहे हैं। विश्वास और दृष्टिकोण अलग हैं। स्थिति तनावपूर्ण हो जाती है और मूड गर्म हो जाता है। हर किसी के पास एक विकल्प होता है: वे अपना गुस्सा निकाल सकते हैं या वापस खड़े हो सकते हैं और शांत होने की कोशिश कर सकते हैं। हमारी नैतिक प्रकृति बुनियादी आवेगों को रोक सकती है ताकि यह हमारे मस्तिष्क के कार्य सहित पशु भाग को प्रभावित करे। आवेग नियंत्रण का कार्य मनोवैज्ञानिक साहित्य में सर्वविदित है। तो यहां हम मानव तंत्रिका तंत्र सहित मनुष्यों में नियंत्रण और प्रतिक्रिया कार्यों को देख सकते हैं। परिशिष्ट बी में मैं उन गुणों का वर्णन करता हूं जो मानव मानस में सक्रिय हैं। गुणों के विपरीत गुणों की महारत को देखने वाले अहंकार समारोह के विकास के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक मेटा-फ़ंक्शंस की बात करते हैं, जैसे मेटा-इमोशन: भावनाओं के बारे में भावनाओं को रखने की क्षमता। तो यह मनुष्यों में मेटा-लेवल, होलार्किक या नेस्टेड के अस्तित्व की ओर इशारा करता है। इन स्तरों को मानव मस्तिष्क में नियंत्रण के पदानुक्रम के रूप में दर्शाया जाता है। स्टैफोर्ड बीयर ने नियंत्रण के इस पदानुक्रम पर द ब्रेन ऑफ द फर्म नामक एक सूचनात्मक पुस्तक लिखी है और कंपनी के प्रबंधन के लिए उनके द्वारा खोजे गए सिद्धांतों को लागू किया है। होलार्की का एक और उदाहरण (एक पदानुक्रम में काम करने वाले होलोन) जी डी पुरुकर के मोनैडिक मॉडल में देखा जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट ए देखें। अंत में, मनुष्य गैया, धरती माता के शरीर में होलोन हैं, जहां वे अपने उद्देश्य पहलू में ग्रह की देखभाल करने का कार्य करते हैं, जैसा कि पौधे और जानवर निचले स्तर पर करते हैं।) करना। मनुष्य पारिस्थितिकी तंत्र को खराब कर रहे हैं और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है: आप जीवन के जाल में जो कुछ भी करते हैं, आप अपने लिए करते हैं। यह मानवता के लिए सबक 101 है!

चौथा सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: हर चीज का एक अनूठा कंपन पैटर्न होता है

हर चीज का एक अनूठा कंपन पैटर्न (क्षेत्र पैटर्न) होता है और यह खुद को उपयुक्त रूपों में व्यक्त करता है। इसे कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जाना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि कागज की एक शीट के नीचे चुंबक की छवि होती है, जिस पर लोहे का बुरादा रखा जाता है। लोहे के बुरादे को चुंबक के चुंबकीय आकार देने वाले क्षेत्र के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। हम सीधे चुंबकीय क्षेत्र का निरीक्षण नहीं करते हैं, लेकिन हम लोहे के कणों पर 76 क्षेत्र के प्रभाव को देखते हैं। एक प्रसिद्ध जीवविज्ञानी रूपर्ट शेल्ड्रेक के काम से फार्म क्षेत्रों के अध्ययन को बढ़ावा मिला है। टेलीपैथिक कुत्तों के साथ उनका काम ऐसे क्षेत्रों के अस्तित्व को इंगित करता है। उन्होंने विज्ञान पर धर्म के रूप में एक पुस्तक भी लिखी, जो एक विचारणीय तथ्य है। पदार्थ का एक स्पंदनात्मक पहलू है, एक तथ्य जो डी ब्रोगली के काम के बाद भौतिकी में अच्छी तरह से जाना जाता है। वास्तव में, हम कह सकते हैं कि हम एक ऊर्जा ब्रह्मांड में रहते हैं। ज्ञान परंपरा यह मानती है कि हमारे विचारों में एक ऊर्जावान या चेतना पहलू भी होता है। इसी संदर्भ में मन का विश्लेषण दूसरे अध्याय में किया गया है। वहाँ सात पहलुओं पर चर्चा की गई है और उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक विधि दी गई हैआध्यात्मिक भाग में ट्यून करें। चौथे सिद्धांत पर वापस आते हुए, सभी

जीवन रूपों में निहित एक आवश्यक, आवश्यक पैटर्न है।
इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक सत्ता, चेतना, उसी रूप में प्रकट होती है जो उस देहधारी चेतना के विकसित गुणों, उसके कंपन पैटर्न या क्षेत्र के अनुरूप होती है। मानव चेतना मानव शरीर का रूप धारण कर लेती है, पशु चेतना पशु में समा जाती है, आदि। यही बात पौधों, खनिजों और मानव साम्राज्य से ऊपर के राज्यों के बारे में भी सच है। इसे स्व-बनना कहा जाता है: स्वयं की अभिव्यक्ति, पर्याप्त चेतना-जीवित, होने के समग्र स्तरों पर।
अन्य उन्नत प्राणियों और सभ्यताओं के अस्तित्व की संभावनाओं को नकारने के अलावा हम अभी भी जीवन और ब्रह्मांड के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं जिसमें हम रहते हैं। जितना अधिक आप जानते हैं, उतना ही अधिक आप महसूस करते हैं कि असीम रूप से और भी बहुत कुछ है जो आप नहीं जानते हैं। चौथा सिद्धांत वंशानुक्रम के प्रश्नों पर भी लागू होता है। प्रश्न: क्या जीन पैटर्न के लिए कोई परिभाषित कारण है? अरस्तू हाँ कहेगा, और ऐसा ही ज्ञान परंपरा होगी। जीन के लिए ब्लूप्रिंट और फॉर्म फील्ड के सवाल के लिए खुले दिमाग वाले वैज्ञानिकों द्वारा और शोध की आवश्यकता है। यह किसी भी तरह से स्पष्ट नहीं है कि अकेले जीन एक निषेचित युग्मक से एक पूर्ण, कार्यशील शरीर बना सकते हैं।
ठीक ट्यून किए गए जीन-प्रोटीन संश्लेषण लूप को बनाने के लिए आवश्यक संगठन और जटिलता का स्तर उस लूप की जटिलता से भी अधिक है, जैसा कि कुछ वैज्ञानिकों ने बताया है। जीवन की उत्पत्ति हमारे वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य बनी हुई है। आवश्यक, अद्वितीय पैटर्न के सिद्धांत के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। पाठक को गूढ़ साहित्य के साथ-साथ रूपर्ट शेल्ड्रेक की पसंद के काम के लिए संदर्भित किया जाता है।

पाँचवाँ सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: प्रगतिशील विकास

डार्विन का विकास रूपों के परिवर्तन से संबंधित है। लेकिन "इवोल्यूशन" शब्द का वास्तविक अर्थ लैटिन "इवोल्वर" से विकसित करना है, पदार्थ में चेतना के गुणों को प्रकट करना, खोलना या प्रकट करना है। ज्ञान परंपरा के अनुसार, विकास में चेतना सबसे महत्वपूर्ण कारक है। पदार्थ/पदार्थ में और उसके माध्यम से सक्रिय, संगठित बल के बिना कोई भी घटना संभव नहीं है। जीवविज्ञानियों ने बच्चे को नहाने के पानी के साथ बाहर फेंक दिया जब उन्होंने सोचा कि वे जीवन शक्ति (प्राण, ची), एलन वाइटल (बर्गसन), एंटेलेची (अरस्तू) के बिना कर सकते हैं। उनमें से अधिकांश यह स्वीकार नहीं करेंगे कि नव-डार्विनियन सिद्धांत (संश्लेषण) समस्याओं से भरा है, जिसमें जीवन की उत्पत्ति की व्याख्या करने में असमर्थता भी शामिल है। यादृच्छिक उत्परिवर्तन इसकी व्याख्या नहीं करते हैं (इसकी गणना कई चीजों के लिए की गई है: प्रोटीन की जटिलता उनमें से एक है)।
डार्विन के समकालीन जीवविज्ञानी अल्फ्रेड रसेल वालेस ने सोचा कि विकासवाद के सिद्धांत ने मानव मन के उच्च संकायों की व्याख्या नहीं की: गणित, कला, संगीत, दर्शन (अमूर्त सोच)। इस मायने में वह सही थे। मानव जाति में अमूर्त और प्रतीकात्मक सोच के अचानक उभरने से जुड़ा एक बड़ा रहस्य है। इस उत्पत्ति का कुछ विवरण मेरी पुस्तकों और उसमें निहित संदर्भों में पाया जा सकता है। यह एक सेना या प्राणियों के राज्य के प्रभाव और सहायता के बराबर है जो मानव साम्राज्य से परे है। प्रसिद्ध प्रोमेथियस मिथक में एक सुराग पाया जा सकता है। राज्य अन्योन्याश्रित हैं क्योंकि वे एक समग्र संरचना का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। प्रतीकात्मक विचार के उद्भव को समझाने का प्रयास किया गया है। हालांकि, उद्भव के सिद्धांत अनिर्णायक हैं क्योंकि वे "नीचे से ऊपर" काम करने की कोशिश करते हैं।
इन सभी सिद्धांतों में जो कमी है वह निम्नलिखित विचार है: कुछ विकसित करने के लिए, पहले किसी चीज को ढंकना या मोड़ना आवश्यक है; अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त वातावरण और समय में एक गुप्त क्षमता, बल, कारक प्रकट होने या विकसित होने की प्रतीक्षा कर रहा है (इसे समझाने के लिए हमें उत्सर्जन सहित होलार्किक प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने की जरूरत है-इस श्रृंखला के तीसरे स्वयंसिद्ध और उद्धृत साहित्य को देखें ग्रंथ सूची में इसलिए विकासवादी प्रक्रियाएं वास्तव में दुगनी हैं:

(1) चेतना या आत्मा पदार्थ में शामिल हो जाती है, ढँक जाती है या कपड़े पहन लेती है (अस्तित्व का एक कम विकसित क्षेत्र) और:

(2) पदार्थ आत्मा द्वारा प्रेरित, सूचित किया जाता है।

यह एक चक्रीय प्रक्रिया है, पहला चरण एक अवतरण या पदार्थ में आत्मा के प्रक्षेपण द्वारा चिह्नित किया जा रहा है और दूसरा चरण आत्मा की चढ़ाई और एक शोधन, पदार्थ के ईथरीकरण द्वारा चिह्नित किया जा रहा है। हम पहले से ही बाद की प्रक्रिया को आंशिक रूप से देख सकते हैं: रेडियोधर्मी तत्व क्षय हो जाते हैं और एक हल्के नाभिक को पीछे छोड़ देते हैं।
इस विषय पर और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, उदाहरण के लिए, ऐसे वैज्ञानिकों की संख्या बढ़ रही है जो विकासवादी प्रक्रियाओं को समझाने के लिए पैनप्सिसिज्म को एक आवश्यक ढांचा मानते हैं। चेतना, गुण ("योग्य समस्या" या "कठिन समस्या") को वर्तमान वैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा समझाया नहीं जा सकता है, इसलिए नए दार्शनिक ढांचे की खोज। इस संबंध में ज्ञान परंपरा के पास देने के लिए बहुत कुछ है।

इंटेरमेस्सो

"विज्ञान मुक्त" पर शेल्ड्रेक व्याख्यान
सीआईएसएस संस्थान (यूट्यूब देखें)

विज्ञान में दस (ज्यादातर अचेतन) धारणाएं, जिनमें से सभी संदिग्ध हैं, जिनमें शामिल हैं:

प्रकृति के लिए मशीन रूपक (जैविक-चिकित्सा विज्ञान में);
पदार्थ अचेतन है (17 वीं शताब्दी की परिभाषा के अनुसार);
प्रकृति लक्ष्यहीन है;
जैविक आनुवंशिकता भौतिक है (अब शेल्ड्रेक के अनुसार अस्वीकृत); प्रकृति के नियम (और उनके स्थिरांक) निश्चित हैं;
स्मृति मस्तिष्क में जमा हो जाती है (लेकिन स्मृति के निशान नहीं मिलते हैं);
मानसिक गतिविधि मस्तिष्क गतिविधि है;
मानसिक घटनाएं भ्रामक हैं (लेकिन अधिकांश लोगों को उनके साथ अनुभव है)
अंत अंतराल
प्रगतिशील विकास शब्द के संबंध में, ज्ञान परंपरा हमें बताती है कि प्रकृति के राज्यों में और उसके माध्यम से चेतना के गुणों, क्षमताओं का क्रमिक विकास या प्रकटीकरण होता है। खनिजों से अधिक पौधों का विकास हुआ है, पौधों की तुलना में जानवरों का, जानवरों से अधिक मनुष्यों का विकास हुआ है। ज्ञान परंपरा के साहित्य में चेतना की इन क्षमताओं और गुणों का वर्णन किया गया है (अंत में नोट्स देखें) और सभी को उपयुक्त उपकरणों और विधियों के साथ खोजा जा सकता है। एक विशेष क्षेत्र में प्राणी अपनी चेतना, क्षमताओं को अपनी दुनिया में अनुभव के माध्यम से विकसित करते हैं और प्रकृति के उसी क्षेत्र में पुनर्जन्म लेते हैं जब तक कि वे उस क्षेत्र में संभावित अनुभव की सीमा तक नहीं पहुंच जाते। तब वे प्रकृति के अगले उच्च राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और चेतना के उच्च पहलुओं को विकसित कर सकते हैं।
तो विकास का एक उद्देश्य है: चेतना के उच्च रूपों, अधिक क्षमताओं और मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं के विकास का उत्पादन करना। इस विकास को लाने के लिए प्रकृति के राज्य मिलकर (पारस्परिकता) काम करते हैं। इस संदर्भ में, जी डी पुरुकर ने मानव विकास के बारे में एक मुफ्त ऑनलाइन पुस्तक लिखी है (अंत में नोट्स देखें)। (पुस्तक का शीर्षक: मैन इन इवोल्यूशन)
मानव साम्राज्य के भीतर आत्मा के विकास के कई अवसर हैं। क्लेयर ग्रेव्स (और क्रिस कोवान, डॉन बेक) का काम: "सर्पिल डायनेमिक्स" (सर्पिल डायनेमिक्स) और विकासात्मक मनोविज्ञान

(पियागेट, एरिकसन्, कोहलबर्ग और कई अन्य) के बारे में सोचें। मनुष्य अपनी समझ और रचनात्मकता को और अधिक विकसित कर सकता है।
अध्याय दो मन के सात पहलुओं का वर्णन करता है, जिनमें से अंतर्ज्ञान और प्रेरणा उच्चतम रूप हैं। लोगों के बीच सहयोग और आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए इच्छा और कल्पना का उपयोग (कला, संचार, संवाद, शिक्षा) किया जा सकता है।
नोट्स: आपको आरंभ करने के लिए कुछ साहित्य और लिंक:
स्पाइरल डायनेमिक्स (डॉन बेक और क्रिस कोवान द्वारा संपादित)

विकास में जी डी पुरकर का आदमी
जी डी पुरुकर: एसोटेरिक फिलॉसफी के फंडामेंटल्स (और उनके अन्य सभी काम)
CISS संस्थान में "साइंस अनलेशेड" पर शेल्ड्रेक व्याख्यान;
इस अध्याय के अंत में संदर्भ भी देखें।

छठा सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: अभिव्यक्ति के आधार के रूप में द्वैत

संक्षेप में, आत्मा और पदार्थ अभिव्यक्ति के दो ध्रुव हैं, जिसके बीच में तीसरा कारक बल है। यह महान आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराओं से मेल खाती है। कृष्ण भगवद गीता में "विपरीत जोड़े" और इन प्रभावों को नियंत्रित करने की आवश्यकता (एक स्वामी होने के नाते, गुलाम नहीं) की बात करते हैं। नियोप्लाटोनिक शिक्षाएँ उसी त्रिएकत्व की ओर इशारा करती हैं। ईसाई धर्म में ट्रिनिटी है, जो सदियों से एक ही विचार के हिंदू दर्शन से पहले थी। दूसरे शब्दों में, आत्मा और पदार्थ बल/ऊर्जा/शक्ति/ची के माध्यम से जुड़े हुए हैं। दूसरे शब्दों में, अभिव्यक्ति में हमेशा एक ट्रिनिटी काम करती है, चाहे वह ट्रिपल लोगो (इच्छा, बुद्धि, शब्द या कंपन) हो या बल, पदार्थ, रूप/निर्माण। ध्रुवों के बीच परस्पर क्रिया द्वाराज अंतर्निहित ताकतें सभी प्रगति और गिरावट का कारण बनती हैं।
विकासवादी प्रक्रिया में, अनुकूलता काम करने वाली शक्तियों का एक महत्वपूर्ण पहलू है (भारतीय: शक्ति)। पंचवर्षीय थियोसॉफी में सुब्बा पंक्ति की शक्तियों पर लेख, विशेष रूप से कुंडलिनीशक्ति पर अनुभाग देखें।

यिन/यांग द्वैत प्रकृति में प्रक्रियाओं की पूरकता का एक उदाहरण प्रतीत होता है। यहाँ बहुत सारे उदाहरण हैं:

विभिन्न बाएं/दाएं मस्तिष्क कार्य (जो एक साथ काम करते हैं, वैसे)। इयान मैकगिलक्रिस्ट की अंतिम दो पुस्तकें बाएं और दाएं गोलार्ध के बीच के अंतर और उनकी पूरकता से संबंधित हैं। पढ़ने लायक है क्योंकि यह दुनिया में व्याप्त अराजकता के बारे में कुछ बताता है और इस स्थिति को दूर करने के तरीके के बारे में कुछ संकेत देता है।
उनके YouTube चैनल पर उनके कई व्याख्यान और वार्ताएं हैं। वह इस बात के कई उदाहरण देता है कि कैसे गोलार्द्ध कार्य में एक दूसरे के पूरक हैं और क्यों दायां गोलार्द्ध स्वामी होना चाहिए न कि बाएं गोलार्द्ध का नौकर।

तंत्रिका तंत्र: सहानुभूति / पैरासिम्पेथेटिक
मांसलता: विरोधी मांसपेशियां
सेंसरिमोटर युग्मन
मस्तिष्क में स्टॉप-गो सिस्टम
कोशिका झिल्लियों का ध्रुवीकरण, आवेश पृथक्करण (+/-)
पुरुषों और महिलाओं के बीच मतभेद

मूल्य प्रणालियाँ निम्नलिखित सभी में शामिल हैं।

मनोवैज्ञानिक: सकारात्मक बनाम नकारात्मक प्रभाव
सुख बनाम दर्द
अहंकार बनाम निस्वार्थता रवैया/व्यवहार/सोच/इरादे

प्रश्न: क्या प्राथमिक कणों की तरह जोड़ियों में भावनाएँ उत्पन्न होती हैं? भावनाओं और उनके संतुलन के संबंध में द्वैत के विचार के लिए, और चेतना को एक उच्च स्तर (एक मेटाफंक्शन) में स्थानांतरित करने के लिए "मानव मानस में काम पर गुण या गुण", परिशिष्ट बी पर मेरा लेख देखें।

आध्यात्मिक/नैतिक स्तर पर ध्रुवता/द्वैत के उदाहरण: स्वयं के लिए मुक्ति का मार्ग चुनना बनाम मानवता के ज्ञान के लिए (प्रतिक बुद्ध बनाम अमृता बुद्ध)।
ऊपर दिए गए उदाहरण प्राकृतिक विकासवादी प्रक्रियाओं में शाखाओं में बँटने की घटना को दर्शाते हैं। जटिल प्रणालियों में द्विभाजन की घटना की घटना का अध्ययन अराजकता (या जटिलता) सिद्धांत में किया जाता है। वास्तव में, यहाँ प्रस्तुत अधिकांश पूरक उदाहरणों का कुछ हद तक शिक्षा जगत में अध्ययन किया गया है। राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर द्वैत के उदाहरण भी हैं: वित्तीय: ऋण प्रणाली। हमारी वर्तमान मौद्रिक प्रणाली ऋण सृजन और चक्रवृद्धि ब्याज पर आधारित है। यह धनी और अपाहिज के बीच की खाई को चौड़ा करने का कारण बनता है (थॉमस पिकेटी)।

न्याय प्रणाली: वर्ग न्याय का खतरा हमेशा मौजूद रहता है।

राजनीतिक स्तर: बाएं-दाएं विभाजन (अब कुछ हद तक पुराना); बाकियों के खिलाफ विभाजित अभिजात वर्ग अब बहुत स्पष्ट हो रहा है।

मीडिया: मुख्यधारा बनाम वैकल्पिक मीडिया।

तत्वों (आयनों, आदि) का ध्रुवीकरण एक बल क्षेत्र में होता है।

विभिन्न क्षेत्रों में ये बल क्षेत्र कैसे काम करते हैं, इसके अनुरूप भविष्य के शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं। आखिरकार, अब तक प्रस्तुत छह सिद्धांतों के बीच संबंध निश्चित रूप से अध्ययन और अनुसंधान का एक समृद्ध क्षेत्र भी प्रदान करते हैं।

बाएं: भगवद गीता और गीता पर निबंध विलियम क्वान जज द्वारा।
टी. सुब्बा रो द्वारा भगवद गीता व्याख्यान और थियोसोफी के पांच वर्षों में उनके लेख। इस अध्याय के अंत में लिंक देखें।

सातवां सिद्धांत या स्वयंसिद्ध: सभी जीवन के सार या स्रोत को जानना

जीवन और अस्तित्व की उत्पत्ति क्या है? क्या कोई सार है और यह कैसे विविध हो जाता है? क्या जीवन की उत्पत्ति को जानना संभव है? अंतिम प्रश्न के साथ शुरू करने के लिए, हाँ, ज्ञान परंपरा के अनुसार, सार्वभौमिक जीवन, एक स्रोत, हर प्राणी के दिल या केंद्र में काम करता है। भारतीय उपनिषद कहते हैं कि तू वह है।
हर कोई चेतना के उच्च पहलुओं को विकसित करके अपने भीतर दिव्य चिंगारी की खोज कर सकता है: अंतर्ज्ञान और प्रेरणा। यह एक गहन, मौलिक स्तर पर सभी प्राणियों के परस्पर संबंध की क्रमिक बोध और अधिक समझ की ओर ले जाएगा। यह आंतरिक जागृति की एक प्रक्रिया है, एक क्रमिक ज्ञानोदय। आज हम क्वांटम उलझाव और क्वांटम क्षेत्र सिद्धांत को जानते हैं। एक क्षेत्र का विचार जिसमें से सभी प्रकार के कण प्रकट होते हैं, सर्वविदित है। समान रूप से, कोई एक स्रोत को समझ सकता है जिसमें से पर्याप्त जीवन चेतना के असंख्य बिंदु बहते हैं, प्रत्येक की अपनी

विशेषताओं के साथ।
 एक अन्य सादृश्य एक महासागर हो सकता है जिससे एक लंबी यात्रा और कई परिवर्तनों के बाद समुद्र या स्रोत पर लौटने के लिए कई धाराएँ और बूँदें निकलती हैं। स्रोत भीतर है, आसन्न है, लेकिन पारलौकिक भी है। एक तरह से, ये सापेक्ष विपक्ष हैंअवधारणाओं, लेकिन इसे समझाने में बहुत समय लगेगा। यह जीवन का एक सर्वेश्वरवादी दर्शन है, एक प्रक्रिया दर्शन है। परिशिष्ट ए में चेतना के प्रवाह से संबंधित एक मोनैडिक मॉडल है। यह अपेक्षाकृत अज्ञात थियोसोफिस्ट जी डी पुरुकर द्वारा विकसित किया गया था। यह मॉडल एक लाल धागा दिखाता है जो मठों के माध्यम से चलता है और विविधता में एकता का तात्पर्य है, जैसा कि इसकी सामग्री से जल्दी देखा जा सकता है। सावधानीपूर्वक अध्ययन के साथ, मॉडल आंतरिक आत्मा से अपने संबंध को देखने में मदद कर सकता है।
मॉडल में प्रत्येक मोनाड में एक वाहन (आत्मा) होता है जिसके माध्यम से उसे काम करना चाहिए। साथ में वे चेतना का एक नोड बनाते हैं, एक केंद्र बिंदु जिसके माध्यम से सार्वभौमिक जीवन बहता है। यह फोकस या चेतना का केंद्र चेतना के प्रवाह के एक ट्रांसफॉर्मर के रूप में कार्य करता है, इसलिए बोलने के लिए, कम विकसित मोनैड के लिए वोल्टेज कम करना (आरेख में लंबवत दिखाया गया है, परिशिष्ट ए देखें)। शायद यहाँ एक सादृश्य खींचा जा सकता है। भौतिकी: प्रकाश (फोटॉन) एक बल वाहक, विद्युत चुम्बकीय बल है। फोटॉन पदार्थ के साथ बातचीत करते हैं, आमतौर पर इलेक्ट्रॉनों। एक फोटॉन को पदार्थ द्वारा अवशोषित करने के बाद, इसे कम आवृत्ति पर फिर से उत्सर्जित किया जा सकता है। इसका रंग बदल जाता है। चेतना मस्तिष्क के साथ इसी तरह से बातचीत कर सकती है। इससे पदार्थ-आत्मा द्वैत की समस्या का समाधान होगा। पदार्थ क्रिस्टलीकृत आत्मा है। मन सूक्ष्म है, इसलिए बोलना है।
यहां विचार के लिए भोजन और शोध के लिए भोजन। वास्तव में, इंस्टीट्यूट ऑफ नॉएटिक साइंसेज, आईओएनएस ने मन और पदार्थ के बीच की बातचीत पर बहुत शोध किया है। उन्होंने पदार्थ पर आत्मा का स्पष्ट प्रभाव पाया। इस प्रस्तुति के नीचे लिंक देखें (डीन रेडिन)। तो मनुष्य चेतना की एक धारा है, चेतना के विभिन्न केंद्रों के साथ एक संयुक्त सत्ता है। मनुष्य के उच्च केंद्रों की ओर ध्यान आकर्षित करके इन फॉसी, या चेतना के नोड्स की खोज करना, एक बड़ी वास्तविकता के लिए जागृति की प्रक्रिया है, एकता जो विविधता के माध्यम से चलती है। यह एक "इन-आउट" चक्र है: अंदर जाओ, मन में गोता लगाओ, और फिर दुनिया को थोड़ा-थोड़ा करके बदलने में मदद करने के लिए बाहर जाओ। ऊपर वर्णित आंतरिक-बाहरी चक्र कार्ल गुस्ताव जंग को भी ज्ञात था। यह चक्र व्यक्तिगतकरण की प्रक्रिया में शामिल है, जो जंग के काम का एक महत्वपूर्ण विषय है। उन्हें कीमिया के प्रति उनके आकर्षण के लिए भी जाना जाता है, विशेष रूप से कीमिया प्रतीकों में जहां विरोधों का मिलन या विवाह एक महत्वपूर्ण विषय है। इसकी तुलना ऊपर के छठे स्वयंसिद्ध और सातवें स्वयंसिद्ध में निहित एकीकृत कार्य से करें!

अंत में, विज्ञान और धर्म के दर्शन पर कुछ विचार। वैज्ञानिक पद्धति से संबंधित दो मुख्य दार्शनिक परंपराएं हैं: अनुभववाद और तर्कवाद। अनुभववाद: ज्ञान इंद्रियों (जॉन लॉक) के माध्यम से हमारे पास आता है। तर्कवाद: ज्ञान मन या कारण (डेसकार्टेस) से आता है। इन परंपराओं को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति में शामिल किया गया है। आधुनिक पद्धति और सामान्य रूप से पश्चिमी दर्शन में मानव मन की गहरी क्षमताओं के अस्तित्व की मान्यता का अभाव है: अंतर्ज्ञान और प्रेरणा। ज़रूर, कुछ वैज्ञानिकों को कभी-कभार प्रेरणा मिली, लेकिन सहज ज्ञान युक्त संकाय के अस्तित्व को पहचानना: समकालीन शैक्षणिक हलकों में चीजें कैसे होती हैं, इसकी गहरी, तत्काल समझ आम नहीं है। जब तक यह जारी रहेगा, वैज्ञानिक अनुसंधान काफी हद तक उन घटनाओं तक ही सीमित रहेगा जिनके निष्कर्ष समय के साथ बदल जाएंगे। अधिकांश विज्ञान केवल विषयों की सतह को कवर करेगा और गहराई की कमी होगी। प्रारंभ से ही नैतिक प्रश्नों से निपटने में सक्षम वास्तव में एकीकृत विज्ञान तक पहुंचने के लिए शोधकर्ता के लिए अंतर्ज्ञान के संकाय का विकास आवश्यक है। इस संबंध में, पारस्परिक मनोविज्ञान और चिकित्सा सामाजिक विज्ञान में बहुत योगदान दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, केन विल्बर और रॉबर्टो असगियोली (साइकोसिंथेसिस) की पसंद के लेखन में कुछ वास्तविक रत्न शामिल हैं। इन पहले सिद्धांतों के अधिक संदर्भों के लिए, इस प्रस्तुति के अंत में ग्रंथ सूची देखें।

इस दुनिया के धर्मों के लिए सामान्य विषयों पर एक संक्षिप्त नोट।

पवित्र ग्रंथों का तुलनात्मक संकलन (नीचे लिंक देखें) पुस्तक "वर्ल्ड स्क्रिप्चर" की सामग्री की तालिका को देखते हुए, मैंने देखा कि इन सभी विषयों को जी डी पुरुकर द्वारा एक सुसंगत और मर्मज्ञ तरीके से निपटाया गया था। टीयूपी ऑनलाइन संग्रह देखें। Archive.org पर मेरे संग्रह में आपको कई किताबें मिलेंगी जो धार्मिक विषयों और कहानियों की गहन व्याख्या से संबंधित हैं औरआंशिक रूप से वैज्ञानिक विषयों के लिए अंतर्दृष्टि और कनेक्शन को एकीकृत करता है।

आखिर धर्म, दर्शन और विज्ञान जीवन के अलग-अलग क्षेत्र नहीं हैं। दर्शनशास्त्र इस सवाल से जुड़ा है कि क्यों, धर्म कहां के सवाल के साथ और विज्ञान कैसे काम करता है (पता है)। ये एक ही वास्तविकता के विभिन्न पहलू हैं। (दायां गोलार्ध इसे प्राप्त करता है, बाएं को नहीं।) पिछले पचास वर्षों में, वास्तविकता पर इन तीन लेंसों, या दृष्टिकोणों को एकीकृत करने में कुछ प्रगति हुई है। आर्थर यंग की कृति, द रिफ्लेक्टिव यूनिवर्स, को इसी संदर्भ में रखा जा सकता है। आर्थर यंग वेबसाइट देखें। आर्थर यंग का काम अपने मूल विचारों के और विकास के योग्य है। यह वास्तव में विकास प्रक्रियाओं का एक प्रोटो-मॉडल या मेटा-मॉडल है। मेटा-प्रतिमान के रूप में इसकी सार्वभौमिकता अच्छी तरह से स्थापित नहीं है, लेकिन आशाजनक है। आर्थर यंग के मॉडल, सात गुना विकासवादी चाप, में पदार्थ-ऊर्जा, रचनात्मक कारण (रूपर्ट शेल्ड्रेक के साथ तुलना), सूचना, संगठन, अर्थ और उद्देश्य के विचार शामिल हैं।

सात सिद्धांतों पर ऑनलाइन साहित्य।
नोट: नीचे दिया गया साहित्य अंग्रेजी में है। आपकी भाषा में शीर्षक का अनुवाद मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर द्वारा किया जाता है। नीचे सूचीबद्ध कुछ शीर्षक आपकी अपनी भाषा में भी उपलब्ध हो सकते हैं।

https://www.theosociety.org/pasadena/ts/tup-onl.htm (विशेषकर डब्ल्यू क्यू. जज और जी. डी पुरुकर)
विलियम क्वान जज: भगवद गीता पर टिप्पणियाँ।
विलियम क्वान जज: द ओशन ऑफ थियोसोफी।
जी डी पुरुकर: एसोटेरिक फिलॉसफी के फंडामेंटल्स [शिक्षण की एक पूर्वी पद्धति के माध्यम से]
G. de Purucker: भोगवाद का स्रोत (बाहरी इंद्रियों से जो छिपा है, उसके अध्ययन के रूप में भोगवाद; ज्ञान का एक वास्तविक खजाना)

https://www.sno.org/books-and-mp3s (स्कूल ऑफ द नेचुरल ऑर्डर) विटवन के लेखन (कई सहित: द क्रिस्टोस; कार्यात्मक गतिविधियां; आइंस्टीन और इंफेल्ड द्वारा भौतिकी के विकास पर टिप्पणियां; ब्रह्मांड विज्ञान; का विवरण मानसिक दुनिया)

मेरा संग्रह Archive.org पर: https://archive.org/search.php?
query=Martin+Euser&sin=
संग्रह में मेरी पुस्तकें (ऊपर लिंक देखें):
यूसर, मार्टिन: रेजोनेंस विद द सेल्फ
यूसर, मार्टिन: मिस्ट्रीज़ ऑफ़ द ह्यूमन माइंड
इसके अलावा: मेरे संग्रह में प्रोक्लस, बोहेम और कई अन्य लोगों द्वारा काम करता है।

थियोसॉफी के पांच साल (परम ऑनलाइन संस्करण शायद सबसे अच्छा पढ़ा गया है) इस संकलन में कई रत्न हैं, खासकर सुब्बा रो से।

रूपर्ट शेल्ड्रेक पैनप्सिसिज़्म पर: https://www.youtube.com/watch? v=B7KaNnFij2Q
https://www.youtube.com/watch?v=sm9eMYSYDcA
रूपर्ट शेल्ड्रेक "द लिबरेटेड साइंस" पर https://www.sheldrake.org

नोएटिक साइंसेज संस्थान (आईओएनएस): https://noetic.org/
पदार्थ पर मन के प्रभाव पर अपने शोध पर डीन रेडिन का व्याख्यान (यूट्यूब)

इसके अलावा प्रासंगिक लेकिन ऑनलाइन नहीं: स्टैफोर्ड बीयर, ब्रेन ऑफ द फर्म (फर्म के प्रबंधन के लिए मानव तंत्रिका तंत्र के पदानुक्रमित संगठन का अनुप्रयोग)

टैलबोट। माइकल: होलोग्राफिक यूनिवर्स

विल्बर, केन: इंटीग्रल साइकोलॉजी

परिशिष्ट A

मनुष्य का एक सन्यासी मॉडल
मनुष्य का समग्र संविधान

इस खंड का उद्देश्य संक्षेप में मनुष्य का एक "मॉडल" प्रस्तुत करना है जो हमें "हम" के बीच के संबंध को समझने में मदद करेगा। और ब्रह्मांड। जब हमें इसका बोध हो जाता है, तो "जो ऊपर है वह नीचे है" (हर्मेटिक स्वयंसिद्ध) के लिए, सभी जीवन की पूर्णता या अंतर्संबंध को समझना आसान है।
थियोसोफिस्ट जी डी पुरुकर ने अंडा स्कीमा के रूप में एक मानव मॉडल प्रस्तुत किया। दृष्टांत देखें।
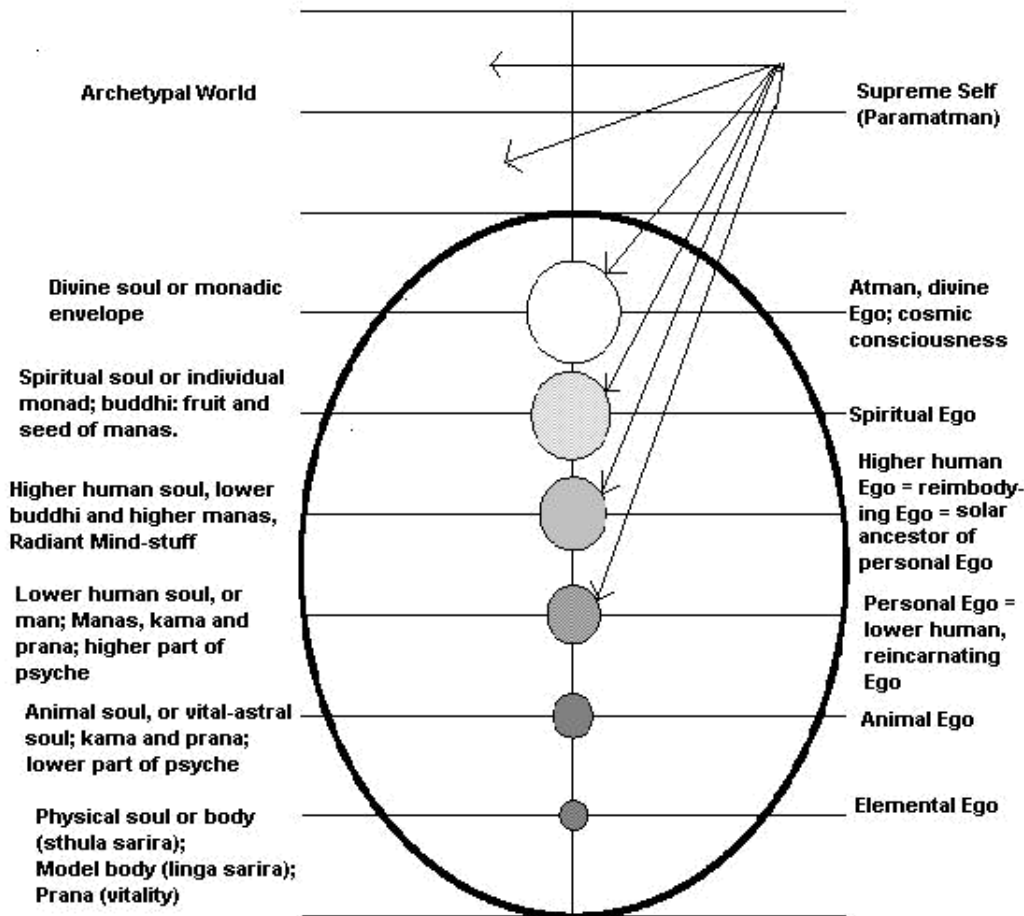
चित्र: अंडा योजना: जी डी पुरुकर द्वारा एक मठवासी मॉडल

अंडा योजना में महत्वपूर्ण संस्कृत नाम हैं:

काम: इच्छा (एक तटस्थ शक्ति जिसे स्वार्थी या निःस्वार्थ तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है: अध्याय दो में मन खंड के सात पहलुओं को देखें)

प्राण: जीवन ऊर्जा

मानस: आत्मा; व्यक्तित्व में यह लालसा (काम) के साथ मिश्रित होता है और आमतौर पर संपत्ति, स्थिति, शक्ति, 'रोमांटिक' संबंधों, और इसी तरह की 'स्वप्न छवियों' की खोज में सक्रिय होता है, जो बाद में पतली हवा में गायब हो जाता है।

बुद्धः आध्यात्मिक आत्मा। प्रकाश-पदार्थ-चेतना-जीवन (असामान्य प्रकाश, जो कि आदिम प्रकाश का एक संशोधन मात्र है)

आत्मा (एन): सार्वभौमिक भावना। इसके अलावा: दिव्य सन्यासी, सर्वोच्च स्व की एक किरण।

गूढ़ परंपरा, इस मामले में डी पुरुकर पर आधारित, मनुष्य की एक प्रकार की आध्यात्मिक-भौतिक छवि प्रस्तुत करती है। पदार्थ को क्रिस्टलीकृत आत्मा और आत्मा को पतले पदार्थ के रूप में देखा जाता है। मन और पदार्थ अंततः एक ही सिद्धांत की अवस्थाएँ (अभिव्यक्तियाँ) हैं, जो कि एक जीवन शक्ति है। विज्ञान मानता है कि पदार्थ और बल को एक दूसरे में बदला जा सकता है। अनंत ज्ञान कहते हैं कि यह तथ्य मानसिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों पर भी लागू होता है। पुराने विचार पैटर्न को भंग किया जा सकता है और जमी हुई ऊर्जा को नए रूपों में जारी और उपयोग किया जा सकता है। आप इस विषय के बारे में दूसरे अध्याय में पढ़ सकते हैं। अंडा स्कीमा के भीतर के घेरे तथाकथित "मोनाड्स" का प्रतीक हैं: सार्वभौमिक जीवन शक्ति की चिंगारी। तुम शुद्ध आत्मा हो। हमारे पदानुक्रम (= हमारे पदानुक्रम में सबसे आध्यात्मिक स्तर) के शीर्ष पर सर्वोच्च आत्मा या लोगो ("शब्द") से चेतना की धारा के लिए मोनैड फ़ॉसी या नोड्स या केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं, जो चेतना-पदार्थ की स्थूल अवस्थाओं में होते हैं।-जिंदगी।

चेतना और पदार्थ के बीच कोई पूर्ण अलगाव नहीं है। हम सभी के भीतर सर्वोच्च आत्मा की एक किरण होती है और यह हमारे भीतर का रास्ता खोजने का एक तरीका प्रदान करती है, हमारी पदानुक्रम (जीवन के क्षेत्र) के भीतर अपनी चेतना को पदार्थ की अधिक सूक्ष्म अवस्थाओं में स्थानांतरित करने का एक तरीका प्रदान करती है। साहित्य # 1 देखें जहां अंडा योजना, ज्ञान और दीक्षा के सात रत्नों के संदर्भ में सर्वोच्च आत्मा या स्वयं के विषय पर चर्चा की गई है। मैं यहां यह जोड़ना चाहता हूं कि इन सभी चीजों का पलायनवाद से कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि आध्यात्मिक क्षेत्र या क्षेत्र पहले से ही हमारे भीतर और अभी हैं और यह सिर्फ उस तथ्य को पहचानने की बात है। हम अपने मन को इन क्षेत्रों के लिए खोल सकते हैं, अपने भीतर प्रभाव डाल सकते हैं और उन्हें इन ऊर्जाओं को व्यक्त करना सिखा सकते हैं! प्रकट होने के लिए, इन भिक्षुओं को संगठित चेतना-पदार्थ की दोहरी कार्यशील जोड़ी का उपयोग करना चाहिए। यह दोहरी जोड़ी बाईं ओर (वाहन पहलू = "आत्मा", चेतना का वाहक) और दाएं (अहंकार या चेतना का केंद्र) अंडे की स्कीमा में विभाजित हो जाती है। इस योजना में प्रत्येक अहंकार संबंधित अहंकार-विकिरण वाले सन्यासी की विकसित क्षमताओं और गुणों को व्यक्त करता है। दैवीय अहंकार व्यक्तिगत अहंकार की तुलना में कई अधिक शक्तियों को व्यक्त करता है। इसी तरह, व्यक्तियों के रूप में, हमने पशु सन्यासी की तुलना में चेतना के अधिक गुण विकसित किए हैं, जो हमारे संविधान का एक आवश्यक हिस्सा है। इस दुनिया में खुद को अभिव्यक्त करने के लिए हमें इसकी, साथ ही साथ हमारे शरीर की भी जरूरत है। विभिन्न संन्यासी केंद्रों की ओर इशारा करते हुए तीरों से संकेत मिलता है कि इन केंद्रों ने आत्म-जागरूकता विकसित की है। पशु आत्मा ने अभी तक ऐसा नहीं किया है। यह व्यक्तित्व

द्वारा दिए गए आवेगों और सुझावों का आँख बंद करके अनुसरण करता है। व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना व्यक्तिगत अहंकार में केंद्रित होती है।

निम्नलिखित गणना संक्षेप में विभिन्न भिक्षुओं की चेतना के कुछ विकसित गुणों को दर्शाती है। साहित्य (1,2) भी देखें।
दिव्य मोनाड: प्रेरणा, एकता चेतना। आध्यात्मिक सन्यासी के साथ: हमारा आंतरिक देवता या उच्चतर स्व।
इस सन्यासी की चेतना का दायरा हमारी आकाशगंगा के सभी क्षेत्रों (अंदर और बाहर) को घेर लेगा। संस्कृत समकक्ष नाम: आत्मा (एन)।
आध्यात्मिक सन्यासी: आत्मज्ञान का सिद्धांत (समझ, अंतर्ज्ञान; संस्कृत शब्द: बुद्धि)।
चेतना का क्षेत्र: संपूर्ण सौर मंडल। यह सन्यासी दिव्य सन्यासी का वाहन है। स्वर्गीय दुनिया में और कुछ हद तक दुनिया या मनुष्य के क्षेत्र में इसका एक हिस्सा है। ऐसा लगता है कि यह हमें खतरे के समय में चेतावनी देता है, लेकिन इसकी आवाज सुनना आसान नहीं है क्योंकि हम आंतरिक आवाज को सुनने के आदी नहीं हैं जो पूरी तरह से दुनिया के मामलों में व्यस्त है। ये दो सन्यासी व्यक्ति के विकास की आध्यात्मिक रेखा का हिस्सा हैं।
(उच्चतर) मानव मोनाड: जीवन शक्ति, भावना, इच्छा; विचार के उच्च पहलू और समझ का हिस्सा भी। यह माता पिता हैएल व्यक्तिगत सन्यासी।
चेतना का क्षेत्र: पृथ्वी को प्रभावित करने वाले सभी क्षेत्र/क्षेत्र (केवल भौतिक पृथ्वी से कहीं अधिक)। उच्च मानव अहंकार और उच्च मानव आत्मा को एक साथ "आत्मा के पुत्र" के रूप में संदर्भित किया जा सकता है क्योंकि यह उदासीन मन (उच्च मानस, उच्च विचार और आंशिक रूप से बुद्धि, आत्मज्ञान का सिद्धांत) विकसित किया जा रहा है। इसने पीढ़ियों पहले भ्रूण मानव मन में अपने मन की एक किरण (इसके उग्र सार का एक हिस्सा) पेश करके मानव आत्मा, मन को प्रज्वलित किया। याद रखें कि अग्नि का तत्व सामान्य सांसारिक अग्नि से काफी अलग है, हालांकि अग्नि का सूक्ष्म सार इस अग्नि में भी काम करता है। मानव प्रागितिहास की इस घटना ने मानवता को अजीब स्थिति में डाल दिया है। प्राचीन यूनानियों का प्रोमेथियस मिथक इस घटना की याद दिलाता है। उन्होंने माउंट ओलिंप पर देवताओं की पवित्र अग्नि को चुरा लिया, मानव जाति को दिया और इसके लिए उन्हें कड़ी सजा दी गई। यह छिपे हुए अर्थों से भरा एक चतुर दृष्टांत है! ध्यान से छिपे अर्थों को निकालने के लिए आपको थियोसोफिकल शिक्षाओं के साथ इसका अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए। प्रोमेथियस उच्च मानव अहंकार या पदार्थ और आत्मा के क्रूस पर स्वयं को सूली पर चढ़ाने के लिए एक प्रतीकात्मक आकृति है।
यह मिथक मानव विकास की दूसरी पंक्ति का प्रतीक है: मानस का विकास (मन, विचार)। इसके बारे में सोचें और आप इस घटना की वास्तविकता को समझना शुरू कर सकते हैं। आखिरकार, एक बड़ा रहस्य है कि मनुष्य सोच सकता है (और आत्म-जागरूक हो सकता है), कुछ ऐसा जो किसी जानवर के बारे में नहीं कहा जा सकता है। जानवरों और मनुष्यों के बीच एक बड़ी खाई है (हालाँकि उनके भौतिक शरीर में कई सामान्य विशेषताएं हैं)। कोई भी जीवविज्ञानी कभी भी आत्म-जागरूकता के इस तथ्य को समझ नहीं पाएगा और इसे भौतिकवादी मानसिकता के माध्यम से समझा नहीं पाएगा। विकास का नव-डार्विनियन सिद्धांत कई मायनों में गलत है, जैसा कि सभी सच्चे आध्यात्मिक शिक्षक जानते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि विकास की शुरुआत पदार्थ को दी गई आत्मा के आवेग से होती है। (जीवविज्ञानियों की बढ़ती संख्या भी डार्विन के सिद्धांत की कमियों को पहचानती है)।
आत्मा और पदार्थ एक साथ इस तरह से काम करते हैं कि पूर्व पदार्थ की अपेक्षाकृत सघन दुनिया में अनुभव प्राप्त करेंगे (और आध्यात्मिक संकाय विकसित करेंगे), और बाद वाले धीरे-धीरे आध्यात्मिक या ईथर हो जाएंगे (आत्मा और "पदार्थ का विकास", सभी प्राणियों में निहित)।
उदासीन मन मस्तिष्क-मन के ऊपर मन की एक अवस्था है, और निश्चित रूप से यह प्रकृति में पारस्परिक है।
इसे क्रिस्टोस ऊर्जा, "स्वर्ग में पिता", चेतना की एक उदात्त अवस्था के साथ समान किया जाना है, जो कि अवैयक्तिक, पारस्परिक प्रेम की विशेषता है। मैंने रेडियंट माइंडस्टफ शब्द को उच्च मानव आत्मा के विवरण के रूप में जोड़ा क्योंकि हम सामान्य लोगों के लिए, चेतना के उस स्तर या

अवस्था को तब प्रकाशमान के रूप में देखा जाता है जब कोई व्यक्ति अपनी उच्च आत्मा से क्षणिक रूप से निकटता से जुड़ा होता है। यह अंतिम घटना रहस्योद्घाटन या एपिफेनी का एक उदाहरण है: मानवता के लाभ के प्रयासों का परिणाम), क्योंकि उच्च आत्म ने बुद्धि विकसित की है: आध्यात्मिक समझ, प्रेम और सहानुभूति। बुद्धि (आध्यात्मिक आत्मा) की चमक मानव मन को चमकाती है क्योंकि यह बुद्धि (समझ का प्रकाश) से जुड़ती है। इस मिलन को "बुद्धि-मानस" कहा जाता है और यह ज्ञानोदय की स्थिति है (प्राकृतिक क्रम प्रक्रिया का एक लक्ष्य, लेकिन आध्यात्मिक विकास या खुलासा का अंत नहीं)।
मैंने इस अहंकार का वर्णन करने के लिए "सौर पूर्वज" लेबल जोड़ा क्योंकि यह मनुष्य का पूर्वज है: उच्च स्व एक मानव था, जरूरी नहीं कि एक शरीर के साथ जैसा कि अब हमारे पास है, पहले के विकासवादी चक्र में, और वर्तमान एक मानव मानव था तो पशु जो उच्च स्व के संविधान का हिस्सा था जो तब मानव था।

व्यक्तिगत या निम्न मानव सन्यासी:
विकसित पहलू: जीवन शक्ति [प्राण], भावना, इच्छा [काम], विचार के निचले पहलू [निम्न मानस]। यह वह सन्यासी है जो पदार्थ में अपनी किरणों का पुनर्जन्म या उत्सर्जन करता है। व्यक्तित्व एक अवतार के दौरान लगाए गए मुखौटे की तरह है। यह व्यक्तित्व नहीं है जो पुनर्जन्म लेता है, बल्कि "व्यक्तिगत" संन्यासी है जो एक किरण का उत्सर्जन करता है और जीवन-ऊर्जा-पदार्थ-चेतना की समग्र धारा में एक नया वाहन बनाता है। यह पशु सन्यासी का जनक है, क्योंकि उच्चतर मानव सन्यासी निम्न मानव सन्यासी का जनक है। इस बिंदु पर अंडा स्कीमा में मैंने "Ps . के उच्च भाग" पदनाम का उपयोग किया हैyche" क्योंकि सोच और प्रयास जैसे पहलुओं को आमतौर पर प्लेटो, पाइथागोरस और विटवन जैसे दार्शनिकों द्वारा मानस के उच्च भाग के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। व्यक्तित्व या छोटा अहंकार सोचता है: मैं दूसरों से अलग हूं। उच्च आत्मा जानता है: मैं सर्वोच्च आत्मा का एक अनूठा लेकिन अभिन्न अंग हूं। उच्च मानव सन्यासी अपनी किरण या उत्सर्जन (निचले मानव सन्यासी) के साथ कुछ मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को साझा करता है। यह कुछ हद तक अपने उत्सर्जन के कर्म को साझा करता है, इसलिए यदि इसके देहधारी सन्यासी को कष्ट होता है, तो ऐसा होता है। एक रहस्य वास्तव में, लेकिन समझने में आसान है यदि आप भौतिक तल पर एक बच्चे और उसके माता-पिता के साथ सादृश्य बनाते हैं।

पशु मोनाड: जीवन शक्ति, भावना, इच्छा
मानव विकास की तीसरी पंक्ति का हिस्सा: शारीरिक/भावनात्मक/वांछनीय पहलुओं का विकास किया जा रहा है। इस सन्यासी से जुड़ी आत्मा (आत्मा एक प्रकार का मनो-विद्युत चुम्बकीय "क्षेत्र" है) को प्राण-सूक्ष्म आत्मा कहा जाता है। यह अस्तित्व का वह क्षेत्र या अवस्था है जिसमें हमारी चेतना अधिकांश समय सक्रिय रहती है। मैंने इस आत्मा को "निचले (पहलू) मानस" के रूप में संदर्भित किया। एक और स्पष्टीकरण यह है: यह आत्मा या चेतना का क्षेत्र डायाफ्राम के नीचे निचले चक्रों में केंद्रित है। आमतौर पर कामेच्छा नामक जीवन शक्ति के चरण के प्रभाव में, सेक्स के लिए आग्रह, आदि। आध्यात्मिककरण की प्रक्रिया का एक हिस्सा कुछ जीवन ऊर्जा (कामेच्छा) को उच्च केंद्रों (चक्रों) में ला रहा है। आध्यात्मिक रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करके। इसे ज्यादा जबरदस्ती न करें। गोल्डन मीन लें, जैसा कि पाइथागोरस ने सिफारिश की होगी। फ्रायड ने "कामेच्छा के उत्थान" की बात की, एक शब्द उसी विचार को व्यक्त करता है। हालाँकि, याद रखें कि हमें अपनी इच्छाओं को विकसित करने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है।
हम भावना या इच्छा के बिना नहीं रह सकते हैं, लेकिन जैसा कि हमारे साहित्य में अक्सर कहा जाता है, रचनात्मक तरीके से भावना, इच्छा, विचार आदि की ऊर्जा का उपयोग करें।
आध्यात्मिक साधक द्वारा चेतना का विकास अंततः उसे क्रिस्टोस की "बपतिस्मा की आग [या प्रकाश]" के संपर्क में लाएगा, आंतरिक आत्मा, जो चेतना के एक नए क्षेत्र को खोल देगी ("नोएटिक या आध्यात्मिक सप्तक" चेतना का)। चेतना के विकास के बारे में रोचक जानकारी विलियम क्वान जज की पुस्तिका कल्चर ऑफ कॉन्सेंट्रेशन में पाई जा सकती है। नीचे विटवन का संदर्भ भी देखें। यह 'बपतिस्मा' (आध्यात्मिक ऊर्जा-प्रकाश का अवशोषण) साथी मनुष्यों के लिए और अधिक प्रकाश लाने के लिए इस पृथ्वी के कार्य क्षेत्र में इस ऊर्जा के एकीकरण की प्रक्रिया का

परिणाम होगा या होगा। इस बपतिस्मे (एक दीक्षा) के बाद, एक स्वस्थ दुनिया के लिए एक साथ काम करना एक मजबूत आग्रह बन जाता है। इस संबंध में, क्या मैं यह जोड़ सकता हूं कि कोई भी अलौकिक या स्वामी आदि मानव जाति को उसकी मूर्खताओं से नहीं बचा सकता है या नहीं बचा सकता है। हमें खुद घर [हमारे शरीर, मानस और हमारे दूषित पारिस्थितिक तंत्र] को साफ करना है! हम प्रकृति और साथी मनुष्यों के लिए करुणा, प्रेम, सहयोग और सम्मान का आवश्यक पाठ कैसे सीख सकते हैं?

भौतिक आत्मा: भौतिक आत्मा में मॉडल शरीर (एक टेम्पलेट) होता है, जिसे संस्कृत में "लिंग शरिर" भी कहा जाता है। शरीरा का अर्थ है म्यान या शरीर; लिंग का अनुवाद "मॉडल" के रूप में किया जा सकता है और इसमें रचनात्मक ऊर्जा का एक अर्थ भी है। यह प्राण या जीवन शक्तियों का वाहक है जो भौतिक शरीर में चक्रों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करता है। यह भौतिक शरीर (स्थुला शरिर) का प्रारंभिक कारण भी है और इसमें सूक्ष्म इंद्रियां, बाहरी इंद्रियों और मन के बीच आवश्यक मध्यस्थ शामिल हैं। ये सूक्ष्म इंद्रियां टेलीपैथी, क्लैरवॉयस आदि में भी शामिल हैं।
मानव सन्यासी (स्वयं) और व्यक्तिगत सन्यासी के बीच संबंध को पहले के अध्याय में माता-पिता-बाल संबंध के रूप में रेखांकित किया गया था। ध्यान दें कि हमारे संविधान में गहराई से हमारे पास एक दिव्य कोर है जिसे कभी-कभी हमारा "आध्यात्मिक आत्म" (= आंतरिक भगवान) कहा जाता है। यह ज्ञानवादी साहित्य में तात्विक की धारणा को कुछ अधिक समझने योग्य बनाता है।
जंब्लिचस ("द मिस्टेरिस") इसके बारे में दिलचस्प बातें लिखता है। मनुष्य में परमात्मा का कार्य ठीक इसलिए संभव है क्योंकि मानव संविधान में एक दैवीय तत्व है। इसके लिए एक बहुत ही शुद्ध और निःस्वार्थ जीवन की आवश्यकता है, जैसा कि समझना आसान है। पशु अहंकार और शरीर के प्रति हमारी जिम्मेदारी महान है, लेकिन वे हमारी दुनिया में पूरी तरह से अनजान हैं। हालाँकि, हम कल्पना कर सकते हैं कि हमारे संविधान के भीतर इस पर हमारा बहुत प्रभाव हैभौतिक अहंकार है चाहे हम नकारात्मक या सकारात्मक सोचें।
यह प्रभाव पशु अहंकार-चेतना के ताने-बाने में "अंकित" है। इस और संबंधित विषयों का और विस्तार थियोसोफिकल लिटरेचर में पाया जा सकता है। गूढ़ज्ञानवादी युगों (स्वर्गदूतों, महादूतों, आदि), जीवन के वृक्ष (सेफिरोटियन) के कबालीवादियों, प्रजापतियों के भारतीय पुराणों की बात करते हैं। ये सभी एक ही सिद्धांत के समान पदानुक्रमित उत्सर्जन के नाम हैं और ये सभी हमारे ब्रह्मांड के निर्माण में शामिल हैं। यदि कोई अपने स्वयं के [और सामूहिक] प्रयास से चेतना में आगे बढ़ता है, तो वह एक व्यक्तिगत आत्मा-अहंकार सन्यासी से एक वास्तविक मानव आत्मा-अहंकार सन्यासी में बदल जाएगा, पशु अहंकार को व्यक्तिगत अहंकार के स्तर पर लाएगा! यह उदाहरण भिक्षुओं के कर्म संबंध को दर्शाता है। इन विचारों के और विकास के लिए जी डी पुरुकर की पुस्तकें देखें। हम अक्सर इन अत्यधिक आध्यात्मिक (यद्यपि महत्वपूर्ण) मुद्दों को छोड़ देंगे और खुद को कुछ अधिक मूर्त तक सीमित रखेंगे: हमारा व्यक्तित्व (निचला मानव अहंकार) और उच्च मानव अहंकार से इसका संबंध। इस पुस्तक के अध्याय दो, तीन और पाँच देखें। इन अध्यायों को फिर से पढ़ना और अभ्यास करना उचित है।

ग्रंथ सूची नोट: कई पुस्तकें अब मुफ्त में ऑनलाइन उपलब्ध हैं: टीयूपी ऑनलाइन पुस्तकें (https://www.theosociety.org/pasadena/ts/tup-onl.htm)

परिशिष्ट बी : अंग्रेजी संस्करण देखें

लिंक: https://archive.org/download/energy-qualities-gunas-at-work-in-the-human-psyche/Energy%20qualities%20%28gunas%29%20at%20work%20in%20the %20human% 20psyche.pdf

परिशिष्ट सी

संस्कारों पर प्रकाश

मार्टिन यूसर द्वारा सात संस्कारों का छिपा या गूढ़ महत्व (अगस्त 2020 संपादित)

इस छोटे से लेख में मैं विभिन्न स्रोतों से सात संस्कारों के बारे में कुछ जानकारी दूंगा जैसा कि वे रोमन कैथोलिक चर्च में जाने जाते हैं। रोटी और शराब के प्रतीकवाद की भी संक्षेप में चर्चा की गई है। सबसे पहले, मुझे धर्म या धार्मिक प्रथाओं से कोई समस्या नहीं है, बशर्ते वे धर्म के सही अर्थ और उद्देश्य के अनुरूप हों: लोगों को परमात्मा से जुड़ने में मदद करना, विशेष रूप से उनमें परमात्मा और दूसरों में परमात्मा। धर्म, ठीक से समझा गया, जीवन के लिए एक नैतिक आधार प्रदान करता है। जबकि मानवतावाद एक दर्शन और अभ्यास के रूप में ठीक है, यह रोजमर्रा की जिंदगी के लिए एक ठोस आधार या सिद्धांत प्रदान नहीं कर सकता है। मनुष्य और ब्रह्मांड की संरचना की समझ की कमी के कारण मानवतावाद, नास्तिकता आदि बहुत से ऐसे मुद्दे हैं जिनसे निपट नहीं सकते हैं।

इतिहास सिखाता है कि जब किसी धर्म के संस्थापक की मृत्यु हो जाती है तो उसका पतन आमतौर पर अपेक्षाकृत जल्दी होता है। एक पुरोहित जाति जनता पर अधिकार करती है और सत्ता स्थापित करती है। शिक्षाओं को शाब्दिक रूप से लिया जाता है, मुड़ या गलत व्याख्या की जाती है। ईसाई धर्म में संस्कारों के साथ भी ऐसा ही हुआ। यह सहायक हो सकता है यदि आप जैकब बोहेम की पुस्तक "थ्रीफोल्ड लाइफ ऑफ मैन" (मेरे संग्रह में मुफ्त ई-बुक) से अध्याय 13 और अध्याय 14 के कुछ हिस्सों का अध्ययन करते हैं। बोहमे उन विकृतियों की आलोचना करते हैं जो संस्कारों की अवधारणा और अनुप्रयोग में आ गई हैं, साथ ही पुजारियों और मंत्रियों के दावों की भी। निश्चित रूप से कई लोगों ने एक चिंतनशील मनोदशा में खुद से पूछा होगा, "इस अनुष्ठान का क्या मतलब है," चाहे वह यूचरिस्ट, बपतिस्मा, या कोई अन्य संस्कार हो। क्या यह सचमुच "कॉर्पस क्रिस्टी" है जिसे हम खाते हैं, या उसका खून कि हम पीते हैं?

शिशु बपतिस्मा के बारे में क्या? आखिरकार, बच्चे ने इस या उस संप्रदाय का अनुयायी होने का चुनाव नहीं किया। वहां क्या होता है? और पापों के अंगीकार या क्षमा के बारे में क्या? ये अच्छे प्रश्न हैं, और इनका कभी भी चर्च के अधिकारियों द्वारा संतोषजनक उत्तर नहीं दिया गया है। इसका एक अच्छा कारण है: आप नहीं कर सकते। यदि वे इन अनुष्ठानों (संस्कारों) की वास्तविक पृष्ठभूमि जानते थे, तो वे शायद आपको बताना नहीं चाहेंगे, और यदि वे नहीं जानते हैं तो वे नहीं कर सकते। आप इस कथन को शीघ्रता से समझेंगे जब आप इस पर पढ़ेंगे: वास्तव में कैथोलिक, सार्वभौमिक अर्थ में सच्चा धार्मिक व्यक्ति अस्तित्व की गहराई की खोज करने से बच नहीं सकता है। वे समझते हैं कि उनका धर्म क्या है, यह कहां से आया है, यह कैसे बदल गया है (निसिया और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद)। खोज बहुत पहले की गई थी: मृत सागर स्क्रॉल और नाग हम्मादी के ज्ञानशास्त्रीय लेखन।
इसमें बड़ी दिलचस्पी की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन वास्तव में बहुत से ईसाई इतनी दिलचस्पी नहीं रखते हैं। क्यों नहीं? क्या लोग थोड़े आलसी हैं? डरा हुआ? क्या किसी धार्मिक समुदाय में मित्रों का एक निश्चित समूह होना सांत्वना है जिसे आप रखना चाहते हैं? क्या प्रश्न पूछने के लिए चर्चों की निराशा है? जैसा भी हो, आंतरिक आत्मा की पुकार अनिवार्य रूप से लोगों को आंतरिक मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करेगी, चाहे वह इस अवतार में हो या कोई अन्य।

आइए अब संस्कारों से शुरू करते हैं। मैं साहित्य # 1 में पाया गया आदेश और नामकरण (अनुवादित) लेता हूं। ईसाई धर्म पर अपने स्रोतों से (डी.जे.पी. कोक, साहित्य 1; डी पुरकर, साहित्य 3; विटवन, साहित्य 5) मैं संस्कारों के बारे में निम्नलिखित संक्षिप्त बिंदुओं का उल्लेख कर सकता हूं। ये बिंदु प्राचीन रहस्य स्कूलों के बारे में सच थे और आज भी बाहरी समारोहों या संस्कारों की आवश्यकता के बिना होने के आंतरिक विमानों पर लागू होते हैं। दुनिया बदल गई है और बहुत कुछ जो "गूढ़" था, जो कि अशिक्षितों से छिपा हुआ था, अब शिक्षित जनता के लिए उपलब्ध है। विशेष रूप से, तथाकथित "मामूली रहस्य" मेरे द्वारा पालन किए जाने वाले क्रम के स्कूल में शिक्षाओं के रूप में उपलब्ध हो गए हैं, और ये शिक्षाएं पहले तीन संस्कारों से संबंधित हैं। संस्कारों का संबंध जीवन अभिविन्यास, नैतिक विकास और मानवता की भलाई के लिए काम करने के निर्णय से है। वे आध्यात्मिक विकास से संबंधित हैं। मेरी विनम्र राय में, ज्ञान चाहने वाले को एक ऐसे संगठन में शामिल होना अच्छा होगा जो समान विचारधारा वाले लोगों के साथ बेहतर ढंग से जुड़ने के लिए मानवता और अन्य सभी जीवन के लाभ के लिए काम करता है। इस तरह के एक संगठन में एक पोषण वातावरण होता है और आंतरिक भावना के साथ संरेखण बनाए रखने में मदद कर सकता है।

1. जल बपतिस्मा

प्राचीन रहस्य विद्यालयों में संदर्भित हैज्ञान परंपरा की शिक्षाओं में निर्देश के लिए पानी का बपतिस्मा, बारहमासी दर्शन, जिसे कभी-कभी सूक्ति कहा जाता है। यह जीवन अभिविन्यास में परिवर्तन का भी प्रतीक है। अभिविन्यास से बाहरी दुनिया, संवेदी दुनिया में परिवर्तन, मानसिक दुनिया के लिए अभिविन्यास, आंतरिक ऊर्जा दुनिया (सीएफ। विटवन "पहली क्रॉसिंग" पर)। शरीर और विशेष रूप से मन से गंदगी (पृथ्वी) की सफाई के प्रतीक के रूप में पानी की बुद्धिमान पसंद पर ध्यान दें। ऊर्जा और भावना की तरल प्रकृति स्पष्ट है।
इस छोटे से लेख को लिखने का मुख्य कारण लोगों में इसे बाहर की ओर पेश करने के बजाय अपने भीतर गहरे अर्थ की खोज करना शुरू करना है। यह संस्कार भी रोजमर्रा की जिंदगी में निर्देशों के आवेदन के बारे में बहुत कुछ है। क्योंकि आपने जो सीखा है उसका अभ्यास किए बिना कोई स्थायी अनुभव प्राप्त नहीं किया जा सकता है। निर्देश पथ पर साइनपोस्ट की तरह हैं। वे सहायक हैं, लेकिन मनुष्य को स्वयं मार्ग पर चलना है, कार्य करना है, स्वयं निर्णय लेना है। आचरण के कोई नियम नहीं लगाए जाते हैं, आकांक्षी के पास एक स्वायत्त इच्छा होती है और वह आध्यात्मिक पथ का अनुसरण करना चुनता है। एकतरफा सुलह नहीं हो सकती। स्वीकारोक्ति का संस्कार भी देखें।

फ्रीके-गंडी की पुस्तक से: "दीक्षा के स्तर":

"मूर्तिपूजक और विज्ञानवादी दोनों दार्शनिक प्रणालियों ने मानव पहचान के चार स्तरों का वर्णन किया: शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और रहस्यमय। ज्ञानशास्त्रियों ने हमारे अस्तित्व के इन चार स्तरों या पहलुओं को कहा है: शरीर, मिथ्या मन, आत्मा और प्रकाश शक्ति। शरीर और मिथ्या मन (हमारी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक पहचान) ईडोलन, या निम्न स्व के दो पहलू हैं। आत्मा और प्रकाश बल (हमारी आध्यात्मिक और रहस्यमय पहचान) अमर दानव के दो पहलू हैं- व्यक्तिगत उच्च स्व और सामान्य सार्वभौमिक स्व।
ग्नोस्टिक्स ने उन लोगों को बुलाया जिन्होंने अपने शरीर के साथ "हाइलिक्स" की पहचान की क्योंकि वे आध्यात्मिक चीजों के लिए पूरी तरह से मर चुके थे कि वे बेहोश पदार्थ या हाइल की तरह थे।
जो लोग अपने व्यक्तित्व या मानस से पहचान करते थे उन्हें "मनोविज्ञान" के रूप में जाना जाता था।
जिन लोगों ने अपनी आत्मा या उच्च स्व के साथ पहचान की, उन्हें "वायवीय" के रूप में जाना

जाता था, जिसका अर्थ है "आध्यात्मिक लोग या पादरी।"
जिन लोगों ने अब अपनी अलग पहचान के किसी भी स्तर के साथ पहचान नहीं की और क्रिस्टोस या सार्वभौमिक दानव के रूप में अपनी वास्तविक पहचान को पहचान लिया, उन्होंने सूक्ति का अनुभव किया। इस रहस्यमय रोशनी ने दीक्षा को एक सच्चे "ज्ञानवादी" या "ज्ञानी" में बदल दिया।

बुतपरस्ती और ईसाई धर्म दोनों में, चेतना के ये स्तर प्रतीकात्मक रूप से पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के चार तत्वों से जुड़े थे। एक स्तर से दूसरे स्तर तक जाने वाली दीक्षाओं को तात्विक बपतिस्मा द्वारा दर्शाया गया था। महान लोगों में, यीशु अपने शिष्यों को जल, वायु और अग्नि के "तीन बपतिस्मे के रहस्य" प्रदान करते हैं। पानी के साथ बपतिस्मा हाइलिक के परिवर्तन का प्रतीक है, एक व्यक्ति जो पूरी तरह से शरीर के साथ पहचान करता है, एक दीक्षा में जो व्यक्तित्व या मानस के साथ पहचान करता है।
वायु बपतिस्मा "मानसिक" के परिवर्तन को एक वायवीय पहल में बदलने का प्रतीक है जो उच्च स्व के साथ पहचान करता है।
आग का बपतिस्मा अंतिम दीक्षा का प्रतिनिधित्व करता है जो न्यूमेटिक्स को उनकी वास्तविक पहचान को सार्वभौमिक दानव, लोगो, मसीह के भीतर, "लाइट फोर्स" के रूप में प्रकट करता है- सच्चा प्रकाश जो "दुनिया में आने वाले हर इंसान को प्रबुद्ध करता है"-जैसा कि जॉन का सुसमाचार कहता है। ग्नोसिस ने इस तरह के एक दीक्षा को मान्यता दी थी। तो ये नोस्टिक ईसाई धर्म में दीक्षा के स्तर हैं। (अंत में उद्धरण)

2. पुष्टि

जब आकांक्षी ने आध्यात्मिक पथ पर प्रगति की है, तो वह दूसरे संस्कार की तैयारी करता है: पुष्टि। यह एक अर्थ में एक गठन है
पुष्टि करता है कि पहले संस्कार द्वारा क्या बनाया गया था। यह आंतरिक पथ, आंतरिक यात्रा के प्रति समर्पण को संदर्भित करता है। यह विश्वास में दृढ़ता को दर्शाता है। दुनिया की बाहरी बाधाओं, भावनाओं और विचारों के लिए कोई रियायत नहीं दी जाती है। आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर गंभीरता से चलने का आंतरिक निर्णय लेना।
पहले एक रहस्य विद्यालय के सदस्य के रूप में, आकांक्षी या नवजात को हमेशा गहरा निर्देश दिया जाता है, लेकिन अब कुछ हद तक सभी प्रकार के गूढ़ विद्यालयों या आंदोलनों में एकीकृत हो गया है। असली स्कूलों और छद्म स्कूलों के बीच अंतर किया जाना चाहिए।
इसपहले तीन संस्कारों और उनसे जुड़ी शिक्षाओ से संबंधित उपर्युक्त लघु रहस्य, थियोसोफिकल और संबद्ध स्कूलों सहित विभिन्न चैनलों के माध्यम से आम जनता के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हो गए हैं। मेरी ई-पुस्तकें इन शिक्षाओं का अच्छा परिचय देती हैं।

3. यूचरिस्ट, भेंट या भोज।

रोटी और शराब (या अंगूर का रस) के प्रतीकवाद पर अनुभाग देखें। यह संस्कार आत्मा और दुनिया के साथ संवाद को संदर्भित करता है, जैसे कि, जो (दुनिया) आत्मा की अभिव्यक्ति है। प्राचीन काल के रहस्य विद्यालयों में सदस्यों का एक समुदाय शामिल था जो दिल और दिमाग की एकता को उजागर करता था। वे सभी जीवन के साथ और एकता की भावना में रहते थे। उसकी चेतना में यह अहसास हुआ कि बाहरी दुनिया परमात्मा की अभिव्यक्ति है। यह समग्र मानव (आत्मा, आत्मा, मन, शरीर) की एकता को समझने और अनुभव करने के साथ भी बहुत कुछ

करता है जो एक व्यक्ति के रूप में है।
आखिरकार, जैसे-जैसे आंतरिक दुनिया का अनुभव मजबूत होता जाता है, परिणाम किसी के अभिभावक देवदूत या उच्च स्व से मिलना होता है, जिसे एपिफेनी के रूप में जाना जाता है। यह थियोफनी का एक प्रारंभिक रूप है, या आंतरिक उच्च स्व की रोशनी और उद्भव है।
यदि आपने इन बातों का अध्ययन नहीं किया है, तो आप मेरी व्याख्या का पालन नहीं कर पाएंगे।

उच्च संस्कार परमात्मा के प्रत्यक्ष अनुभव से संबंधित हैं। यह गंभीर व्यवसाय है।
विकास के इस स्तर पर शिक्षण जारी है, लेकिन आंतरिक दुनिया का प्रत्यक्ष अनुभव मजबूत हो जाता है। संचार के प्राकृतिक रूप के रूप में दूसरों के साथ जुड़ना आसान हो जाता है क्योंकि आंतरिक क्षमताएं अधिक व्यक्त की जाती हैं।

4. स्वीकारोक्ति

इसका किसी पुजारी के सामने अपने पाप को अंगीकार करने से कोई लेना-देना नहीं है, क्षमा तो बिलकुल भी नहीं! चर्च कितना नीचे गिर गया है लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि कोई और (एक पुजारी) किसी के पापों और अतिचारों को क्षमा कर सकता है। आपको आपकी गलतियों से कोई नहीं बचा सकता। कर्म ऋण को केवल मिटाया नहीं जा सकता। इस जीवन या किसी अन्य में इससे निपटा जाता है और फिर पार हो जाता है। यहां आप अपने जीवन का जायजा लेते हैं। आप अपनी गलतियों से सीखते हैं और लक्ष्य या आदर्श पर ध्यान केंद्रित करते हैं। न पछतावे की बात, न गलतियों या गलतियों पर ध्यान। फिर... मानस में/के माध्यम से क्रिस्टोस बल का जन्म होता है। किसी की मानसिक प्रकृति का नीरव (आध्यात्मिक) नियंत्रण और भी बढ़ जाता है।
"यह कहा गया था कि एलुसिनियन दीक्षा पृथ्वी पर [पृथ्वी में] उतरी और इससे पुनर्जन्म हुआ।" (Pryse, उद्धरण, साहित्य 2)। रहस्य परंपरा में, कुछ आत्माओं को इस तरह की स्थिति में कैद से मुक्त करने में मदद करने के लिए नियोफाइट को "नरक" या शुद्धिकरण (काम लोक) में उतरने के लिए कहा जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि प्रकृति के राज्यों (विशेष रूप से मानव साम्राज्य) के माध्यम से चलने और काम करने के लिए आध्यात्मिक शक्तियों को पृथ्वी पर लाने के लिए, नवजात शिशु की आत्मा को "जमीन पर" होना चाहिए, जो कि पृथ्वी से जुड़ा हुआ है। उच्च दीक्षाओं से संबंधित कई रहस्य हैं (सभी संस्कार वास्तव में विभिन्न प्रकार की दीक्षाएं हैं)। मैं साहित्य 3 का उल्लेख करता हूं। ईसाई धर्म ने सुसमाचार में बाइबिल में सूली पर चढ़ाए जाने के साथ "नरक में उतरना" का उल्लेख किया है, लेकिन यह मेरे विचार में गलत है। सूली पर चढ़ना बाद में आता है और रहस्यों के एक अन्य संस्कार को संदर्भित करता है।

संस्कार 5, 6, 7

मैं इन अंतिम तीन संस्कारों को एक साथ मानूंगा क्योंकि उनका आंतरिक अनुभव से बहुत कुछ लेना-देना है। इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है और व्यवहार में ये संस्कार अधिकांश लोगों के लिए उनके विकास के वर्तमान स्तर के कारण कम प्रासंगिक हैं। ये संस्कार उन्नत आध्यात्मिक प्राप्ति के चरणों से संबंधित हैं।

5. अभिषेक

यहां आप अपने उच्च स्व से "आमने-सामने" मिलते हैं ताकि आंतरिक आध्यात्मिक स्तर पर बात

कर सकें। आत्मा से अभिषेक। मसीह की शक्ति का विकास। एक निश्चित रूप से यहां "वायवीय" है (ऊपर ग्रीक से उद्धरण देखें)। गूढ़वाद में, मसीह को परमात्मा से मानव राज्य में वंश के रूप में देखा जाता है। पूर्व में इसे अवतार कहा जाता है। गूढ़ साहित्य में अक्सर क्रिस्टोस की बात की जाती है। वही शक्ति है।

6. पौरोहित्य (संन्यासी बनना)

अब तक तुम समझ जाओगे कि सच्चा पौरोहित्य आंतरिक आत्मा का कुछ है । इसका बाहरी शिक्षा, चर्च आदि से कोई लेना-देना नहीं है। इस पहलू की गूढ़ व्याख्या बहुत शिक्षाप्रद है: कोई भी तब तक पुजारी या ब्रह्मचारी नहीं होना चाहिए जब तक वह पुरुष और महिला यौन ऊर्जा से जुड़ी जीवन शक्ति को उच्च ऊर्जा केंद्रों में स्थानांतरित नहीं करता है यावह चक्रों को प्रसारित करता है। अन्यथा, आप स्वयं को और दूसरों को धोखा देते हैं, और यह अक्सर केवल दबी हुई यौन इच्छाओं और दूसरों के दुरुपयोग की ओर ले जाता है। चर्चों और पंथों में सेक्स स्कैंडल यह पर्याप्त रूप से साबित करते हैं। यह तथ्य कि धर्मों ने इस संस्कार का दुरुपयोग किया है, शिक्षाओं के एक निश्चित पतन का पर्याप्त प्रमाण है। सच्चा संन्यासी वह है जो सभी व्यक्तिगत हितों को त्याग देता है और सभी मानव जाति और प्रकृति के अन्य राज्यों की भलाई के लिए काम करता है। इसलिए वह अपने स्वार्थ को सूली पर चढ़ा रहा है। आंतरिक प्रकाश यहाँ काम कर रहा है। रूपान्तरण। यह विकास का बोधिसत्व चरण है, पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करने से पहले अंतिम चरण। इसकी तुलना अध्याय सात के छठे सिद्धांत या स्वयंसिद्ध से करें।

7. पवित्र विवाह

इस संस्कार का साधारण विवाह से कोई लेना-देना नहीं है। यह कैसे हो सकता? क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि विवाह जैसी सांसारिक चीजें, जो अक्सर आर्थिक उद्देश्यों, वासना, मोह आदि से निर्धारित होती हैं, का संस्कार से कोई लेना-देना है? नहीं, यह मर्दाना और स्त्री ऊर्जा के आध्यात्मिक पक्ष से संबंधित है: आंतरिक मर्दाना और स्त्री का विलय या एकीकरण। एक अर्थ में इसे आत्मा और आत्मा का विवाह कहा जा सकता है: मानव और दैवीय स्वभाव एक ठोस एकता में विलीन हो जाते हैं और विलीन हो जाते हैं। मैं यहां आत्मा की अवधारणा को प्लेटोनिक अर्थों में समझता हूं: मानस एक संपूर्ण इच्छा, कारण और भावना के रूप में।
मन या संज्ञा (ग्रीक शब्द) प्लेटोनिक अर्थ में ज्ञानोदय के सिद्धांत को संदर्भित करता है, जिसे वेदांती शब्दावली में बुद्धि कहा जाता है। बुद्धि जागृति का सिद्धांत है। यह अर्थ के जागरण और सभी जीवन के गहरे जुड़ाव का अनुभव करने को संदर्भित करता है। यह विवाह एक प्रबुद्ध मन की ओर ले जाता है। यह बुद्धि और मानस का मेल है। मानस का तात्पर्य मन से है। इस संबंध में, यह मुख्य रूप से उस मन के आध्यात्मिक गुणों को संदर्भित करता है। इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट A देखें। इस संस्कार को आत्मा में पुनरुत्थान कहा जा सकता है। एक अर्थ में, यह विलय या एकीकरण धीरे-धीरे होता है जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक विकास के आंतरिक पथ की यात्रा करता है, अंततः इस स्तर पर समाप्त होता है। पूर्ण पूर्णता, जिसके बारे में मैं अभी लिख रहा हूँ, दुर्लभ है। यह एक महान शिक्षक बनने के लिए अवतारों की शिक्षा या मानव में दैवीय आत्मा के अवतरण से संबंधित है।

रोटी और शराब का प्रतीक

विश्वकोश थियोसोफिकल शब्दावली से (देखें टीयूपी ऑनलाइन):

"रोटी और शराब:" एक आवक और आध्यात्मिक अनुग्रह के बाहरी और दृश्यमान संकेत ","

रोटी और शराब दीक्षा समारोहों में उपयोग किए जाने वाले वास्तविक तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे इन समारोहों के परिणामों का भी प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए, Bacchic रहस्यों में, अंगूर और Bacchus के खून के रूप में शराब दी गई थी। रक्त का अर्थ है जीवन और Bacchus रहस्यमय लोगो द्वारा निर्मित मांस का प्रतिनिधित्व करता है।
संपूर्ण संस्कार, तब, ईश्वर के साथ अपने निचले स्व के सचेत मिलन के माध्यम से दिव्य जीवन में उम्मीदवार की भागीदारी को दर्शाता है-व्यक्ति के स्व-निर्मित प्रयासों द्वारा लाया गया एक मिलन। एक तरह से, रोटी या अनाज उपलब्धि के बौद्धिक पहलू का प्रतीक है, बुद्धि आध्यात्मिक प्रभाव का "शरीर" है।

ईसाई संस्कार को बुतपरस्त संस्कार से अपनाया गया था। इंजील चर्च ईश्वरीय कृपा के प्रतीक के रूप में रोटी और शराब के संस्कार का दान करते हैं जो भक्त प्रतिभागी को प्राप्त होता है। कैथोलिक चर्च सिखाता है कि पवित्र तत्व चमत्कारिक रूप से मसीह के रक्त और शरीर में परिवर्तित हो जाते हैं। लेटे लोगों को प्याला या शराब से वंचित किया जाता है। यह चर्च सामान्य रूप से प्रतिभागियों और मानवता के पापों के प्रायश्चित के रूप में संस्कार को देखता है।

प्राचीन मूर्तिपूजक संस्कार में यह विचार शामिल था कि शराब का सेवन करने का अर्थ है नवपाषाण के भीतर आध्यात्मिक देवता की जीवन ऊर्जा से जुड़ना। रोटी का भोजन ब्रह्मांडीय भावना के साथ नवजात मानसिकता के एक समान मिलन का प्रतीक है जो कि रोटी का प्रतीक है। सोमा भी देखें; वाइन" (अंत में उद्धरण)

हिप्पोलिटस के अनुसार (द एल्यूसिनियन रहस्यों पर लेखन)
अनुष्ठान के दिल में रहस्योद्घाटन 'शक्तिशाली और सबसे सुंदर और सबसे उत्तम रहस्य का प्रदर्शन था- मकई का एक कटा हुआ कान' - प्राप्त परिणाम के बौद्धिक पहलू का प्रतीक है, जैसा कि उपरोक्त उद्धरण में देखा जा सकता है। रहस्यों को सुसमाचार कथाओं से कैसे जोड़ा जाए, इस बारे में अधिक पृष्ठभूमि के लिए, जेम्स मॉर्गन प्रिस की रिफ्रेशिंग द रिफ्रेशिंग द रिस्टोरेड न्यू टेस्टामेंट (रेफरी 2) देखें".

ईसाई धर्म का भविष्य

मुझे ऐसा लगता है कि इन धर्मनिरपेक्ष समय में ईसाई धर्म का कोई भविष्य नहीं है जब तक कि चर्च (संप्रदाय) अपने विश्वास, शिक्षण और अभ्यास में संस्कारों के सही अर्थ को नहीं अपनाते। गूढ़ज्ञानवादी और संबंधित चर्च किस हद तक पहले ही ऐसा कर चुके हैं, यह मेरी विशेषज्ञता का क्षेत्र नहीं है। यह केवल समझ में आता है कि सच्ची आध्यात्मिकता जीवित रहेगी क्योंकि यह मानव जाति में निहित है। रूप बदल सकते हैं, आवश्यक अवशेष।

संदर्भ/ग्रंथ सूची

नोट: #1 और #3 डच में हैं, बाकी अंग्रेजी में हैं। (यहां अनुवाद सॉफ्टवेयर पुस्तक के शीर्षक का आपकी अपनी भाषा में अनुवाद करता है)

1. डीजेपी कोक "द ग्रेट मिसअंडरस्टैंडिंग" (हेट ग्रोट मिसवर्स्टैंड)। हॉलैंड की भाषा। सेंट आइसिस, डी रूयटरस्ट्राट 94, द हेग। नीदरलैंड्स।
2. जेएम प्रिसे: नया नियम बहाल। पुनर्स्थापित नया नियम (मेरा संग्रह देखें)

3. जी डी पुरकर। एसोटेरिक फिलॉसफी के फंडामेंटल्स, भी: द फोर सेक्रेड सीजन्स। टीयूपी ऑनलाइन देखें।

4. पंथ पर अन्ना किंग्सफोर्ड व्याख्यान। यह भी देखें "द परफेक्ट वे: या फाइंडिंग क्राइस्ट" (द परफेक्ट वे)
अन्ना एक गूढ़ ईसाई धर्म स्थापित करना चाहते थे। दुर्भाग्य से, वह भी युवावस्था में ही मर गई। अपनी जोशीली एंटी-विविसेक्शन गतिविधियों, पर्यावरण-नारीवाद, शाकाहार के लिए जानी जाती हैं।

5. विटवन। पहला क्रॉसिंग; द क्रिस्टो (द क्रिस्टोस)। देखें www.sno.org

6. हेनरी टी एज। ईसाई बाइबिल पर थियोसोफिकल लाइट

7. टिमोथी फ्रीके-पीटर गंडी द्वारा पुस्तक: द जीसस मिस्ट्रीज। क्या मूल यीशु एक मूर्तिपूजक देवता था? यीशु के रहस्य।

लेखक के बारे में

मार्टिन यूसर ने क्लिनिकल साइकोलॉजी में मास्टर डिग्री और नीदरलैंड में यूट्रेक्ट यूनिवर्सिटी से सैद्धांतिक भौतिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने इस विश्वविद्यालय में सांख्यिकी शिक्षक और कोर्सवेयर डेवलपर के रूप में और बाद में विभिन्न कंपनियों में वेब डेवलपर के रूप में काम किया। उन्होंने गूढ़ता, आध्यात्मिकता और मनोविज्ञान पर कई लेख प्रकाशित किए हैं और प्राचीन ग्रंथों (जैकब बोहेम, प्रोक्लस) को इंटरनेट आर्काइव.org और academia.edu पर मुफ्त ई-पुस्तकों के रूप में उपलब्ध कराया है। वह नए लेख भी प्रकाशित करता है। विज्ञान, मनोविज्ञान और मन के बीच संबंधों के एक अन्वेषक के रूप में, वह आध्यात्मिक मनोविज्ञान को इस तरह के संबंध के लिए एक आशाजनक उम्मीदवार के रूप में देखता है। अपने काम का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में रुचि रखने वाले स्वयंसेवक ईमेल के माध्यम से उनसे संपर्क कर सकते हैं:
ResonanceSelf@protonmail.com
कृपया अंग्रेजी या डच में संवाद करें।